महात्मा गान्धीकी

नोआखाली-यात्रा

लेखक :—

हिन्दी के यशस्वी पत्रकार

पं० रामकिशोर मालवीय

प्र

आदर्श हिन्दी पुस्तकालय

४१६, अहियापुर

इलाहाबाद ।

प्रथम संस्करण } मई १९४७ { मूल्य ३)

प्रकाशक :—

सुशीलकृष्ण शुक्ल

आदर्श हिन्दी पुस्तकालय

४१६, अहियापुर,

इलाहाबाद।

मुद्रक—

संगमलाल जायसवाल, जायसवाल प्रेस,

कीटगंज, प्रयाग।

विषय-सूची

—::❀::—

विषय			पृष्ठ संख्या

—::❀::—

कुछ कह दूँ

इसलिये नहीं कि पुस्तक के आरम्भ में प्राक्कथन के रूप में कुछ कहने की परिपाटी निभानी है, बल्कि इसलिये कि लगभग बीस-बाईस साल के 'गैप' के बाद एक पुस्तक लेकर हिन्दी-संसार के सामने आने की कुछ सफाई देनी आवश्यक है।

मेरा प्रथम दो पुस्तकें उपन्यास के रूप में 'शैलकुमारी' और 'शान्ता' सन् १९२४ और २६ में स्थानीय चाँद-कार्यालय से प्रकाशित हुई थीं, जिन्हें हिन्दी संसार ने बहुत पसन्द किया और दोनों के तीन-तीन चार-चार संस्करण हुए थे। परन्तु उसके बाद एक तो पत्रकारिता के व्यस्त जीवन और दूसरे तज्जन्य साथ में लगने वाली अस्वस्थता के कारण कोई पुस्तक लिखने में समर्थ नहीं हो सका।

उन दिनों मैं 'अभ्युदय' में था। सन् ३० के सत्याग्रह आन्दोलन में जेल जाते समय श्रद्धेय पं० कृष्णकान्तजी मालवीय (जिन्हें अब स्वर्गीय लिखते हुए अत्यन्त पीड़ा होती है) 'अभ्युदय' के सम्पादन और प्रबन्ध का भी सारा भार मेरे निर्बल कन्धों पर छोड़ गये थे। 'अभ्युदय' उन दिनों दैनिक था, रात और दिन लगातार काम करते-करते मुझे संग्रहणी हो गयी। तभी से स्वास्थ्य बराबर बिगड़ता-सुधरता रहा और डाक्टरों तथा गुरुजनों के आदेश से अधिक परिश्रम बचाना पड़ा। परिश्रम बचाने के प्रयत्न में स्वभावतः आराम-तलबी आ गयी। अब तो पत्र-पत्रिकाओं में विशेष लेख लिखाने के लिये सम्पादक मित्र जब सर पर सवार होते हैं, तभी कुछ लिख देता हूँ, फिर भी कुछ मित्रों की आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होने के कारण उनके रोष का भाजन बनना ही पड़ता है।

अब इतने दिनों बाद प्रस्तुत पुस्तक को लेकर मैं उपस्थित हो सका हूँ, उसका एकमात्र श्रेय मेरे आदरणीय मित्र और आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, प्रयाग के संचालक पंडित गिरिधरजी शुक्ल को है। गान्धीजी की नोआखाली-यात्रा समाप्त हो चली थी और शुक्लजी चाहते थे कि इस सम्बन्ध में एक पुस्तक शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित हो जाय। शीघ्रता के ख्याल से शुक्लजी ने इन पंक्तियों के लेखक को ही इसे लिखने के लिये बाध्य किया। मैंने भी सोचा कि विश्व-वन्द्य गान्धीजी ने भारत की स्वाधीनता ही नहीं, उसके प्राचीन गौरव-पूर्ण पद प्राप्त कराने की कुञ्जी साम्प्रदायिक एकता का जो महान कार्य एक नये प्रयोग के साथ उठाया है, उसमें इस पुस्तक द्वारा भगवान कृष्ण के गोवर्धन पर्वत उठाने में गोपों की लकुटियों के रूप में किंचित सहारा देकर अपना जीवन सफल कर लूँ। इसी कारण यह पुस्तक सामने आ सकी और इसके लिये मैं शुक्लजी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

पुस्तक के सम्बन्ध में भी कुछ निवेदन कर देना आवश्यक है। सम्भव है, इसे कुछ लोग सामयिक साहित्य की चीज समझें। किन्तु ऐसा नहीं है। विषय को देखते हुए इसका बहुत बड़ा स्थायी महत्व है। गान्धीजी अपने जीवन के चरम ध्येय-साम्प्रदायिक एकता की प्राप्ति किस उपाय से करना चाहते हैं, इसी का वर्णन इस पुस्तक में है, अतः यह ऐतिहासिक महत्व की वस्तु होगी और इसकी उपयोगिता तब तक बनी रहेगी, जब तक एकता के ध्येय की प्राप्ति न हो जाय।

प्रयाग,
१०, मई, १९४७ ई०

विनीत
रामकिशोर मालवीय
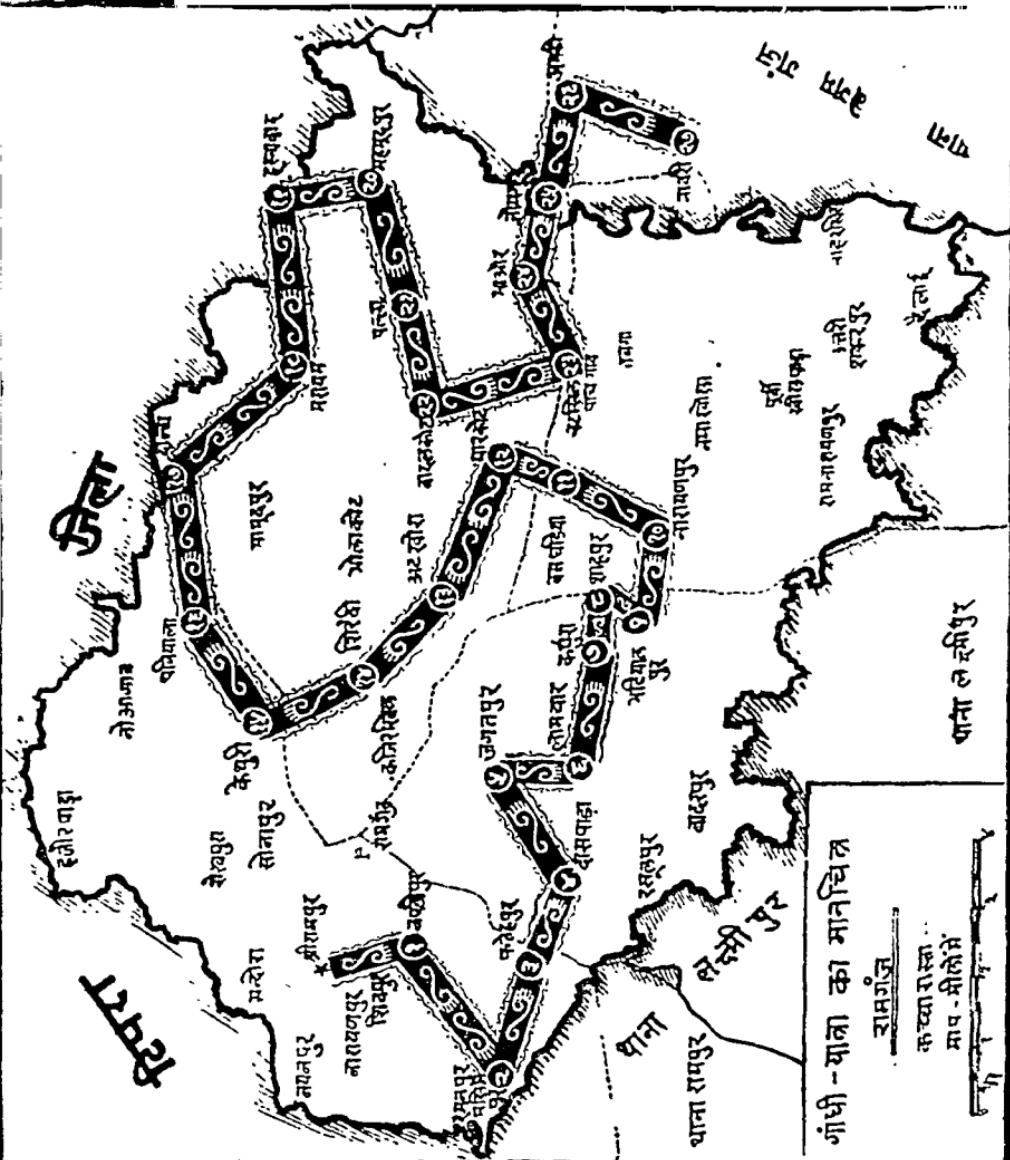
महात्मा गान्धी की

नोआखाली-यात्रा

यात्रा का ऐतिहासिक महत्व

हमारा मसीहा निकल पड़ा है मानवता की रक्षा के लिये। निर्द्वन्द, निर्भय बढ़ता जा रहा है वह सर में कफन बाँधकर आततायियों के बीच। अपने को खतरे में डालकर भी वह सुरक्षित है। क्योंकि उसके पास सबसे शक्तिशाली अस्त्र है सत्य और प्रेम का और इस यात्रा का पवित्र तथा महान उद्देश्य है हिन्दू-मुस्लिम एकता का, गुमराहों को राहे-रास्त पर लाने का और निर्बलों तथा असहायों की रक्षा का। उसमें न राग है, न द्वेष है। उसके निकट हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी, ईसाई, अँग्रेज, यहूदी, जर्मन, फ्रेंच, तुर्क और अरब सब एक हैं। ऊँच-नीच, बड़े छोटे में वह कोई विभेद नहीं करता। सभी उसके लिये अपने हैं, पराया कोई नहीं है। फिर उसके नाम में आकर्षण हैं, वाणी में जादू है और हैं तर्कों में बल, जिनके द्वारा वह कट्टर से कट्टर विरोधी को अपने वस में कर लेता है। वह

निकला है साम्प्रदायिकता को दफनाने के लिये समस्त भू-मंडल के मानव-समाज के कल्याण और उत्थान के लिए और पद-दलितों के त्राण के लिये। उसका पुनीतव्रत है समस्त संसार के मनुष्यों में से अमीर-गरीब ऊँच-नीच और छोटे-बड़े का भेद-भाव मिटा देना और ऐसे समाज का निर्माण करना जिसमें मनुष्य-मात्र को बराबर का अधिकार रहे और जात-पाँत का अन्त होकर संसार में केवल एक जाति हो जिसे मनुष्य जाति कहा जाय। निस्सन्देह यह महा पुरुष गान्धी मनुष्य के रूप में कोई देवता हैं, जो विश्व के मनुष्य-मात्र के कल्याण के लिये अवतरित हुआ है और अपने तपोबल से इस व्रत को पूरा करेगा।

महात्मा गान्धी की नोआखाली यात्रा की घोषणा जब हुई थी, तो सारा संसार और विशेषतः भारत एक बार ही चिन्तित हो चुका था। लोग यह भय करने लगे थे कि गान्धी जी आततायियों के बीच से कुशल वापस आते हैं या नहीं। परन्तु गान्धीजी ने अपने एक बार नहीं सैकड़ों बार किये गये इस दावे की सत्यता प्रत्यक्षतः प्रमाणित कर दी कि एक सच्चा सत्याग्रही अपने प्रेम के द्वारा कट्टर-से-कट्टर विरोधी को अपने वश में कर लेता है और अत्यन्त प्रबल आक्रमणकारी को भी शक्तिहीन बना देता है। जो आलोचक गान्धीजी के इस दावे का मजाक उड़ाते थे, वे उसे सच्चा प्रमाणित होते देखकर आश्चर्य-चकित रह गये, दाँतों तले उँगली दबा ली। गान्धीजी अपनी यात्रा में अधिकतर मुसलमानों के घरों में ही ठहरे और

उन्हें अपने प्रेम-पाश में आवद्ध कर लिया। मुस्लिम स्त्रियों ने गान्धीजी को अपने घरों के अन्दर बुलाकर उनके दर्शन किये, उनके उपदेश सुने और अपने को कृतकृत्य माना।

गान्धीजी की इस यात्रा का ऐतिहासिक महत्व है, जिसे आज से वर्षों पहिले लिखी गयी अपनी आत्म-कथा में उन्होंने इन शब्दों में प्रकट किया था कि—'दक्षिण अफ्रीका के अपने अनुभवों के आधार पर मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया है कि हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये ही मेरी अहिन्सा की कठोरतम परीक्षा होगी। मेरा वह विश्वास आज भी ज्यों-का-त्यों बना हुआ है। मैं अपने जीवन में प्रतिक्षण यह अनुभव कर रहा हूँ कि भगवान मेरी परीक्षा ले रहा है।' यात्रा के पग-पग पर गान्धीजी के उपरोक्त कथन की याद आती है और उनके उस संकल्प की परिणति इन शब्दों में प्रतिध्वनित होती है कि—'जिस कार्य में मैं यहाँ लगा हूँ, सम्भव है वही मेरा अन्तिम कार्य हो। यहाँ से मैं यदि जीवित और अक्षत लौटा तो मेरा यह पुनर्जन्म होगा। मेरी अहिन्सा की परीक्षा जैसी यहाँ हो रही है, वैसी कभी नहीं हुई थी।' आज वे गाँव-गाँव और घर-घर जाकर अपना प्रेम-संदेश सुनाकर साम्प्रदायिकता के विष-वृक्ष का मूलोच्छेदन कर रहे हैं। आज संसार चकित होकर यह देख रहा है कि मुस्लिमलीग द्वारा प्रचारित साम्प्रदायिक विद्वेष के विषाक्त प्रभाव से प्रभावित धर्मान्ध मुसलमान पानी-पानी हो रहे हैं और ग्लानि का अनुभव कर रहे हैं।

यात्रा के तीन प्रधान उद्देश्य

गान्धीजी की नोआखाली यात्रा के तीन प्रधान उद्देश्य थे, जिन्हें गान्धीजी के बंगाल के विश्वास-प्राप्त डा० अनिल चक्रवर्ती ने गत १४ जनवरी को कलकत्ता यूनीवरसिटी के आशुतोष-हाल में भाषण करते हुए बताए थे। आपने कहा था कि—'गान्धीजी की यात्रा का तीन प्रधान उद्देश्य हैं। पहिला यह कि वहाँ के मुस्लिम सम्प्रदाय में आध्यात्मिक भावना उत्पन्नकर पड़ोसियों के प्रति मनुष्यता और भाई-चारे का भाव जागृत करना तथा साम्प्रदायिक विद्वेष का उन्मूलन करना। साथ ही उनमें यह विश्वास भी उत्पन्न करना कि अल्प संख्यकों से वैर करने में बहुमत सम्प्रदाय वालों की ही आर्थिक हानि है और संसार उन्हें अन्यायी तथा अत्याचारी मानेगा, दूसरे, अत्याचार- पीड़ित तथा भयभीत हिन्दुओं में विश्वास की भावना उत्पन्न करना, जिसके लिये गान्धीजी गाँवों के आन्तरिक भागों में गये और इसका दोनों सम्प्रदायों के लोगों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा। और तीसरा उद्देश्य यह है कि शरणार्थियों को अपने गाँवों और घरों में फिर से लाकर बसाने के लिये प्रबन्ध कराना और शरणार्थियों का भय दूर कर उन्हें वापस आने का साहस तथा प्रोत्साहन देना। इस पुनर्निर्माण कार्य में गान्धीजी ने घरों और झोपड़ों के बनाने के मसाले का प्रबन्ध करने, मजदूरों की व्यवस्था करने, जिनकी फसलें नष्ट कर दी गयी हैं उन किसानों को तकावी और कृषि सम्बन्धी कर्ज दिलाने इत्यादि में विशेष ध्यान दिया।

इन सब के ऊपर गान्धीजी ने अपनी प्रार्थना-सभाओं में प्रति दिन भय-त्रस्त और पीड़ित हिन्दुओं से भय का त्याग कर साहस लाने और मुसलमानों से हिन्दुओं के साथ मानवता का तथा अच्छे पड़ोसियों का-सा व्यवहार करने की मार्मिक अपीलें की। उसका जादू-सा प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है और भागे हुए हिन्दू अपने गाँवों में आकर फिर बस रहे हैं। गान्धीजी अपनी प्रेरणा से और नोआखाली में अपनी उपस्थिति से नोआखाली के रक्त-रंजित और धराशायी गाँवों में ऐसे नूतन नोआखाली का निर्माण कर रहे हैं, जो बङ्गाल और भारत की संस्कृति का दृढ़ और स्मारक होगा।'

डा० चक्रवर्ती के ये शब्द और समाचार-पत्रों में प्रकाशित होने वाले विवरण कि शरणार्थी लोग तेजी से अपने गाँवों में आकर बस रहे हैं, यह सिद्ध करते हैं कि महात्मा गान्धी की नोआखाली-यात्रा ने मुस्लिम लीग द्वारा फैलाये हुए साम्प्रदायिकता के विष को नष्ट करने में कितना आश्चर्यजनक कार्य कुछ ही हफ्तों में किया है, जो अन्य किसी व्यक्ति ही नहीं किसी संस्था द्वारा भी महीनों क्या वर्षों में भी पूरा नहीं हो सकता था।

———

कांग्रेस और मुस्लिम लीग

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि गान्धीजी को क्यों नोआखाली जाना पड़ा। इतिहास में बेजोड़ जैसा वीभत्स नर-संहार वहाँ हुआ था। लीगी बर्बरता के हवन में अगणित जीवित मनुष्यों की आहुतियाँ जिस प्रकार छोड़ी गयी थीं, अबला स्त्रियों पर जो पशुओं को भी लज्जित करने वाले अत्याचार हुए थे, सम्पत्तियों की लूट और होलियाँ जैसी मचायी गयी थीं, जघन्यता और क्रूरतायें जिस प्रकार खुलकर खेली थीं, उन्हें अनुभव करते और जानते हुए उन स्थानों के नाम से मानवता थर-थर काँपती थी। यह स्वाभाविक ही था कि इन अत्याचारों से सताये हुए लोगों को फिर वहाँ जाने का साहस क्यों और कैसे होता? ऐसी दशा में हिन्दू-मुस्लिम एकता के अनन्य प्रवर्तक और दीनों तथा असहायों के अन्यतम सहायक महात्मा गान्धी साम्प्रादायिक विद्वेष के चरम सीमा तक पहुँच जाने पर किस प्रकार अपनी जगह पर बैठे रह सकते थे और अन्त में आपको अपने सामने उपस्थित देश की स्वाधीनता के प्रश्न को अपनी अन्तिम अवस्था में सामने खड़ा देखकर भी उसके हल का प्रश्न कांग्रेस के अन्य उच्च अधिकारियों पर छोड़कर अपने जीवन के सर्वोपरि लक्ष्य हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रयत्न के निमत्ति नोआखाली की यात्रा के लिये अकेले ही प्रस्थान कर देना पड़ा।

भारतीय राजनीति के पाठकों से यह छिपा नहीं कि कांग्रेस ने भारत को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त कराकर फिर स्वाधीन करने के सर्वोपरि साधन हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के लिये अपने जन्म-काल से ही पिछले ६१ वर्षों के अन्दर क्या-क्या प्रयत्न किये। परन्तु कांग्रेस की बागडोर जब से गान्धीजी के हाथ में आयी उस समय से साम्प्रदायिक एकता को कांग्रेस के कार्य-क्रम में सर्व-प्रथम उसके लिये स्थान देकर भगीरथ प्रयास किये गये। इसके विपरीत मुस्लिम लीग ने अपने जन्म के समय से ही अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बनकर इन दोनों प्रयत्नों में कितनी बाधायें डालीं और आज तक डालती चली आ रही है, यह भी सर्वविदित ही है। फिर भी कांग्रेस और मुस्लिम लीग के इन कार्यों पर एक विहंगम दृष्टि डाल लेना यहाँ अप्रासंगिक न होगा और उससे मुस्लिम लीग की अड़ङ्गा डालने वाली और देश द्रोहिता की नीति के चरम रूप को संक्षेप में समझ लेने में सहायता मिलेगी।

कांग्रेस ने देश की एक मात्र राष्ट्रीय संस्था होने के नाते देश वासियों में स्वाधीनता की आग जिस प्रकार फूँकी और विदेशी शासन की जड़ पर प्रहार किया, उसे देखते हुए अंग्रेजों की रूह काँप उठी और उन लोगों ने भारत पर अपना राज्य बनाये रखने के लिये कांग्रेस की शक्ति नष्ट करने तथा स्वाधीनता के मार्ग में बाधा डालने के लिये मुसलमानों को कांग्रेस से अलग करने के निमित्त मुस्लिम लीग की स्थापना करायी। १९०६ में अंग्रेजों के अनन्य भक्त आगा खाँ की अध्यक्षता में मुस्लिम लीग

स्थापित हुई, जिसके दो मुख्य उद्देश्य थे—(१) ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी और (२) मुस्लिम हितों की रक्षा। अपने समय के सुप्रसिद्ध सरकार-परस्त सर सैयद अहमद खाँ लीग के खास हिदायतियों में से थे, जिन्होंने सरकारी मशीनरी के कल-पुर्जे तैयार करने के लिये अलीगढ़ में मुस्लिम लीग कालेज की स्थापना की, जिसे बाद में शीघ्र ही यूनीवर्सिटी का रूप दिया गया। वहाँ से पढ़कर निकलने वाले अधिकतर शिक्षित मुस्लिम युवक सरकारी नौकरियों में लिये जाते थे जिनमें अली-बन्धु (मौ० मोहम्मदअली और शौकतअली) भी थे। मुस्लिम लीग और अलीगढ़ कालेज का कार्य प्रायः साथ-साथ चला। मुस्लिम लीग बाहर मुस्लिम जनता में सरकारी प्रचार करती थी और अलीगढ़ कालेज मुस्लिम युवकों को इस कार्य के लिये सरकारी नौकरियों में भेजकर सरकारी संस्थाओं के अन्दर जाकर काम करता था, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज मिल रहा है। कांग्रेस विरोधी प्रचार करने और साम्प्रदायिकता का विष फैलाने में अलीगढ़ यूनीवर्सिटी के शिक्षित युवक अपढ़ और लफंगों को भी मात कर रहे हैं।

कांग्रेस की शक्ति जिस प्रकार देश में बढ़ती गयी, उसी परिमाण में सरकार भी मुस्लिम लीग को बल प्रदान करती गयी और फूट डालकर शासन करने की नीति पर चलते हुए वह मुसलमानों को कांग्रेस से अलग करने के लिए उनके सामने टुकड़े फेंकती गयी। जितना ही अधिक प्रयत्न कांग्रेस ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये और स्वाधीनता की लड़ाई में मुसलमानों को

शामिल करने के लिए किया, उतना ही प्रयत्न ब्रिटिश सरकार ने मुसलमानों को कांग्रेस और आजादी की लड़ाई से अलग रखने के लिए किया, जो देश के राजनीतिक घटनाओं और साम्प्रदायिक एकता के प्रयत्नों के पिछले तीस-बत्तीस बरसों के इतिहास पर दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है। इन घटनाओं का पूरा विवरण देने के लिए तो एक अलग ग्रन्थ लिखने की आवश्यकता पड़ेगी, इसलिए इस छोटी सी पुस्तक में उनका अत्यन्त संक्षेप में उल्लेख करके ही सन्तोष ग्रहण करना पड़ेगा।

मुस्लिम लीग यदि वैध रूप से और शान्ति के साथ अपना कार्य करती और कांग्रेस के रास्ते में अड़ंगे न लगाती, तब भी गनीमत होती किन्तु वहाँ तो अंग्रेजों का प्रोत्साहन काम कर रहा था, कांग्रेस की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर उनके पैर के नीचे की जमीन खिसकती जा रही थी, अतः उतने ही वेग से वे भी मुस्लिम लीग को बल प्रदान करते हुए कांग्रेस से समझौता न करने के लिए उसे उभाड़कर एकता होने में बाधा खड़ी करते जाते थे।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कांग्रेस अपने जन्म-काल से ही मुसलमानों को सम्मिलित कर आजादी की लड़ाई में उनका सहयोग लेने का प्रयत्न करती चली आ रही है। कितने ही मुसलमान नेता कांग्रेस के अध्यक्ष हो चुके हैं। कांग्रेस को हिन्दुओं की संस्था कहने वाले मुस्लिम लीग के वर्तमान नेता मि० जिन्ना भी पहिले कांग्रेस में थे, किन्तु १६१९ में कांग्रेस ने सरकार से असहयोग करने का निश्चय किया, तो सरकार परस्त

मि० जिन्ना पैतरा बदलकर कांग्रेस से अलग हो गए। इसमें सन्देह नहीं कि समय-समय पर मुस्लिम जनता ने भी काँग्रेस के आन्दोलनों में सहयोग करते हुए कुर्बानियाँ की हैं। कितने ही मुसलमानों ने गोलियाँ खायीं, लाठियाँ सही हैं, जेल गए हैं और सम्पत्ति की हानियाँ उठायी हैं, परन्तु अंग्रेजों और मुस्लिम लीगियों के कुचक्रों के कारण यह सहयोग सामूहिक और स्थायी नहीं रह सका। काँग्रेस ने समय-समय पर अपने सात अधिवेशनों में अध्यक्ष-पद मुस्लिम नेताओं को दिए हैं। सन् १८८५ से कांग्रेस की स्थापना के दो ही साल बाद १८८७ के तीसरे अधिवेशन के अध्यक्ष श्री बदरुद्दीन तैयबजी बनाए गए। उसके बाद १८९६ में मोहम्मद रहीमत उल्ला सयाना, १९१३ में नावाब सैयद मोहम्मद, १९१८ में सर हसन इमाम, १९२१ में हकीम अजमल खाँ, १९२३ और १९४० में मौलाना अबुल कलाम आजाद (दो बार) १९२४ में मौलाना मोहम्मद अली और १९२७ में डा० अन्सारी कांग्रेस के अध्यक्ष बनाये गये। इन सभी मुस्लिम नेताओं ने कांग्रेस के अध्यक्ष-पद से कांग्रेस के प्रति किये जाने वाले मुस्लिम सन्देहों का निराकरण किया, यह सिद्ध किया कि कांग्रेस हिन्दुओं, मुसलमानों और सभी धर्मावलम्बियों की आजादी के लिये लड़ रही है और स्वराज्य में सभी मजहबों के लोगों को बराबर से अधिकार रहेंगे, इसलिये मुसलमानों को बिना किसी शक-सुबह के कांग्रेस में शामिल होना चाहिये। परन्तु इस के विरोध में अँग्रेजों द्वारा अन्दरूनी तौर पर और मुस्लिम लीग द्वारा खुल्लम-खुल्ला झूठे प्रचारों के कारण अपढ़

मुस्लिम जनता कांग्रेस के घनिष्ट सम्पर्क में न आ सकी। फिर भी काँग्रेस हताश नहीं हुई और उसने वास्तव में हिन्दू हितों को हानि पहुँचाकर और हिन्दुओं के प्रति अपने दायित्व की अवहेलना करके भी मुसलमानों को खुश करने के अभिप्राय से उनसे कितनी ही बार समझौते के प्रयत्न किये। इसके लिये सन् १९१६ में प्रथम बार समझौता लखनऊ में हुआ, जो 'लखनऊ-पैक्ट' के नाम से प्रसिद्ध है। यद्यपि स्वर्गीय लोकमान्य तिलक सदृश राष्ट्रवादी नेता भी इसके विरुद्ध थे, क्योंकि इससे हिन्दुओं के हितों पर कुठाराघात होता था और जिसका केवल आज तक मूल्य ही नहीं चुकाना पड़ा बल्कि जो मुसलमानों को अपनी माँगें बराबर बढ़ाने का प्रोत्साहन देने में सहायक भी हुआ। परन्तु यह समझौता केवल इसी भावना से किया गया कि मुसलमान सन्तुष्ट हो जायँ और कांग्रेस के साथ मिलकर आजादी के लिये प्रयत्न करें। मगर असर हुआ उल्टा। मुसलमानों ने इसका अर्थ यह लगाया कि आजादी की लड़ाई में मुसलमानों के शामिल होने के नाम पर हमेशा काँग्रेस से सौदा-कर भारी मूल्य चुकाया जा सकता है। अतः उनकी माँगें सुरसा के मुँह की भांति बराबर बढ़ती ही गयी। 'मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की' काँग्रेस और लीग के समझौतों का इतिहास यही प्रतिध्वनित करता है। समय-समय पर एक दो और तीन बार नहीं, कितनी ही बार समझौते के प्रयत्न हुए, जिनमें मुसलमानों को काँग्रेस ने भारी कीमतें अदा की। इसके अतिरिक्त जब-जब भारी मामले पेश हुए, तब-तब ब्रिटिश सरकार ने मुसलमानों के

सामने भारी टुकड़े फेंके और मुसलमान समझौते की वार्ता तोड़कर सरकार से जा मिले। इसके उदाहरण प्रयाग में महामना मालवीय जी और अलवर-नरेश द्वारा बुलाये गये एकता सम्मेलन, १९३१ की गोल मेज कान्फरेंस तथा १९४५ के शिमला सम्मेलन की वार्ताओं से मिलते हैं, जब कि समझौता होते-होते ब्रिटिश सरकार के कुचक्र के कारण भंग हो गया। इसके बाद १९४२ में क्रिप्स-मिशन आये पिछले दो वर्षों के अन्दर महात्मा गान्धी द्वारा बारम्बार मि० 'जिन्ना का द्वार खटखटाने और ब्रिटिश मंत्रिदल मिशन के भारत आने और कांग्रेस तथा लीगी प्रतिनिधियों के लन्दन बुलाये जाने के समय हुई समझौते की वार्ताओं के सभी बार भंग होने की ताजी घटनाएँ अखबार पढ़ने वालों तथा देश की गति-विधियों की जानकारी रखने वालों से छिपी नहीं है।

हिन्दुओं के प्रति कांग्रेस की जिम्मेदारी

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि कांग्रेस जितना ही समझौते के लिये मुस्लिम लीग और मि० जिन्ना को खुशामद करती गयी, उतना ही लीग और जिन्ना का दिमाग सातवें आकाश पर चढ़ता गया। सच तो यह है कि गान्धीजी ने जिन्ना के घर बार-बार जाकर उनका महत्व बढ़ा दिया। यह बात बड़ी वेदना के साथ कहनी पड़ती है कि हिन्दुओं के त्याग और वोटों से ही शक्ति प्राप्त करनेवाली कांग्रेस ने हिन्दुओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी भुलाकर मुसलमानों को अधिकाधिक अधिकार दिये और

हिन्दुओं के हितों की हानि पहुँचायी यद्यपि काँग्रेस ने यह सब किया केवल देश की स्वतन्त्रता के लिये और उसे अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त करने के लिये। एक ओर जब कि मुस्लिम लीग मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध उभाड़ने और सङ्गठित करने के लिये सब कुछ किया, काग्रेस ने सदा हिन्दुओं को ही दबाया। साम्प्रदायिक दङ्गों में काँग्रेस हमेशा तटस्थ रही और उधर मुस्लिम लीग ने मुसलमानों को दंगे के लिये सङ्गठित किया और दङ्गों में भा हर प्रकार से मुसलमानों को सहायता पहुँचायी। काँग्रेस ने यह कभी नहीं सोचा कि हिन्दू महासभा को साम्प्रदायिक संस्था घोषित कर और उसे बदनाम कर हिंदुओं को उसने एकमात्र अपने प्रभाव में रखा है, अतः हिन्दुओं की रक्षा का प्रधान उत्तरदायित्व उसी पर है। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि काँग्रेस एक राष्ट्रीय संस्था होने के नाते केवल हिन्दुओं के लिये ही कुछ नहीं कर सकती। परन्तु तथ्य को वास्तविकता की कसौटी पर कसकर देखना ही होगा। आखिर हिन्दुओं की और उनके हितों की रक्षा कैसे की जाय? राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होने के कारण हिन्दुओं पर हिन्दू महा-सभा का कोई प्रभाव नहीं है, ऐसी दशा में काँग्रेस के सिवा हिन्दुओं के लिये दूसरी कौन ऐसी संस्था है जो सामूहिक सङ्कट आने पर उनकी रक्षा का प्रबन्ध करे? परन्तु कांग्रेस ने कदाचित प्रश्न के इस पहलू की ओर कभी ध्यान नहीं दिया केवल इस ख्याल से कि मुसलमान नाराज न हो जायँ और यह सब होते हुए भी कांग्रेस ने हमेशा मुसलमानों को प्रसन्न रखने का ही प्रयत्न

किया। मगर यह सब होते हुए भी मुस्लिम लीग और लीगी नेता बिल्कुल सफेद झूठ बोलकर कांग्रेस को मुस्लिम विरोधी हिन्दू संस्था कहते हुए संसार की आँखों में धूल झोंकना चाहते हैं और मुस्लिम जनता में कांग्रेस के विरुद्ध विष बो रहे हैं।

लीगी अड़ंगों का इतिहास

एक ओर यह राष्ट्रीय और साम्प्रदायिक एकता के लिये कांग्रेस द्वारा मुसलमानों को राजी करने का इतिहास है और दूसरी तरफ अपने सरासर झूठे प्रचार द्वारा मुसलमानों को कांग्रेस से अलग करने और कांग्रेस के स्वराज्य प्राप्त करने के मार्ग में रोड़े अटकाने का देश द्रोहिता का मुस्लिम लीग का इतिहास है। शुरू में मुस्लिम लीग का मुसलमानों पर कोई प्रभाव नहीं था और न उसका कोई आकर्षक प्रोग्राम ही था। १९१९ में कांग्रेस ने जब सरकार से असहयोग का प्रस्ताव पास किया, तो मि० जिन्ना सहित कुछ मुस्लिम नेता जेल जाने के भय से कांग्रेस से अलग होकर मुस्लिम लीग में शामिल हो गये। आन्दोलन चलाने का तरीका कांग्रेस से सीख कर निकले हुए मि० जिन्ना ने मुस्लिम लीग का नेतृत्व अपने हाथ में लिया और लीग को कांग्रेस के विरुद्ध खड़ा किया। ब्रिटिश सरकार भी मुस्लिम लीग को अधिकाधिक प्रोत्साहन देने लगी। मुसलमानों को उनकी संख्या के अनुपात से अधिक सीटें व्यवस्थापिका सभाओं में दी जाने लगी और सरकारी नौकरियों में भी अधिक जगहें उन्हें दी गया। १९३ के बाद

मुस्लिम लीग का प्रभाव मुसलमानों में अधिक बढ़ने लगा और १९३७ में व्यवस्थापिका सभाओं के चुनाव में मि० जिन्ना को अधिक सफलता मिली। मुस्लिम लीग की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर कांग्रेस ने भी लीग से समझौता करने के प्रयत्न फिर आरम्भ किये। १९३८-३९ में गान्धीजी, नेहरूजी और श्री सुभाषचन्द्रबोस आदि कांग्रेसी नेताओं और मि० जिन्ना के बीच समझौते की वार्ताएं आरम्भ हुई किन्तु मि० जिन्ना की अन्यायपूर्ण १४ शर्तों के कारण समझौता नहीं हुआ और वार्ता भङ्ग हो गयी। १९४० में मुस्लिम लीग ने अपने लाहौर अधिवेशन में पाकिस्तान का प्रस्ताव पास किया। लीग का पाकिस्तान का यह प्रस्ताव बम-विस्फोट के रूप में सामने आया, जिसका देश में सभी दलों और वर्गों द्वारा घोर विरोध किया जाने लगा। यहाँ तक कि लीग से इधर समस्त मुस्लिम संस्थाओं ने भी इसका विरोध किया, जिनमें जमायत-उल-उलमा, मजलिसे अहरार, मोमिन कान्फरेन्स, शिया कान्फरेन्स, आजाद मुस्लिम कान्फरेन्स, अंजुमने वतन इत्यादि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। ब्रिटिश सरकार ने भी समय-समय पर पाकिस्तान का विरोध किया और ब्रिटिश मंत्रिदल ने भी उसे आपत्तिजनक अव्यावहारिक और घातक बताया। यही नहीं अन्य देशों के राजनीतिज्ञों ने भी मि० जिन्ना की पाकिस्तान सम्बन्धी मांग की आलोचना की। परन्तु मुस्लिम लीग अपनी पाकिस्तान की माँग पर बराबर दृढ़ रही।

द्वितीय महा युद्ध समाप्त होने के बाद संसार की परिस्थिति

और दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ और कांग्रेस की स्वाधीनता की मांग ने असाधारण उग्रता धारण की। इसके फल-स्वरूप १९४२ में क्रिप्स-मिशन आया। किन्तु उसकी अदृढ़ नीति के कारण कांग्रेस से उसका समझौता नहीं हुआ। उसके बाद गत वर्ष १९४५ में ब्रिटिश मंत्रिदल समझौता करने को आया और उसने कांग्रेस से समझौता कर विधान परिषद बुलाने की बात स्वीकार की और अस्थायी राष्ट्रीय सरकार भी बनायी, जिसमें कांग्रेस ने सहयोग दिया। परन्तु मुस्लिम लीग ने फिर भी कांग्रेस से समझौता नहीं किया और अस्थायी सरकार तथा विधान परिषद में सम्मिलित होने में इनकार कर दिया।

—::*::—

लीगका सीधा हमला दिवस और उसके बाद

कलकत्ता और पूर्वी बङ्गाल का रक्तपात

कांग्रेस तथा ब्रिटिश सरकार द्वारा समझौते के ज्यों-ज्यों प्रयत्न होते रहे, त्यों-त्यों मुस्लिम लीग और मि० जिन्ना अकड़ते गये और पाकिस्तान की उनकी मांग जोर पकड़ती रही। लीग की ओर से बारम्बार यही स्पष्ट रूप से कहा गया कि बिना पाकिस्तान की मांग को आधार माने हुए कोई समझौता नहीं हो सकता और न मुस्लिम लीग ब्रिटिश मंत्रिदल की योजना स्वीकार करेगी। मुस्लिम लीग द्वारा मंत्रिदल की योजना अस्वीकार करने पर कांग्रेस ने बहुत सोच-विचार के बाद यह योजना स्वीकार कर ली और केन्द्र में अस्थायी सरकार का निर्माण पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ। इससे मुस्लिम लीग को बड़ी खिसियाहट हुई और उसने अस्थायी सरकार बनायी जाने का विरोध करना शुरू किया। देश के सभी भागों में सभायें कर लीगी नेताओं ने खुल्लम-खुल्ला हिंसा तथा मार-काट करने का प्रचार किया। गैर-मुसलमानों की ओर से बड़े-बड़े लोगों और अखबारों ने यह शिकायत भी की कि सरकार लीगी नेताओं को मार-काट का प्रचार करने की छूट क्यों दे रही है, किन्तु वायसराय और केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों की कमजोरी के कारण हिंसा प्रचारक लीगी नेताओं के विरुद्ध कोई रोक-थाम नहीं की गयी।

मुस्लिम जनता में खुल्लम-खुल्ला बगावत का प्रचार करने के बाद मुस्लिम लीग की कार्य-समिति ने २९ जुलाई को यह निश्चय किया कि मंत्रिमंडल योजना और अस्थायी सरकार के विरोध में सारे देश में प्रत्यक्ष आन्दोलन (डाइरेक्ट ऐक्शन) दिवस मनाया जाय। अतः इस निश्चय के अनुसार १६ अगस्त सन् १९४६ को देश में यह दिवस लीग की ओर से मनाया गया। बङ्गाल और सिन्ध प्रान्तों की मुस्लिम लीगी सरकारों ने इस दिन सरकारी दफ्तरों को भी बन्द करने की आज्ञा दे दी। केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध इन दोनों प्रान्तीय सरकारों का विरोध-प्रदर्शन करना कितना अवैध और मनमाने ढंग से कार्य करना था, इसका कोई ख्याल नहीं किया गया और इन दोनों प्रान्तों के गवर्नर ने भी लीगी मंत्रियों के इन कार्यों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया।

कलकत्ते में सीधा हमला दिवस के नाम पर हिन्दुओं का अत्यन्त भयानक कत्लेआम किया गया और उनका माल-मता घर-बार सब जलाकर भस्म कर दिया गया। नगर के विभिन्न भागों में हिन्दुओं पर सहसा हमला कर दिया गया। उनकी दूकानें और बड़े-बड़े कारखाने जला डाले गये। बेगुनाह स्त्रियों और बच्चों को काट-काटकर सड़कों और गलियों पर फेंका गया, बस्ती का बस्तियाँ स्वाहा कर दी गयीं; जलते हुए घरों से जिन लोगों ने निकलने का प्रयत्न किया उन्हें उन्हीं आगों में झोंक दिया गया, कितने ही लोगों को मारकर गङ्गा में, कुओं में, जमीन के अन्दर की नालियों (मैन-होल्स) में फेंक दिया गया, स्त्रियों का अपहरण किया गया, और कितनी ही अवलाओं का सतीत्व

नष्ट किया गया। निस्सन्देह कलकत्ते में जो नृशंसताएँ हुईं, बर्बरता और जघन्यताओं का जैसा क्रूर नर्तन वहाँ देखने में आया वह संसार के इतिहास में बेजोड़ है। एक लीगी नेता ने अपने भाषण में जो एक बार यह कहा था कि नादिरशाह और चंगेज खाँ के दिन फिर ला देंगे, उसे कलकत्ते के लीगियों ने कर दिखाया। उन पाशविक कृत्यों को देखकर यूरोपियन और एंग्लो-इंडियन तक थर्रा उठे थे और एंग्लो-इंडियन अखबारों तक ने लीगी मंत्रिमंडल तथा प्रधान मंत्री मि० सुहरावर्दी की घोर भर्त्सना की थी। कलकत्ते के एरिया कमांडर ब्रिगेडियर मि० स्मिथ ने एक प्रेस कान्फरेन्स में लीगी शासकों के हथकंडों की घोर निन्दा की थी और यह कहा था कि कलकत्ते में जिस समय उपद्रव हो रहे थे, पुलिस से काम नहीं लिया गया था। 'स्टेट्समेन' पत्र तक ने जो कि लीगी मंत्रिमंडल का सदा हिमायत करता था, लीगी मंत्रिमंडल को कलङ्कित घोषित किया। 'स्टेट्समैन' के कथनानुसार कलकत्ते का रक्त-रंजित उपद्रव लीगी शासकों का पहिले से तैयार किया हुआ षड्यंत्र था। जो कुछ भी हुआ वह सब प्रधान मंत्री सुहरावर्दी की जानकारी में हुआ था। लीगी गुण्डे प्रत्यक्ष रूप से लारियों में बैठकर दूकानों में आग लगाते और लूटते जाते थे, जिन्हें रोकने के लिये न पुलिस थी और न फौज। गुण्डों का पूरा राज्य था। दो दिन तक हिन्दुओं की अपार धन-जन की हानि हुई।

यह सब था लीग के सीधे हमले के गुप्त कार्य-क्रम का एक

हिंस्सा और इस बात का नमूना कि पाकिस्तानी शासन में हिंदुओं के साथ कैसा व्यवहार किया जायगा।

गान्धीजी ने कलकत्ते के उपद्रवों के सम्बन्ध में गत २५ अगस्त के 'हरिजन' ने लिखा है कि कलकत्ते के उपद्रवों से यह तय हो गया है कि डाइरेक्ट-ऐक्शन क्या है और आगे क्या होगा। यदि यही स्थिति कुछ और समय तक जारी रही, तो कलकत्ता बड़ी-बड़ी इमारतों का नगर नहीं रह जायगा।'

लन्दन के मुस्लिम निवासियों ने भी कलकत्ते के अत्याचारों के लिये लीगी मंत्रिमण्डल की निन्दा करते हुए यह कहा था कि दुष्टाचारी लीगी मंत्रिमंडल हटा दिया जाना चाहिये।

नोआखाली का रक्त-स्नान

कलकत्ते में खून की नदी बहाने के बाद भी लीगियों की रक्त-पिपासा शान्त नहीं हुई। पाकिस्तान की जड़ जमाने के लिये वे हिन्दुओं को बङ्गाल और खास कर पूर्वी बंगाल से नेस्तनाबूद कर देने का स्वप्न देख रहे थे। अतः नोआखाली और टिपरा जिलों में लीगियों ने आग भड़कानी शुरू कर दी। पहिले छोटे-मोटे गाँवों में थोड़ी संख्या में रहने वाले हिन्दुओं को लूटना-पीटना और सताया जाना शुरू किया गया और धीरे-धीरे उत्पात बढ़ने लगा।

१० अक्टूबर से नोआखाली जिले में संगठित रूप से उपद्रव शुरू हुए। जिनमें रामगंज, बेगमगंज, लक्ष्मीपुर आदि थानों के गाँव भयङ्कर कांडों के शिकार बनायें गये। घातक हथियारों से

लैस होकर हजारों की संख्या में मुसलमानों ने हिन्दुओं की हत्या करना, लूट-पाट मचाना और घरों को जलाना आरम्भ किया। साथ ही स्त्रियों का अपहरण, बलात्कार और धर्म-परिवर्तन भी किया जाने लगा। मन्दिरों और अन्य देव-स्थानों को भी अछूता नहीं छोड़ा गया। उपद्रवों की बढ़ती हुई आग देखकर हिन्दू नेताओं ने और कलकत्ते में रहने वाले नोआखाली के लोगों ने बंगाल के प्रधान-मन्त्री मि० सुहरावर्दी का ध्यान आकर्षित किया, किन्तु कोई सुनवायी नहीं हुई।

प्रतिदिन अधिकाधिक लोमहर्षक विवरण आने लगे। आजाद भारतीय हिन्दू महासभा के प्रधान मन्त्री श्री आशुतोष लाहिड़ी ने एक वक्तव्य में बताया कि—'नोआखाली जिले की २५० वर्ग मील तक की हिन्दुओं की बस्तियों को हजारों मुसलमानों की भीड़ों ने घेर कर सैकड़ों हिन्दुओं का वध किया, लूटा-पाटा और हजारों को मुसलमान बनाया। मारे गये हिन्दुओं की संख्या सैकड़ों नहीं बल्कि हजारों में है। एक लाख से अधिक हिन्दू मुसलमान बना लिये गये हैं।' बंगाल सरकार की एक विज्ञप्ति में भी बताया गया कि १० अक्टूबर से नोआखाली जिले के हिन्दुओं पर दर्दनाक अत्याचार किये गये हैं। १७ अक्टूबर को समाचार मिला कि नोआखाली और टिपरा जिलों में हजारों आदमी मार डाले गये हैं, हजारों घर जला कर भस्म कर दिये गये हैं और सैकड़ों हिन्दू स्त्रियाँ भगा लेजाकर मुसलमान बना ली गयी हैं। 'स्टेटस मैन' पत्र ने प्रकाशित किया कि नोआखाली और टिपरा जिलों के डेढ़ लाख

हिन्दू इन अत्याचारों के शिकार हुए हैं। हजारों की संख्या में हिन्दू भाग कर कोमिल्ला तथा अन्य स्थानों को गये।

परिस्थिति अधिकाधिक बिगड़ती देखकर कांग्रेस के अध्यक्ष आचार्य कृपलानी और श्री शरत् चन्द्रबोस वायुयान द्वारा नोआखाली जिले को दौड़े गये और घटना-स्थलों का निरीक्षण किया। ध्वस्त और जलाये गये स्थानों को अपनी आँखों से देखने तथा अत्याचारों का विवरण अपने कानों से सुनने के बाद राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी ने एक वक्तव्य प्रकाशित किया। यह वक्तव्य किसी हिन्दू समाजवादी नेता का नहीं वरन् साम्प्रदायिकता से कोसों दूर रहने वाले राष्ट्रीय संस्था स्वतः कांग्रेस के अध्यक्ष आचार्य कृपलानी का है, जो घटनाओं की पूर्ण रूप से छान-बीन करने के बाद प्रकाशित किया गया है और उससे प्रत्यक्ष प्रकट होता है कि इन समस्त पाशविक तथा बर्बर काण्डों के लिये मुस्लिम लीग नेता किस हद तक जिम्मेदार हैं और बङ्गाल की लीगी सरकार न केवल हिन्दुओं की जान-माल की रक्षा करने के प्रति उदासीन रही बल्कि लीगी गुंडों की तनिक भी रोक-थाम न कर उन्हें किस तरह प्रोत्साहित किया।

राष्ट्रपति कृपलानी की रिपोर्ट

राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी ने पत्र-प्रतिनिधियों के बीच भाषण करते हुए कहा था कि चाँदपुर और नोआखाली के भीतरी भागों का दौरा समाप्त कर चुकने के उपरान्त मैं निम्न निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ, जो कि मेरा विश्वास है किसी भी निष्पक्ष

जाँच-अदालत के सामने स्थानिक शहादत के साथ सत्य प्रमाणित किये जा सकते हैं।

ये निष्कर्ष इस प्रकार हैः—(१) नोआखाली और टिपरा जिलों की हिन्दू आबादी पर किया गया आक्रमण पूर्व आयोजित और पूर्व संगठित था। इसकी योजना मुस्लिम लीग ने तैयार की थी। यह मुस्लिम लीग के प्रोपेगेण्डा का परिणाम था। स्थानीय शहादतों से यही साबित हुआ कि इसमें गाँवों के प्रमुख लीगी नेताओं का बहुत बड़ा हाथ था। (२) जो कुछ होने वाला था उसकी चेतावनियाँ अधिकारियों को पहले दी जा चुकी थीं। तत्सम्बन्धी क्षेत्रों के प्रमुख हिन्दुओं ने उन अधिकारियों को जबानी और लिखित रूप में ये चेतावनियाँ दी थीं। (३) मुसलमानों में आमतौर पर यह विश्वास फैला हुआ था कि यदि हिन्दुओं के खिलाफ कुछ किया गया तो सरकार मुसलमानों के विरुद्ध कोई कार्रवाई न करेगी। (४) मुसलमानों ने यह तरीका अख्तियार किया था कि वे सैकड़ों के और कहीं-कहीं हजारों की संख्या में जमा होकर और तब वे हिन्दुओं के गाँवों या मिश्रित आबादी वाले गावों के हिन्दुओं के घरों पर हमला करते। ये लोग पहले मुस्लिम लीग के लिये और कभी-कभी कलकत्ते के उपद्रवों के मुस्लिम पीड़ितों के लिये चन्दे की माँग करते। जबर्दस्ती वसूल किये जाने वाले इन चन्दों की रकम बहुत गहरी कभी-कभी तो १०००० रु० तक या उससे भी अधिक होती थी। चन्दे वसूल कर लिये जाने के बाद भी हिन्दू आबादी सुरक्षित नहीं थी। बाद में वहाँ पर उपद्रियों की सेना या भाड़ दिखाई देती और वह हिन्दू घरों को

लूटती। अधिकांश मामलों में हिन्दुओं के लूटे हुए घर जला दिये जाते थे। उपद्रवी केवल रुपये पैसे आभूषण या अन्य मूल्यवान वस्तुएं ही नहीं वल्कि काम में आने वाला प्रत्येक सामान—जैसे अनाज, वर्तन, कपड़ा आदि—लूट लेते थे। वे कभी-कभी किसी हिन्दू घर को लूटने से पहले उसमें रहने वाले व्यक्तियों से मुसलमान वन जाने के लिये कहते। किन्तु धर्मपरिवर्तन के वाद भी वे लूट और आगजनी का शिकार वनने से वच नहीं सकते थे। (५) आक्रमणकारी मुस्लिम भीड़ वही नारे लगाती जो कि मुसलिम लीग के नारे हैं—जैसे "लीग जिन्दावाद" "पाकिस्तान जिन्दावाद" "लड़ के लेंगे पाकिस्तान" "मार के लेंगे पाकिस्तान"।

हिन्दू आवादी से यह भी कहा जाता कि कलकत्ते के उपद्रवों में मुसलमानों की जो जानें गयी हैं उसी के वदले के रूप में यह लूट मार, आगजनी और हत्यायें हो रही हैं। उपद्रवियों का मुकावला करने वाले सभी व्यक्तियों को कत्ल कर दिया जाता। कभी-कभी तो उन पर गोलियाँ चलायी जातीं, क्योंकि आक्रमणकारियों के पास वन्दूकें थीं। ये वन्दूकें या तो मुस्लिम जमींदारों की थीं या वे हिन्दुओं के घरों से चुरा या छीन ली गयी थीं। कभी-कभी तो मुकावला न करने पर भी हिन्दुओं को मार डाला जाता। (६) हिन्दुओं को जुमा की नमाज में वुलाया गया और उनसे जवर्दस्ती कलमा और नमाज पढ़वाया गया। हिन्दू स्त्रियों को उनकी चूड़ियाँ तोड़कर उनकी माँग का सिंदूर पोंछकर मुसलमान वनाया गया। इस धर्म-परिवर्तन की शिनाख्त

के तौर पर उनसे पीर द्वारा पवित्र किये गये वस्त्र का स्पर्श करने के लिये कहा गया। उन स्त्रियों से भी कलमा पढ़वाया गया। (७) हिन्दुओं के घरों की समस्त देवताओं की मूर्तियाँ नष्ट कर डाली गयीं और उपद्रव-पीड़ित क्षेत्रों के समस्त मन्दिरों को लूटा और जलाया गया। (८) जबर्दस्ती ब्याही जाने वाली हिन्दू लड़कियों की ठीक-ठीक संख्या निर्धारित करना वर्तमान स्थिति में असम्भव है। एक लड़की की रक्षा नोआखाली के यूरोपियन मजिस्ट्रेट ने २५ अक्टूबर को श्रीमती कृपलानी द्वारा विस्तृत रिपोर्ट दी जाने पर की। (९) स्पष्ट कारणों से मेरे लिये बलात्कार के मामलों की कोई निश्चित संख्या ज्ञात करना सम्भव नहीं हो सका। उनके हाथों की शंख की चूड़ियाँ तोड़ डाली गई और माँग का सिंदूर पोंछ डाला गया। एक स्थान पर उपद्रवियों ने उन्हें जमीन पर पटक कर अपने पैर के अंगूठे से माँग का सिंदूर मिटाया। (१०) इन क्षेत्रों के हिन्दू चाहे वे मुसलमान बना लिये गये हैं या नहीं, लगातार भयत्रस्त अवस्था में बने हुए हैं। (११) उपद्रव पीड़ित गाँवों के मार्गों पर भारी गश्ती टुकड़ियों द्वारा प्रभावपूर्ण ढङ्ग से पहरा दिया जाता है। कुछ मामलों में नये मुसलमान बने हिन्दुओं को गाँव से बाहर जाने और वापस लौटने के लिये 'परमिट' (अनुमति पत्र) जारी किये हैं। (१२) इत्तिफाक से जो लोग उपद्रव आरम्भ होने के समय अपने गाँव से बाहर आये हुए थे वे अपने गाँवों को लौट नहीं सके इसलिये उन्हें अपने परिवार वालों के सम्बंध में कोई सूचना नहीं प्राप्त हुई है। (१३) दंगे के दिनों में पुलिस का प्रबन्ध नहीं

रह गया था। अब पुलिस-दल गश्त लगाने का कार्य कर रहे हैं। पुलिस वालों का कहना है कि उन्हें न तो आत्म-रक्षा या अन्य मामलों में गोली चलाने का आदेश मिला था और न मिला है।

मैं इस बात को प्रमाणित कर सकता हूँ कि आगजनी २० अक्टूबर तक जारी रही। मैंने १९ और २० अक्टूबर को चाँदपुर और नोआखाली के क्षेत्रों में आकाश-मार्ग से घरों को जलते हुए देखा था। इन अग्नि-काण्डों को बंगाल के प्रधान मंत्री ने, जो २० अक्टूबर को हमारे साथ ढाका से वायुयान द्वारा यात्रा कर रहे थे, अपनी आँखों से देखा था।

पूर्वी बङ्गाल के इन काण्डों की इङ्गलैण्ड, अमेरिका तथा अन्य देशों में तीव्र निन्दा करते हुए बड़ी चिन्ता प्रकट की गयी। ब्रिटिश पार्लमेंट की कामन्स सभा में भी पूर्वी बङ्गाल के कांडों पर गहरा प्रकाश डाला गया और इनके लिये मुस्लिम लीग को जिम्मेदार बताया गया है और कहा गया है कि लीगियों के साम्प्रदायिक प्रोपगंडा के ही कारण यह सब हुआ है।

कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी ने भी राष्ट्रपति की रिपोर्ट सुनने के बाद पूर्वी बङ्गाल के भयानक कांडों की घोर निन्दा की और इनके लिये वायसराय, बङ्गाल के गवर्नर, लीगी मंत्रिमंडल तथा मुस्लिम लीग को जिम्मेदार ठहराया।

गांधीजीका नोआखालीके लिये प्रस्थान

साम्प्रदायिक विद्वेष की इस भयानक रूप से फैलती हुई ज्वाला और असंख्य बेगुनाहों के अभूतपूर्व कत्लेआम को देखते हुए अहिंसा और दया की मूर्ति महात्मा गान्धी कैसे चुप बैठ रह सकते थे। राष्ट्रपति कृपलानी, श्री शरत् बोस तथा अन्य कितने ही विश्वसनीय व्यक्तियों के आँखों देखे विवरण सुनने के बाद गान्धीजी ने २८ अक्टूबर सन् १९४६ को नोआखाली के लिये प्रस्थान किया। प्रस्थान करते समय आपने इतना ही कहा कि 'पीड़ितों के आँसू पोंछने के लिये मैं नोआखाली जा रहा हूँ।'

यात्रा के आरम्भ में गान्धीजी एक सप्ताह तक कलकत्ते में रहकर वहीं से नोआखाली के विवरण प्राप्त करते और वहाँ का परिस्थिति का अध्ययन करते रहे। गान्धीजी के कलकत्ते आते ही लीगी मंत्रिमंडल का आसन डोला और प्रधान मंत्री सुहरावर्दी गान्धीजी के निवास स्थान को दौड़ने लगे। लीगी सरकार ने भी हाथ-पैर हिलाये, गुण्डों की यत्र-तत्र थोड़ी बहुत गिरफ्तारियाँ होने लगीं और शरणार्थियों की ओर भी ध्यान दिया गया। गांधीजी कलकत्ते से ६ नवम्बर को स्टीमर द्वारा नोआखाली रवाना हुए। गाँधीजी की यात्रा के लिये मि० सुहरावर्दी ने सुविधाओं और हिफाजत का यथेष्ट प्रबन्ध किया था। ७ नवम्बर को महात्माजी नोआखाली जिले के चाँमुहानी नामक स्थान में

पहुँचे ! लीगी सरकार के व्यापार मंत्री गाँधीजी को चौमुहानी तक पहुँचाने गये थे। यहाँ गाँधीजी कई दिन रहे। आस-पास के गाँवों से आने वाले ग्रामीणों से गाँधीजी ने उनकी विपद्-गाथाएँ सुनीं, जिन्हें सुनकर आप अत्यन्त दुखी हुए। अपने पतिदेव के साथ तथा बाद में भी पूर्वी बङ्गाल के दौरे में प्राप्त अपने अनुभव श्रीमती सुचेता कृपलानी ने भी गाँधीजी को सुनाए। इसके बाद महात्माजी स्वतः गाँवों की दशा देखने के लिये गाँवों में जाने लगे। चौमुहानी से १ मील दूर गोपेरबाग की हृदय द्रावक दशाएँ देखकर रो पड़े। इस गाँव में एक परिवार के १९ आदमी मार डाले गये थे। श्रीमती कृपलानी ने इस घर के रक्त-रञ्जित कमरे गाँधीजी को दिखाये। गाँधीजी ने देखा कि उन कमरों के सब सामान जला दिये थे। सारा गाँव श्मशान की तरह दिखायी दिया।

गांधीजी को वहाँ के वीभत्स दृश्य देखकर अपार वेदना हुई। आपने यहाँ अपना भोजन घटा दिया। भोजन घटाने का एक कारण यह भी था कि आपकी इच्छा यह भी थी कि यदि साम्प्रदायिक एकता के लिये आमरण अनशन करना आवश्यक हो तो उसके लिये पहिले से क्रम बना लिया जाय। इसके बाद गाँधीजी दत्तपाड़ा गाँव गये और वहाँ रहते हुए अन्य गाँवों का भी भ्रमण करते रहे। खिजिरखिल गाँव, जो दत्तपाड़ा से लगभग १२ मील पर है, जाने पर आपको मालूम हुआ कि यहाँ धन-जन की इतनी भारी क्षति हुई है, जितनी नोआखाली जिले भर के किसी अन्य गाँव में नहीं हुई। यहाँ गाँधीजी ने सन्ध्या समय

प्रार्थना भी की और प्रार्थना के बाद एकत्र हजारों मनुष्यों के बीच भाषण करते हुए आपने एकता के लिये अपील की। यहाँ भी आप कई दिन रहे और इस बीच में आस-पास के ध्वस्त गाँवों को देखने गये। बङ्गाल के प्रधान मंत्री मि० सुहरावर्दी खिजिरखिल आकर गाँधीजी से मिले। उन्होंने गाँधीजी को यह आश्वासन दिया कि मैं मुसलमानोंसे कहूँगा कि वे हिन्दुओं के मकान फिर बनवावें और शरणार्थियों को अपने गाँवों में आकर बसने के लिये राजी करें। यहाँ के बाद गाँधीजी रामगञ्ज गये और यहाँ भी तीन दिन रहे। रामगंज में आपने अपना भोजन और भी घटा दिया। यहाँ से १५ नवम्बर को आप नन्दनपुर गाँव गये और वहाँ अधिक संख्या में एकत्र शरणार्थियों की दशा देखी। यहाँ आपको एक रिपोर्ट भी दी गयी, जिसमें बताया गया था कि यहाँ के अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर कितने भीषण अत्याचार हुए हैं। रिपोर्ट के कथनानुसार इस गांव में ३३ लाख रु० की हानि हुई है। यहाँ की प्रार्थना-सभा में बड़ी भीड़ हुई थी, जिसमें अधिकतर शरणार्थी लोग थे, जिनमें अनेक ऐसे धनी परिवार के थे, जिनका सब-कुछ नष्ट कर दिया गया था और जो अब एक-एक दाने के मुँहताज हो गये थे। इन लोगों को चीथड़े लपेटे देखकर गाँधीजी बहुत दुखी हुए। १००० से अधिक स्त्रियां भी थीं; जो अधिकाँश विधवा हो गयी थीं। गाँधीजी ने अपने भाषण में कहा कि जहाँ कहीं भी मैं गया हूँ, सर्वत्र मुझे विनाश के दृश्य दिखायी दिये हैं। मेरी आँखों में तो अब आँसू ही नहीं रहे जो बाहर निकलें।

हिन्दुओं को आश्वासन

रामगंज में लीगी सरकार के रसद विभाग के मंत्री मि० गफरान साहब और कृषि-मंत्री मि० अहमद हुसेन भी गाँधीजी से मिलने आये। इन मंत्रियों ने प्रार्थना सभा में भाषण करते हुए कहा कि १० और १६ अक्टूबर के बीच जो घटनाएँ नोआखाली और टिपरा में घटी हैं उनके लिये हमें हार्दिक दुख है। उन्होंने हिन्दुओं को यह आश्वासन भी दिया कि सरकार तथा मुस्लिम लीग दोनों यह नहीं चाहती कि हिन्दू लोग पूर्वी बङ्गाल छोड़कर चले जायँ। मैं मुसलमानों की ओर से हिन्दुओं को यह आश्वासन देता हूँ कि वे निर्भय होकर अपने गाँवों में आकर बसें। जिन लोगों ने उनके साथ जुल्म किये हैं, उन्हें पूरी सजा दी जायगी।

इसके बाद गाँधीजी श्रीरामपुर के लिये रवाना हुए। जिस समय गाँधाजी श्रीरामपुर के लिये चलने को तैयार हुए, तो सब लोगों की आँखों में आँसू आ गये थे। डा० सुशोला नायर के नेत्र अधिक छलछला आये थे। लोग गाँधीजी की नाव को तब तक बराबर देखते रहे, जब तक वह दिखायी देती रही। गाँधीजी की मुख-मुद्रा भी गम्भीर थी।

—::※::—

श्रीरामपुर में डेढ़ मास

अनेक महत्वपूर्ण घटनायें और निर्णय

२० नवम्बर सन् १९४६ को गांधीजी श्रीरामपुर पहुँचे। यहाँ के आस-पास के क्षेत्रों में भयङ्कर विनाश उपद्रवों में हुआ था। अत: गांधीजी ने यहाँ एक महीने रह कर मुसलमानों में हृदय-परिवर्तन और शरणार्थी हिन्दुओं में विश्वास की भावना उत्पन्न करने के लिये अधिक समय देना आवश्यक समझा। श्रीरामपुर के लिये प्रस्थान करने से पहिले गांधीजी ने मदरास के सुप्रसिद्ध **'हिन्दू' पत्र के सम्वाददाता से बातें करते हुए कहा था कि—"मैं यहाँ अपने कुछ नये प्रयोग करूँगा। जिनमें मेरी अहिन्सा की सच्ची परीक्षा होगी। यदि मुझमें काफी साहस होगा और उस साहस को मैं अपनी अहिन्सा से मिला सका, तो मैं हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को प्रभावित कर सकूँगा। यहाँ मैं अकेले गाँवों का भ्रमण करूँगा और इस प्रकार मेरे दल के सभी लोग अलग-अलग गाँवों में जाकर अहिन्सा तथा साम्प्रदायिक एकता का प्रचार करेंगे।"**

गांधीजी से सम्वाददाता ने पूछा कि क्या आप यहाँ गुण्डों से भरे हुए गाँवों में अकेले जाकर अपने जीवन को खतरे में नहीं

डाल रहे हैं ? गांधीजी ने अपने सरल शब्दों में उत्तर देते हुए कहा—'मेरी दृष्टि में कोई गुण्डा नहीं है और यदि गुण्डे हैं, तो सभी गुंडे हैं, कोई कम हैं और कोई ज्यादा। मुझे तो विश्वास है कि ईश्वर जब तक इस शरीर से काम लेना चाहता है, तब तक इसे वह समस्त व्याधियों से मुक्त रखेगा।'

गान्धीजी ने यहाँ आकर एक वक्तव्य भी प्रकाशित किया, जिसमें आपने कहा—"मैं यहाँ सत्य और अहिन्सा की परीक्षा के ही लिये नहीं बल्कि स्वतः अपनी परीक्षा के लिये आया हूँ। मेरा उद्देश्य यहाँ एक महीने तक रह कर अपने जीवन के महान ध्येय साम्प्रदायिक एकता के लिये अंतिम प्रयत्न करने का है। यदि आवश्यक हुआ, तो मैं अपना प्राण भी विसर्जित कर दूँगा। मेरी इच्छा यह है कि मैं यहाँ एक मुस्लिम लीगी के घर में उसके कुटुम्ब के एक सदस्य की तरह रहूँ और मुसलमानों से सम्पर्क बढ़ाऊँ।"

यहाँ गांधीजी ने यह भी घोषित किया कि डा० राजेन्द्रप्रसाद के इस अश्वासन से कि विहार की परिस्थिति काफी सुधर गयी है, मैंने बकरी का दूध फिर लेना शुरू कर दिया है और भोजन की मात्रा भी बढ़ा दी है।

श्रीरामपुर में गांधीजी के पास सिलहट के ११ मुसलमानों और एक यूरोपियन ने आध सेर सिंदूर और २०० चूड़ियाँ उन

१ चांदपुर से प्रस्थान के अवसर पर गांधी जी का स्वागत—श्री अवनी मजुमदार के घर की स्त्रियां गांधी जी के मस्तक पर तिलक लगा रही हैं ।

हिन्दू स्त्रियों के लिये भेजा, जिनके सिंदूर उपद्रवी मुसलमानों ने मिटा दिये थे और चूड़ियाँ तोड़ डाली थीं। ८५०) रु० का एक चेक भी इस कार्य के लिये श्री अखिल चन्द्रदत्त की मार्फत गांधीजी के पास भेजा गया था।

यहाँ नित्य प्रार्थना-सभाओं में भाषण कर गांधीजी मुसलमानों में आत्म-शुद्धि और अपने किये जुल्मों के लिये पश्चाताप की भावना तथा हिन्दुओं में विश्वास की भावना उत्पन्न करने का प्रयत्न करते थे।

गान्धीजी का चमत्कार

श्रीरामपुर में निवास के दिनों में गांधीजी का चमत्कार पूर्ण रूप से दिखाई दिया, जिसे देखकर सारा संसार एक बार ही चकित हो गया। इस अल्प-निवास में ही आपने मुसलमानों की उग्र साम्प्रदायिक भावना में आश्चर्य-जनक परिवर्तन कर दिया। २३ नवम्बर को गांधीजी की उपस्थिति में हिन्दू-मुसलमानों का एक सम्मेलन हुआ, जिसमें एकता के लिये तीन घण्टे तक बातें होती रहीं। इसमें यह निश्चय हुआ कि शरणार्थियों को फिर से लाकर बसाने के लिये शान्ति-कमेटियाँ बनायी जाय। इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए बंगाल की लीगी सरकार के मजदूर-मंत्री मि० शमसुद्दीन ने सब लोगों से अपील की कि 'क्षमा करो और भूल जाओ' की नीति सब लोग ग्रहण करें और गांधीजी की यात्रा सब लोग मिलकर सफल बनावें।

इसी दिन गांधीजी गाँव के एक कट्टर मौलवी के घर गये,

जिसने गांधीजी का बड़ा सम्मान किया। और सन्तरे तथा नारियल भेंट किये। इस अवसर पर यहाँ गाँव के अन्य मुसलमान भी एकत्रित थे। सबने गांधीजी का सम्मान और स्वागत किया और कहा कि—'आपको अपने बीच पाकर हम लोग धन्य हो गये।'

इन्हीं दिनों मेरठ में कांग्रेस-अधिवेशन हो रहा था, किन्तु कांग्रेस के उच्च अधिकारियों द्वारा बहुत अनुनय-विनय करने पर भी गांधीजी कांग्रेस अधिवेशन में नहीं गये और यह उत्तर भेजा कि कांग्रेस में आने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण काम मैं यहाँ कर रहा हूँ।

३० नवम्बर को गांधीजी ने फिर यह घोषणा की कि पूर्वी बंगाल से मैं तब तक नहीं हटूँगा जब तक मुझे यह विश्वास नहीं हो जायगा कि दोनों सम्प्रदायों में परस्पर विश्वास की भावना स्थापित हो गयी है और दोनों अपने गावों में पूर्ववत् भाई-भाई की तरह रहने लगे हैं।

इसी दिन गांधीजी ने प्रार्थना एक मुसलमान के घर पर की। इसमें बहुत मुसलमान सम्मिलित थे। प्रार्थना के बाद भाषण हुए, जिनमें एकता के लिये अपील की गयी। एक मौलवी ने भी हिन्दू-मुस्लिम एकता का गाना गाया।

घर-घर जाकर मरीजों की सेवा

गांधीजी आस-पास के गाँवों में घर-घर जाकर मरीजों की सेवा करते, विशेषतः मुसलमानों के घरों में। मरीजों के इलाज

के लिये आप डाक्टर सुशीला नायर को भी भेजते थे। गांधीजी के इन सेवा-कार्यों का मुस्लिम जनता पर कैसा अनुकूल और आश्चर्य जनक प्रभाव पड़ा, इसका न केवल अनुमान ही किया जा सकता है, वरन् वह प्रत्यक्ष दिखाई भी दिया। जिन मुस्लिम घरों में गांधीजी जाते थे, उनकी स्त्रियां और पुरुष गांधीजी से कहते थे कि—जब आप हम लोगों को छोड़कर चले जायँगे, तो हम किस तरह रहेंगे। आपने अपनी दयालुता और प्रेम से हम लोगों को अपना गुलाम बना लिया है।

उधर हिन्दुओं पर भी गांधीजी की उपस्थिति और उपदेशों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे शीघ्र ही निर्भय होकर अपने गाँवों में वापस आकर रहने लगे।

गांधीजी प्रतिदिन टहलते हुए आस-पास के गाँवों में जाते थे और वहाँ से आकर अपना भोजन स्वयं बनाते थे, क्योंकि आप अकेले ही रहा करते थे। श्रीरामपुर में रहकर गांधीजी ने बंगला भाषा का पूरा अभ्यास कर लिया, जिसे आप लिख-पढ़ और बोल भी सकते हैं। ७ दिसम्बर को गांधीजी से कलकत्ता यूनीवर्सिटी के डाक्टर अमिय चक्रवर्ती आकर मिले। श्री सुभाष-चन्द्र बोस के भतीजे श्री अरविंद बोस भी गांधीजी से मिले। ११ दिसम्बर को इलाहाबाद के राजा साहब भदरी आकर गांधी-जी से मिले, जो कहा जाता है कि काँग्रेस के उच्च अधिकारियों का एक महत्वपूर्ण सन्देश लेकर गांधीजी के पास आये थे।

१२ दिसम्बर को डाक्टर अमिय चक्रवर्ती फिर गांधीजी से मिले और पूर्वी बङ्गाल के महान प्रयोग के सम्बंध में आप से

कुछ प्रश्न किये। गांधीजी ने कहा कि मैं स्वतः नहीं जानता कि मेरा अगला कदम क्या होगा। ईश्वर की जो प्रेरणा होगी, वही होगा। डाक्टर चक्रवर्ती ने गांधीजी से वार्ता के बाद अपने एक वक्तव्य में कहा कि नोआखाली एक रसायन शाला के रूप में इस समय है, जहाँ गान्धीजी महान प्रयोग कर रहे हैं और ऐसी दवा तैयार कर रहे हैं, जो शान्ति-स्थापना की कला के रूप में समस्त संसार के काम आयेगी। आपने कहा कि समस्त संसार गान्धीजी के पूर्वी बङ्गाल के कार्यों को बड़ी उत्सुकता के साथ देख रहा है और लन्दन में भी यही समझा जा रहा है। १३ दिसम्बर को गान्धीजी से मदरास के कुछ प्रमुख कार्य-कर्ता आकर मिले। १९ दिसम्बर को आसाम के श्री महेन्द्र मोहन चौधरी गांधीजी से मिले और आसाम के प्रान्तों के समूह में सम्मिलित होने के प्रश्न पर उनसे सलाह ली।

इसी दिन श्रीआसफअली, जो अमेरिका में भारत के राजदूत नियुक्त किये गये हैं, अमेरिका जाने से पहिले महात्मा जी का आशीर्वाद ग्रहण करने के लिये श्रीरामपुर आये। गाधीजी ने प्रार्थना के समय सभा में श्रीरामपुर के लोगों का श्रीअसफअली का परिचय कराया और कहा कि आप अपने जीवन भर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये प्रयत्न करते आये हैं और अब आप लोगों के दूत बनकर अमेरिका जा रहे हैं। आप लोग इनसे नसीहत लीजिये कि अपने सह-धर्मियों की झिड़कियाँ तथा बेइज्जती सह कर भी यह हमेशा हिन्दू-मुसलमानों के मेल और मुल्क की खिदमत में लगे रहे।

आज की प्रार्थना गांधीजी ने एक जले हुए ध्वस्त मकान में की थी। प्रार्थना के बाद अपने भाषण में आपने आज एक बार फिर घोषित किया कि—'मैं नोआखाली में शान्ति स्थापित करने के लिये आया हूँ। या तो शान्ति स्थापित करूँगा और या इस प्रयत्न में अपना प्राण विसर्जित कर दूँगा। आपने कहा कि यहाँ मेरी अहिंसा की कठिन परीक्षा होने जा रही है। जब मेरे सदृश ७८ वर्ष का वृद्धा अहिंसा को अमल में ला सकता है तो दूसरे लोग क्यों नहीं अमल में ला सकते, यद्यपि मैं यह जानता हूँ कि अहिंसा पर अमल करना कठिन है। आपने कहा कि लोग मुझे 'महात्मा' कहते हैं। परन्तु मैं यह बता देना चाहता हूँ कि मैं अपने को महात्मा नहीं समझता। मैं तो एक साधारण आदमी हूँ। मेरा हृदय गरीबों और उनके कष्टों के लिये रोता है। मैं तो समस्त मनुष्य जाति का एक तुच्छ सेवक हूँ।'

गांधीजी ने आज प्रथम बार सभा में सार्वजनिक रूप से यह घोषित किया कि आप पैदल गाँव-गाँव जाकर अहिंसा का सन्देश सुनाएँगे। आपने कहा कि इस वृद्धावस्था में मुझमें इतनी ताकत नहीं है कि गाँव-गाँव पैदल जा सकूँ, परन्तु उसके लिये मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि इस कार्य के लिये मुझे वह बल दे।

इस सभा में गान्धीजी ने श्रीआसफअली के अतिरिक्त आजाद हिंद फौज के कर्नल जसवन्त सिंह का भी परिचय श्रोताओं से कराया। कर्नल जसवन्त सिंह नेताजी सुभाष-चन्द्र बोस के साथ विदेशों में काम कर चुके हैं और आप

कर्नल निरंजन सिंह गिल के साथ नोआखाली में शान्ति के लिये काम करने आये हैं।

२० दिसम्बर को गांधीजी को श्रीरामपुर आये एक महीना पूरा हो गया। पहिले आपने यह निश्चय किया था कि श्रीरामपुर में एक महीने रहने के बाद आप गाँव-गाँव पैदल जाने की यात्रा शुरू करेंगे परन्तु दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में आपको देश के सामने उपस्थित इस गंभीर समस्या के सम्बंध में काँग्रेस के उच्च अधिकारियों को परामर्श देना था कि ब्रिटिश मंत्रिदल के ६ दिसम्बर के वक्तव्य को देखते हुए, जिसके द्वारा वह अपनी पूर्व योजना से हट रहा है, अस्थायी सरकार में काँग्रेसी मेम्बर रहें या उसका त्याग कर दें। अतः गांधीजी ने यह निश्चय किया कि इस बीच में काँग्रेस नेताओं का आगमन श्रीरामपुर में हो जाने के बाद नए वर्ष के आरम्भ से आप अपनी यह पैदल यात्रा शुरू करेंगे।

युरोप को अहिन्सा का उपदेश

२१ दिसम्बर को श्रीरामपुर में गांधीजी से एक फ्रेंच पत्रकार श्री रेमंड कर्टियर मिले। श्री कर्टियर पेरिस के "मारिन" नामक पत्र के सम्पादक हैं और संसार का भ्रमण करने निकले हैं। आप आज तीसरे पहर गान्धीजी की एकान्त कुटिया में पधारे।

महात्मा गांधी श्री कर्टियर के आगमन के समय आँख, पेड़ और सिर पर मिट्टी की पट्टी धरे प्राकृतिक चिकित्सा कर रहे थे। आपने इसी अवस्था में श्री कर्टियर का, उनके कुटिया में प्रवेश

करते ही, स्वागत किया और फ्रेंच भाषा में उनका कुशल समाचार पूछा। गान्धीजी को अपनी मातृभाषा फ्रेंच में स्वागत करते देख श्री कर्टियर स्तब्ध रह गए। गान्धीजी ने उन्हें बताया कि उन्होंने अपने स्कूली दिनों में फ्रेंच भाषा सीखा था और उसके बाद अपने बन्दी जीवन में इसका विशद अध्ययन किया था।

श्री कर्टियर के इस प्रश्न का, कि युरोप की वर्तमान परिस्थिति के सम्बंध में आपकी क्या धारणा है? उत्तर देते हुए गान्धीजी ने कहा, 'युरोपवासी मौखिक रूप से शान्ति की चर्चा तो करते रहते हैं किन्तु उनके हृदयों में युद्ध के ही अंकुर विद्यमान रहते हैं। अपने अन्तस्थल से जब तक वे हिंसा को निकाल बाहर न करेंगे तब तक युरोप में शान्ति होना असम्भव है। जब द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ हुआ था तभी मैंने कहा था कि यदि युरोप अपनी गतिविधि परिवर्तित न करेगा तो यही युद्ध एक तृतीय महायुद्ध की प्रस्तावना का रूप धारण कर लेगा।'

श्री कर्टियर ने प्रश्न किया, "हम युरोप वाले, जो कि हिंसा की सन्तान हैं, किस प्रकार अहिंसात्मक हो सकते हैं?"

उत्तर में गांधीजी ने कहा कि यदि युरोपवासी इसी प्रकार अपना क्रम जारी रक्खेंगे तो उनका मिटना अवश्म्भावी है। युरोप में हिटलरवाद का उन्मूलन केवल एक उच्चकोटि के श्रेष्ठ हिटलरवाद से ही तो किया गया है, और इस शृंखला का टूटना सर्वथा असम्भव है। यह क्रम इसी भांति जारी रहेगा।

श्री कर्टियर का अन्तिम प्रश्न था, "अहिंसा द्वारा हिटलरवाद को कैसे नष्ट किया जा सकता है?"

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए गांधीजी ने कहा कि यही तो हम सब को ढूंढ़ना है, अन्यथा यदि कोई राष्ट्र हिटलरवादी हिंसा को नष्ट करने के लिये श्रेष्ठ हिटलरवाद का आश्रय लेगा तो छोटे राष्ट्रों के जीवित रहने की बहुत कम सम्भावना रहेगी। एक राष्ट्र तभी जीवित रह सकेगा जब वह अपने प्राणों की—सम्मान की नहीं—बाजी लगाकर व्यक्तिगत रूप से हिटलरवाद द्वारा प्रभावित होने से इन्कार कर दे। ऐसी ही अहिंसा बड़ी से बड़ी विपत्तियों से रक्षा कर सकती है। यदि हम इस प्रकार से साहसी न बनेंगे और इस प्रकार का बल प्रदर्शित न करेंगे, तो संसार में लोकतंत्रवाद का पनपना सर्वथा असंभव है।

नोआखाली में गान्धीजी की शान्ति योजना

गांधीजी ने नोआखाली में शान्ति स्थापित करने की एक विशेष योजना बनायी है। यह योजना क्या है, इसे प्रथम बार साधिकार रूप से गांधीजी के बड़े पुराने विश्वास-पात्र और कृपा-भाजन चरखा संघ के प्रधान कार्यकर्ता श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त ने, जो कि बंगाल के खादी प्रतिष्ठान के संचालक भी हैं एसोसिएटेड प्रेस के अमेरिकन सम्बाददाता को बताया। यह योजना श्रीरामपुर से लगाकर २० मील के दायरे में लागू होगी और इसे गांधीजी तथा उनके दल के लोग नोआखाली में अमल में लाएँगे। श्रीदास गुप्त ने बताया कि इस योजना के द्वारा हिन्दुओं में साहस और आत्म-निर्भरता उत्पन्न की जायगी, क्योंकि गांधीजी का यह विश्वास है कि शस्त्रों और शक्ति-बल

से इस प्रकार की वीरता तथा साहस प्राप्त नहीं होता। साथ ही मुसलमानों में भी योजना के अनुसार काम होगा और उन्हें सच्चा मुसलमान बनने को प्रोत्साहित किया जायगा, क्योंकि कुरान के वचनों के अनुसार सच्चा मुसलमान वह है, जो पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करे और अपनी गलतियों तथा दुष्कर्मों के लिये पश्चाताप करे। इस बात का प्रचार किया जायगा कि हिन्दू और मुसलमान अपने-अपने धर्म पर दृढ़ रहते हुए भी साथ मिलकर काम कर सकें, जैसा कि खिलाफत आन्दोलन के दिनों में हुआ था और हिन्दू-मुसलमानों ने मिलकर राजनीतिक क्षेत्र में काम किया था। वास्तविक शान्ति स्थापित करने के लिये यह आवश्यक है कि हिन्दू अपने अन्दर से मुसलमानों का भय निकाल दें और मुसलमान हिन्दुओं के प्रति मित्रता का व्यवहार करें। यह तभी हो सकता है, जब मुसलमान लोग अपने सह-धर्मियों द्वारा की गयी गलतियों के लिये पश्चाताप करें। अतः शान्ति-स्थापना का काम करने वाले कर्यकर्ताओं को अपने प्रचार द्वारा मुसलमानों की जमी हुई इस गलत धारणा को दूर करना होगा कि वे इन कृत्यों द्वारा वे मुस्लिम लीग की अज्ञाओं का पालन कर रहे हैं। कार्य-कर्त्ता गण इस योजना के अनुसार गाँवों को ही अपना घर बनायेंगे और मुस्लिम उपद्रियों के प्रति प्रेम-भाव दिखाते हुए काम करेंगे वे अपनी सचाई तथा प्रेम के द्वारा उन्हें अपनी ओर आकर्षित करेंगे।

श्रीदास गुप्त ने यह भी बताया कि इस उद्देश्य से अब तक

जो काम हुआ है, उसका प्रभाव यह पड़ा है कि हिन्दू लोग अब उतने भयभीत नहीं हैं, निर्भय होकर चलते-फिरते हैं और मुसलमानों में भी हिन्दुओं के प्रति उतना क्रोध नहीं है।

नेताओं का महत्वपूर्ण निर्णय

२७ दिसम्बर १९४६ को राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी, पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस के प्रधान मंत्री श्री शङ्करराव देव देश की अत्यन्त महत्वपूर्ण समस्या पर गान्धीजी की सलाह लेने के लिये श्रीरामपुर पहुँचे। इन नेताओं ने दो दिन तक गान्धीजी से यह परामर्श किया कि ब्रिटिश सरकार के ६ दिसम्बर के वक्तव्य को स्वीकार किया जाय या नहीं। गान्धीजी ने इस विकट समस्या का तत्काल हल कर दिया। यह हल एक प्रस्ताव के रूप में रखा गया, जो शीघ्र ही होने वाली अ० भा० कांग्रेस कमेटी के लिए था और वही प्रस्ताव आगे चलकर कमेटी में पास भी हुआ। प्रस्ताव में यह निश्चय किया गया कि ब्रिटिश सरकार का उक्त वक्तव्य स्वीकार कर लिया जाय। मंत्रिदल की विधान योजना के प्रान्तों की गुटबन्दी के सम्बन्ध में यह निश्चय हुआ कि आसाम और सीमा प्रान्त गुट में शामिल हों, परन्तु आगे यदि यह देखा जाय कि बहुमत दल के शासन में अल्प-संख्यकों के प्रति उचित व्यवहार नहीं होता और जबरदस्ती मनमाना विधान लादा जाता है, तो उस दशा में ये प्रान्त गुट से निकल आवें।

२८ दिसम्बर को आसाम के प्रधान मंत्री श्री गोपीनाथ

बार्दोलोई, रसद मंत्री श्री वैद्यनाथ मुकर्जी, आसाम प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के मंत्री श्री सिद्धिनाथ शर्मा तथा आसाम पार्लमेंटरी पार्टी के श्री महेन्द्र मोहन चौधरी भी आसाम के गुटबन्दी में शामिल होने के प्रश्न पर गान्धीजी से सलाह लेने के लिये श्रीरामपुर आये और उपरोक्त आशय की सलाह गान्धीजी ने इन नेताओं को भी दी।

नोआखाली में गान्धीजी के शान्ति स्थापना और शरणार्थियों को फिर बसाने के प्रयत्न के सम्बंध में श्री बार्दोलोई ने एसोसिएटेड प्रेस के प्रतिनिधि से कहा कि ऐसा आश्चर्यजनक प्रयोग और कार्य किसी भी देश में नहीं किया गया, जैसा कि गांधीजी यहाँ कर रहे हैं।

गान्धीजी ने आज की प्रार्थना सभा में पंडित नेहरू, आचार्य कृपलानी आदि का परिचय उपस्थित जन-समूह से कराया और कहा कि ये लोग बड़े महत्वपूर्ण प्रश्नों पर परामर्श करने के लिये यहाँ आये हैं, जो किसी एक सम्प्रदाय के लिये नहीं बल्कि देश के सभी सम्प्रदायों के हित के लिये है। आपने कहा कि कांग्रेस हिन्दू संस्था नहीं बल्कि वह सभी सम्प्रदायों की संस्था है।

नेताओं के आगमन की बात सुनकर श्रीरामपुर में जनता की अपार भीड़ हुई जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों भारी संख्या में थे। नेहरूजी आदि नेताओं को देखने के लिये बड़ी दूर-दूर से लोगों ने सवेरे से ही आना शुरू किया था। गान्धीजी के स्थान के चारों ओर बाड़ा बाँध दिया गया था। परन्तु भीड़ इतनी अधिक हुई और लोगों में इतना अधिक उत्साह नेताओं

के दर्शन के लिये था कि बाड़ा टूट गया। यह देखकर नेहरू जी गान्धीजी की कुटिया के बाहर निकल आये और भीड़ के बीच में आकर खड़े हो गये। सब लोगों ने, हिन्दुओं और मुसलमानों ने बड़ी हर्ष ध्वनि की, जिस पर नेहरूजी ने मुस्कराते हुए अभिवादन किया।

३० दिसम्बर को नेतागण गान्धीजी से विदा लेकर श्रीरामपुर से चले गये और गान्धीजी ने भी गाँव-गाँव की पैदल यात्रा के लिये श्रीरामपुर से प्रस्थान करने की तैयारी शुरू कर दी।

—::※::—

चण्डीपुर

[२ से ६ जनवरी तक]

मार्ग में मुस्लिम भीड़ों द्वारा स्वागत

नव-वर्ष के द्वितीय दिन अर्थात २ जनवरी सन् १९४७ को
ात्मा गान्धी ने अपनी पैदल यात्रा आरम्भ की। वर्तमान युग
अद्वितीय शान्ति-दूत का केवल नोआखाली के ही लिये नहीं
न् अप्रत्यक्ष रूप से समस्त भारत के लिये हिन्दू मुस्लिम एकता
निस्सन्देह यह परम अद्भुत और अभूतपूर्व प्रयोग था, जिसे
होंने एक गाँव से दूसरे गाँव पैदल चलकर आरम्भ किया।
रामपुर से आपने ठीक साढ़े सात बजे प्रातःकाल प्रस्थान
या। श्रीरामपुर के निवासी हिन्दू और मुसमान पिछले दो-
न दिन से निर्जीव से होने लगे थे और सभी को यह कलक थी
शान्ति का सच्चा दूत और प्रेम तथा दया का अनन्य सन्देह-
हक अब हमारे बीच से जा रहा है। पहिले ही से सर्वत्र
ासी छायी थी, सभी लोग दुखी थे। अयोध्या से राम के वन-
मन का सा दृश्य उपस्थित था।

प्रातःकाल जिस समय गान्धीजी एक हाथ में अपनी लम्बी
ठी लेकर और दूसरा हाथ सहारे के लिये डा० सुशीला नायर
कन्धे पर रखकर यात्रा के लिये उस कुटुम्ब के प्राणियों से

विदाई की आज्ञा लेने को खड़े हुए, उस समय घर के लोगों की ही नहीं समस्त ग्रामवासियों की आँखें प्रेमाश्रु से छलछला आयीं। गांधीजी भी प्रेमोद्रेक से रहित नहीं थे जिस स्थान पर डेढ़ महीने तक रहे थे और वहाँ के निवासियों को अपने प्रेम-पाश में आवद्ध कर लिया था, उसे छोड़ने में वे भी पीड़ा का अनुभव कर रहे थे, किन्तु जिस महान उद्देश्य को लेकर वे निकले थे, उसे पूरा करना ही था, लोगों को आश्वासन देकर चल पड़े।

श्रीरामपुर से चलकर प्रथम निवास आपने कुछ मील दूर चंडीपुर नामक स्थान में करने का निश्चय किया था। सुपाड़ी के वृक्षों की कतार तथा छोटे बगीचों के बीच से होकर चले। प्रथम दिन की यात्रा में गांधीजी के साथ डा० राममनोहर लोहिया, डा सत्तीशदास गुप्त, श्री देवनाथदास, सरदार जीवन सिंह, डा० मनोरंजन चौधरी, श्री अरुणदास गुप्त तथा मि० एम० ए० अब्दुल्ला सुपरिंटेंडेंट पुलिस थे। इसके अतिरिक्त लगभग १०० आदमियों की एक भीड़ भी गांधीजी के पीछे चली, हालांकि गान्धीजी की इच्छा यही थी कि आप अकेले ही यात्रा करेंगे।

गान्धीजी जब चल रहे थे, तो रास्ते में हिन्दू और मुसलमान ग्रामीण अपने-अपने घरों से बाहर निकलकर गान्धीजी के दर्शन के लिये खड़े थे। इनमें से अनेक लोग गान्धीजी के साथ भी हो लिये और चंडीपुर तक गये।

गान्धीजी चंडीपुर चले, तो सीधे रास्ते से न जाकर एक

दूसरे मार्ग पर घूम पड़े। क्योंकि उस रास्ते पर भूतपूर्व नजरबन्द कैदी श्री अनुकूलचन्द्र चक्रवर्ती के घर जाना था, जिसे उपद्रियों ने बिल्कुल विध्वस्त कर दिया था। इस मार्ग पर एक दूसरे मकान से एक मुसलमान सज्जन निकले और गांधीजी को उन्होंने कुछ सन्तरे श्रद्धापूर्वक भेंट किये। गान्धीजी ने अपनी सहज मुस्कान के साथ उसे स्वीकार किया और उसे अपने पीछे चलने वालों को बाँट दिया।

अनुकूल बाबू के मकान पर पहुँचकर महात्माजी कुछ देर तक रुके और सन्तरे का रस ग्रहण किया। यहाँ से चलने पर गान्धीजी शिवपुर गाँव के प्रतिष्ठित मौलवी फजलुलहक के मकान पर गये। मौलवी फजलुलहक ने एक दिन पहिले ही श्रीरामपुर में गांधीजी से मिलकर यह प्रार्थना की थी कि चंडीपुर जाते समय आप मेरे गरीबखाने पर भी आने की कृपा कीजिये। अतः गान्धीजी यहाँ भी कुछ देर रुके। मौलवी साहब के मकान के बाहरी आँगन में गान्धीजी बैठाये गये। यहाँ पर बहुत से मुसलमान गान्धीजी के स्वागत के लिये पहिले ही से उपस्थित थे। बहुतेरे बेचारे कुछ देर से आने के कारण गान्धीजी के दर्शन से वंचित भी रह गये। क्योंकि गान्धीजी यहाँ अधिक समय तक नहीं ठहरे थे। मौलवी साहब ने एक ट्रे में केले, सन्तरे इत्यादि फल लाकर भेंट किये। गान्धीजी ने इन फलों में से कुछ तो दर्शन के लिये आये हुए लड़कों को दे दिये और कुछ अपने साथ चंडीपुर लेते गये। वहाँ से गान्धीजी फिर सीधे चंडीपुर गये। रास्ते में एक

नया बाजार मिला, जिसे मुसलमानों ने हिन्दू व्यापारियों को बायकाट करने के लिये कई मौलवियों के कहने से जारी किया था।

२ जनवरी को चंडीपुर पहुँचने पर गान्धीजी के स्वागत में ग्राम-सेवा-सङ्घ के लोगों ने 'रामधुन' गाना आरम्भ किया और तब तक उसे गाते रहे, जब तक गान्धीजी अपने खेमें में प्रविष्ट नहीं हुए थे। यहाँ गान्धीजी नोआखाली के प्रमुख कॉंग्रेस कार्यकर्ता श्री अवनी मजूमदार के यहाँ ठहरे।

यहाँ पर चंडीपुर का संक्षिप्त परिचय भी दे देना आवश्यक जान पड़ता है। चंडीपुर रामगंज थाने के पश्चिम में है। पिछले उपद्रव के पहिले यहाँ के निवासियों में ३,५३५ हिन्दू थे और ३,९५६ मुसलमान। परन्तु अब उपद्रव के बाद यहाँ केवल ५०५ हिन्दू कुटुम्ब रह गये हैं। जिनमें से ३०० के मकान जला दिये गये थे और लूटे तो सभी गये थे।

गान्धीजी इस तरफ प्रायः २० साल हुए एक बार आये थे जब कि गौहाटी कांग्रेस से लौटते समय उन्हीं दिनों यहाँ श्री सतीशदास गुप्त द्वारा स्थापित वतमान खादी प्रतिष्ठान का आपने उद्घाटन किया था।

गांधीजी की इस यात्रा की तुलना उनके सुप्रसिद्ध डण्डी मार्च से की जाती है, किन्तु कुछ दृष्टियों में इस यात्रा को उस डण्डी मार्च से भी अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता है, क्योंकि जैसा कि स्वयं गान्धीजी ने कल प्रार्थना के समय अपने भाषण में कहा था, डण्डी की यात्रा में गान्धीजी के साथ हजारों आदमी साथ

थे और यात्रा की कठिनाइयों में सभी ने भाग किया था, परन्तु इस यात्रा में आपने किसी को साथ रहने से मना किया है और आपके साथ केवल चार आदमी रहेंगे। इसके अतिरिक्त नोआखाली के गाँवों की पैदल यात्रा एक आश्रमवासी के कथनानुसार खतरे से भी खाली नहीं है, क्योंकि जिन गाँवों में गांधीजी जा रहे हैं, वहाँ के लोगों का रुख बहुत मित्रतापूर्ण नहीं समझा जाता और आस-पास का वातावरण भी पूर्णतया अनुकूल नहीं है। एक बहुत बड़ा प्रश्न यह भी है कि यदि मार्ग में कोई दुर्घटना हो ही गया तो क्या साथ के लोगों की सद्-भावना उस संकट का सामना कर सकेगी। परन्तु गांधीजी मनुष्य की इसी सद्भावना पर आशा और विश्वास रखकर नोआखाली की यात्रा के लिये निकले हैं। निस्सन्देह गांधीजी के जीवन का यह सबसे बड़ा प्रयोग है। इसमें अच्छे और बुरे लोगों; साहस और कायरता तथा मानवता और पशुता के मुकाबिले का प्रश्न है।

इस यात्रा में महात्मा गांधी के साथ चलने वाले चार व्यक्तियों में आप के दुभाषिए जो निर्मल बोस, स्टेनोग्राफर श्री परशुराम, फुटकर कामों में सहायता देने के लिये एक दक्षिणी सज्जन श्री रामचन्द्र और किसी सुविधाओं के लिये आपकी पौत्री कुमारी मनु गांधी थीं।

गांधीजी ने २ जनवरी से अपनी गाँव-गाँव पैदल यात्रा के प्रोग्राम की सूचना बङ्गाल के प्रधान मंत्री मि० सुहरावर्दी को एक पत्र में दे दी थी और उस पर उनकी राय भी माँगी थी। मि०

सुहरावर्दी ने गांधीजी को इस यात्रा में अपना पूरा सहयोग देने का आश्वसन दिया था और यात्रा की सफलता के लिये शुभकामना भी प्रकट की थी।

श्रीरामपुर में गांधीजी के डेढ़ महीने रहने का क्या प्रभाव पड़ा इस सम्बन्ध में आप के साथ रहने वाले 'हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड' के प्रतिनिधि का कहना है कि गांधीजी के यहाँ आने और रहने का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखायी देता है। अपने को केवल मानवता की दया के भरोसे पर छोड़ कर गांधीजी जिस प्रकार निःस्वार्थ-भाव से यहाँ काम कर रहे हैं और कष्ट उठा रहे हैं, उसका प्रभाव मुसलमानों और हिन्दुओं दोनों पर पड़ा है। आपके निरन्तर उपदेशों से हिन्दुओं में निर्भीकता और मुसलमानों में हिन्दुओं के प्रति विरोध की भवना के त्याग की बात आ गयी है। अब लोग स्वतन्त्रता-पूर्वक बिना किसी भय के खतरनाक स्थानों में भी जाने आने लगे हैं और जहाँ लोग रात में नहीं बसते थे, अब रात में भी आकर रहने लगे हैं। प्रतिनिध के पूछने पर मुसलमानों ने कहा कि गांधीजी को अपने बीच पाकर हमें बड़ी खुशी हुई थी। वे बड़े न्यायी पुरुष हैं और उनका यहाँ रहना दोनों सम्प्रदायों के लिये लाभकर है। साथ ही मुसलमानों ने अपने सहधर्मियों द्वारा किए गए अत्याचारों की निन्दा भी की।

चंडीपुर में प्रथम भाषण

चंडीपुर के लिये प्रस्थान करते समय गान्धीजी का प्रतिदिन का कार्य-क्रम इस प्रकार बनाया गया था कि आप एक गाँव से

प्रातःकाल ८ बजे प्रस्थान करेंगे और डेढ़ घंटे में लगभग ३ मील चलकर दूसरे गाँव ९॥ बजे पहुँचेंगे। दूसरे गाँव में पहुँचकर आप मालिश कराएँगे और दोपहर में भोजन करेंगे। भोजन के बाद आध घंटे विश्राम करेंगे और फिर कुछ देर चर्खा चलाएँगे, जिसमें ग्रामीण लोग भी भाग लेंगे। चरखा कातने के बाद ४ बजे कुछ जल-पान करेंगे, जिसके आध घंटे बाद प्रार्थना शुरू होगी। प्रार्थना के बाद दो घंटे प्रतिदिन आप ग्रामीणों के घरों को जाकर उनका हाल-चाल दर्याप्त करेंगे और उन्हें यह अवसर देंगे कि वे अपनी दशाएँ स्वतन्त्रता पूर्वक गांधीजी को बता सकें। इसके बाद गांधीजी अपनी चलती-फिरती कुटिया में आकर भोजन और विश्राम करेंगे। खादी प्रतिष्ठान के श्री सतीशचन्द्र दास गुप्त ने गान्धीजी के लिये विशेष रूप से यह चलती-फिरती कुटिया बनायी है, जिसमें पहिए लगा दी गयी हैं, जो एक गाँव से दूसरे गाँव को आसानी से जा सकती हैं और जिसमें गांधीजी के आराम की आवश्यक सुविधाएँ रखी गयी हैं।

गान्धीजी ने ३ जनवरी को चंडीपुर की प्रथम प्रार्थना के समय अपने भाषण में कहा कि अभी तक लोगों ने जिस प्रकार की अहिन्सा का अनुसरण किया है, वह निर्बलों की अहिंसा है, परन्तु अब आप चाहते हैं कि लोग बलवानों की अहिन्सा का अनुसरण करें। आपने कहा कि नोआखाली में मेरा उद्देश्य यह है कि हिन्दुओं और मुसलमानों में मित्रता स्थापित हो। मेरा अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि एक सम्प्रदाय का दूसरे सम्प्रदाय के विरुद्ध सङ्गठन किया जाय ताकि वह दूसरे पर विजय

प्राप्त करे। यदि यह प्रयोग और उद्देश्य सफल हुआ तो इससे उत्तम वातारण उपस्थित होगा जिससे दोनों सम्प्रदायों को मित्रता पूर्वक रहने में सहायता मिलेगी। आपने कहा कि जब हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के प्रति भय और सन्देह की भावना अपने दिलों से दूर करेंगे, तभी वास्तविक एकता होगी। एकता में मजहब कोई बाधा नहीं डालता। दोनों अपने-अपने मजहब पर कायम रहते हुए भाई-भाई की तरह रह सकते हैं।

गान्धीजी ने आगे कहा कि पूर्वी बङ्गाल में पहिले सोना बरसता था, पर बदकिस्मती से अब वह दशा नहीं है। हमारे देश में अमीर लोग और अधिक अमीर होते जा रहे हैं और गरीब अधिकाधिक गरीब होते जाते हैं। यह स्थिति ऐसी नहीं है जो हमारे ऊपर बाहर से लादी गयी हो। इस शैतानी दशा का कोई नैतिक औचित्य नहीं है। व्यक्तियों का व्यवहार उतना बुरा नहीं है। परन्तु सामाजिक व्यवस्था शैतानी बन गयी है। परन्तु व्यक्तियों से ही समाज का निर्माण होता है, अतः इस दशा का सुधार व्यक्तियों द्वारा ही अधिक अच्छा व्यवहार किया जा सकता है। समाज का सङ्गठन समानता और भाई-चारे की भावना के आधार पर होना चाहिये।

गान्धीजी ने इस बात पर भी जोर दिया कि देश में निकट भविष्य में जो नया शासन और नयी सरकार की स्थापना होने जा रही है, उसमें पुरानी प्रणाली के दोष नहीं रहने चाहिये। हिन्दू और मुसलमान इस समय अपने को एक दूसरे के विरुद्ध पाते हैं, पर यदि दोनों अपने ग्राम्य जीवन के पुनर्संगठन के

कार्य में अपने को लगा दें तथा अपने घरेलू उद्योग धन्धे को बढ़ाकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधारें, तो आर्थिक उन्नति के समान कार्य में सब लग जायँगे और उससे उनमें सहयोग तथा एकता की वृद्धि होगी।

शान्ति स्थापना और एकता के कार्य में लगे हुए कार्य-कर्ताओं को सलाह देते हुए गाँधीजी ने कहा कि कार्य-कर्ताओं को अनेक खतरों का सामना करना पड़ा है। परन्तु उन्हें अपने हृदयों से मृत्यु का भय निकाल देना चाहिये और अपने विरोधियों के दिलों को अपने वश में करना चाहिये। इस प्रयत्न में सम्भव है कुछ कार्य-कर्ताओं को अपनी जान देना पड़े, पर यदि कार्य-कर्ता-गण प्रेम और साहस दिखाते ही रहे, तो विरोधी का दिल पिघल ही जायगा और अन्त में वे भी वश में हो जायंगे। यह बात देखने में चाहे जितनी असम्भव मालूम हो, पर सफलता इसी से मिलेगी, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। आपने कहा कि केवल कार्य-कर्ताओं को ही नहीं समस्त ग्रामीणों को भी मानव समाज की सेवा में लगना चाहिये और अपने जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिये।

जले हुए घरों का निरीक्षण

प्रार्थना के बाद गांधीजी चंडीपुर के लगभग एक मील दूर चंगीर गाँव गये। यहाँ आपने पिछले उपद्रवों में जलाये गये चार मकान देखे। आप श्रीरामचंद्र पटवारी के मकान पर गये, जहाँ कि सहायता का एक केन्द्र खोला गया है और यहीं डा० सुशीला नायर रहती हैं।

गांधीजी चंडीपुर से जब चंगीर गाँव को चले थे, तो कुछ मुसलमान भी साथ में हो लिये थे। गाँव से जब लौटने लगे, तो साथ के एक मुसलमान सज्जन ने गान्धीजी से अपने घर चलने का अनुरोध किया। गांधीजी ने कहा कि मैं किसी दिन आपके मकान आऊँगा और वहीं प्रार्थना करूँगा।

आज सवेरे टहलने के लिये निकलने पर गांधीजी ने रास्ते में कई जलाये गये मकान देखे इनमें से कुछ मकान तो अभी तक खाली पड़े हैं, पर शेष मकानों के लोग वापस आ गये हैं और फिर से झोंपड़े बनवा रहे हैं। रास्ते में गांधीजी एक हरिजन के मकान पर भी गये। हरिजन ने माला पहनाकर आपका स्वागत किया। पहिले तो हरिजन माला पहिनाने में कुछ हिचका, पर गांधीजी के आश्वासन देने पर उसे साहस हुआ और बढ़कर उसने माला पहिनायी। घर की स्त्रियों ने भी गांधीजी का स्वागत सत्कार किया।

चँडीपुर में आने पर स्थानीय लोगों ने गांधीजी के सामने गाँव की रिपोर्ट पेश की जिसमें बताया गया था कि गाँवों के ७५ प्रतिशत हिन्दू गाँव छोड़कर भाग गये हैं और कलकत्ता, कोमिल्ला, अगर तला, आसाम तथा अन्य स्थानों में जाकर बसे हैं। यहाँ एक महीने से एक शरण गृह शरणार्थियों के लिए खोला गय था जिसमें ४००० शरणार्थी रहते थे। अब बहुतेरे लोग अपने-अपने गाँवों को वापस चले गए हैं और इस समय केवल ४५० आदमी रह गए हैं।

यहाँ पर "चँडीपुर-चँगीर गाँव" ग्राम सेवा-संघ नामक एक

संस्था एकता की स्थापना तथा रचनात्मक कार्य-क्रम के लिए गांधीजी के आदेश से खोली गयी है। जिसके प्रबन्धक श्री सुरेन बोस नामक एक सज्जन हैं जो पहिले से ही गांधीजी के अनुयायी हैं। इस संस्था द्वारा गांधीजी के १८ बातों के रचनात्मक कार्य-क्रम का पालन होता है, जिसमें छुआछूत दूर करना, गाँवों की सफाई, ग्रामीणों को धंधों द्वारा सहायता पहुँचाना, ग्रामीणों के झगड़ों और समस्याओं का हल करना इत्यादि है, पर हिन्दू-मुस्लिम एकता की ओर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है।

स्त्रियों को साहस और आत्म निर्भरता का उपदेश

३ जनवरी को गांधीजी ने अपने निवास स्थान पर स्त्रियों की एक सभा बुलायी और उसमें स्त्रियों को यह उपदेश दिया कि वे ईश्वर पर और अपनी शक्ति पर निर्भर रहें किसी दूसरे के भरोसे न रहें। अपने में साहस लाएँ और आत्म-निर्भर बनें। यदि स्त्रियाँ डरेंगी, तो उपद्रवियों को भी उनके ऊपर आक्रमण करने का साहस होगा।

गांधीजी ने स्त्रियों को छुआछूत भी त्यागने का उपदेश दिया और कहा कि यदि अब भी आप लोग अछूतों को अपने से दूर रखेंगी, तो और अधिक संकटों का सामना आप लोगों को करना होगा। प्रत्येक सवर्ण हिन्दू को चाहिये कि प्रतिदिन वह किसी हरिजन को अपने यहाँ बुलाए और उसके साथ भोजन करे। यदि आप लोग हरिजनों को बुलाकर उन्हें भोजन नहीं

करा सकतीं, तो उन्हें अपने घर बुलाकर और उनका छुआ हुआ भोजन तथा जल ग्रहण करें। यदि आप ऐसा करेंगी, तो नकली जातीय बन्धन द्वारा जो खाई जनता की विभिन्न श्रेणियों में पड़ गयी हैं, आगे चलकर वह पट जायगी और सभी जातियों के बीच एकता हो जायगी। यदि इस युक्ति द्वारा लोग अपने पापों को नहीं धो बहाते, तो सभी पर इससे भी अधिक भयङ्कर संकट आवेगा।

तमालताल के राम कृष्ण आश्रम में भाषण करते हुए गांधी जी ने लोगों को अपने में साहस और अकर्मण्यता का त्याग कर अधिक से अधिक अपने को ग्राम पुनर्निर्माण में लगाने पर जोर दिया। आपने कहा कि मैं अपनी यात्रा को सफल समझूँगा यदि मैं यह देखूँगा कि लोग ग्राम पुनर्निर्माण के कार्य में लग गए हैं। सम्भव है कि ग्रामीण लोग यह समझें कि वे व्यक्तिगत रूप से क्या कर सकते हैं सिवा इसके कि थोड़ा काम कर लें, पर नहीं; यदि वे संगठितरूप से काम करें, तो बहुत काम हो सकता है।

आज प्रातःकाल टहलते समय गांधीजी आध दर्जन मकानों पर गए, जिनमें दो मकान दलित जाति के लोगों के थे। उन घरों पर गाधीजी का स्वागत हरिजन ने किया।

कल गांधीजी ६ मील तक गए थे, तीन मील सबेरे और तीन मील शाम को। संध्या समय आप को ऊबड़-खाबड़ रास्ते से तथा धान के खेतों से होकर जाना पड़ा और कुछ खतरनाक पुलों पर से भी जाना पड़ा। परन्तु यह कठिन मार्ग आपने

सरलतापूर्वक तय किया और कोई थकावट नहीं मालूम हुई! इस यात्रा के बाद आपको अच्छी नींद आयी। श्री सुरेन बोस गांधीजी को कुछ ध्वस्त मकानों में ले गये और वहां के विनाश तथा लोगों के कष्टों का विवरण सुनाया।

गांधीजी यहाँ कोई बाहरी आदमी या पत्र-सम्वाद-दाताओं से नहीं मिले। आपने अपना सारा समय ग्रामीणों से मिलने और उनके कष्टों को सुनने में व्यतीत किया। ग्रामीण स्त्रियों के भी कष्टों को आप सुनते थे और उनके प्रश्नों के उत्तर देते थे।

बिहार सरकार के प्रतिनिधियों से मुलाकात

चंडीपुर में ४ जनवरी को तीसरे पहर गांधीजी से बिहार-सरकार द्वारा भेजे हुए प्रतिनिधिगण मिले और आपके सामने एक रिपोर्ट उपस्थित की। रिपोर्ट में यह बताया गया था कि मुस्लिम लीग के वालंटियर लोग बिहार के मुसलमानों में इस बात का प्रचार कर रहे हैं कि बिहार के शरणार्थी मुसलमान बङ्गाल के बर्दवान तथा अन्य पश्चिम जिलों में चल कर बसें, जहाँ बङ्गाल सरकार उन्हें रहने के लिये मुफ्त जमीन और अन्य सब सुविधाएँ देगी। यह भी बताया गया कि बङ्गाल मुस्लिम लीग ने बिहार मुस्लिम लीग के पास इस आशय का प्रस्ताव भेजा है और मुस्लिम लीगी वालंटियर बिहारी मुसलमानों को बङ्गाल ले जाने के लिये हर तरह से भड़काते हैं। कितने ही बिहारी मुस्लिम शरणार्थी बङ्गाल को चले भी जा रहे हैं।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि ५ नवम्बर से बिहार में कोई भी घटना नहीं हुई और बिहार सरकार यह आशा कर रही थी कि शरणार्थी लोग अपने गाँवों में वापस आ जायेंगे परन्तु लीगी प्रचारकों द्वारा भड़काने और तरह-तरह की शरारत पूर्ण अफवाहें फैलाने के कारण शरणार्थियों का वापस आना बन्द होगया है।

रिपोर्ट में यह विवरण भी दिया गया है कि बिहार सरकार मुस्लिम शरणार्थियों की सहायता के लिये क्या-क्या कार्य कर रही है सरकार ने बराबर यह आश्वासन शरणार्थियों को दिया है कि उनके पालन-पोषण तथा उन्हें फिर से बसाने का सब खर्च बिहार सरकार देगी। सरकार ने शुरू में शरणार्थियों को राशन दिये और यह काम मुसलमानों में विश्वास जमाने के लिये मुस्लिम लीगी संस्थाओं की मार्फत कराया गया, जिसके लिये लीगी कार्यकर्त्ता बड़ी मुश्किल से राजी हुए थे। लीगियों ने बड़ी कठिनायी और बहुत अनुनय-विनय के बाद शरणार्थियों को पटना के सरकारी कैम्प में आने दिया। सरकारी कैम्प में सहायता का काम बड़ी उच्चता से होता है। सब लोगों को दिन में दो बार पूरा भोजन दिया जाता है और पहिनने के लिये कपड़ा तथा कम्बल भी दिये गये हैं। इसके साथ ही शरणार्थियों की दवा और स्वास्थ्य का पूरा प्रबन्ध है। रिपोर्ट में विस्तार के साथ बताया गया है कि बिहार सरकार ने शरणार्थियों को अपने गाँवों में लाने के लिये उनके वास्ते सवारियों, लारियों आदि का यथेष्ट प्रबन्ध किया है। ४०,००० रु० का अन्न शरणार्थियों को

दिया गया, २५,००० कम्बल, १८,९०२ साड़ियाँ, ७,५३४ कुरते, ४,३५० पायजामे और २०,००० कमीजें तथा अन्य कपड़े, मुफ्त दिये गये।

महात्मा गांधी से बङ्गाल आजाद हिंद फौज के शान्ति-कमेटी के मंत्री श्री देवनाथ दास आज मिले। आप हेमचर में पुनर्निर्माण का काम कर रहे हैं। आपने गांधीजी से आजाद हिंद फौज वालों के लिये सन्देश माँगा। गान्धीजी ने सन्देश देते हुए कहा कि—'मेरा सन्देश आजाद हिंद फौज वालों को यही है कि वे देश की सेवा करें और आवश्यकता हो, तो उस के लिये जान भी दे दें। यदि वे यह बात सच्चे दिल से करेंगे, तो वे नेताजी सुभाष का असली काम पूरा करेंगे।'

गांधीजी ने चङ्गीर गाँव के स्कूल का निरीक्षण किया। स्कूल को थोड़ी सरकारी सहायता भी मिलती है। स्कूल में पढ़ाये जाने वाले विषयों के सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने के बाद गांधीजी ने कहा कि लड़कों को दस्तकारी भी सिखायी जानी चाहिये। आपने स्कूल में नयी तालीम के अनुसार शिक्षा देने को कहा, जिसमें दस्तकारी भी सिखायी जाती है। गान्धीजी ने चंडीपुर के स्कूल का भी निरीक्षण किया, जहाँ ४०० शरणार्थी ठहराये गये थे। इसके बाद गान्धीजी ने एक डाक्टर के जलाये गये ध्वस्त मकान को भी देखा। डाक्टर का मकान, दवाखाना सब जलाया और लूटा गया था और डाक्टर अब दाने दाने को मुहताज हो गये हैं।

चंडीपुर में शरणार्थियों का लौटना

चंडीपुर में गान्धीजी के निवास के समय से शरणार्थियों का अपने घरों को वापस आना शुरू हो गया। उनके मकानों को फिर से बनाने के लिये सरकार की ओर से कम मूल्य में सामान दिये जाने लगे। चंडीपुर कस्बे में लगभग १,५०० शरणार्थी गाँवों से आकर बसे थे। इस जिले के ७५ फीसदी हिन्दू अपने घरों से भाग गये थे, जिनमें से १७ फीसदी अब तक वापस आये। सिलहट, अगरतला और कलकत्ते से वापस आने वाले शरणार्थियों को ठहराने के लिये चंडीपुर में एक कैम्प खोला गया है जहाँ शरणार्थी लोग एक दो दिन ठहर कर अपने गाँवों को वापस जाते हैं। शरणार्थियों को फिर से बसाने के काम के लिये बङ्गाल सरकार द्वारा नियुक्त किये गये कमिश्नर मि० नूरन नबी चौधरी दो बार गान्धीजी से मिले और पुनर्निर्माण सम्बंधी कामों की सूचना उन्होंने गान्धीजी को दी।

गैर सरकारी तौर पर दर्याप्त करने से मालूम हुआ कि फरीदगंज में ऐसा कोई शरण-गृह नहीं है, जहाँ प्रतिष्ठित शरणार्थी लोग आकर दो-चार दिनों के लिये ठहर सकें और अपने घरों की मरम्मत होने पर अपने घर वापस जायँ। यह भी कहा गया कि यहाँ अभी तक खाली मकानों से सामानों और पशुओं की चोरियों का होना जारी है और जब तक चोरियाँ बन्द नहीं होती शरणार्थियों को वापस लौटने में भय मालूम होता है। कहा गया कि शरणार्थियों को १४ दिन का जो राशन मिलता है, वह पर्याप्त नहीं है। राशन के अतिरिक्त उन्हें खेती के लिये पशु,

हल तथा अन्य सामान मिलने चाहिये और पेशेवरों को अपना रोजगार जारी करने के लिये रुपये भी मिलने चाहिये। शिक्षण संस्थाएँ फिर खुलनी चाहिये और अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को स्कूल आने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। अध्यापकों को उनका बकाया वेतन तथा विद्यार्थियों को मुफ्त पुस्तकें मिलनी चाहिये।

विहार सरकार के आये हुए प्रतिनिधि, जिनमें विहार सरकार के माल मंत्री श्री के० बी० सहाय तथा असिस्टेंट रिलीफ कमिश्नर भी थे, २४ घंटे रहने के बाद आज चंडीपुर से वापस चले गये। बङ्गाल के प्रधान मंत्री मि० सुहरावर्दी द्वारा गान्धीजी को लिखे गये पत्र पर अपना नोट और विहार के मुस्लिम शरणार्थियों की सहायता तथा फिर से बसाने के सम्बन्ध में विहार सरकार के कार्यों का विवरण विहारी प्रतिनिधि महात्मा गान्धी को दे गये, जिसे गान्धीजी ने मि० सुहरावर्दी के पास भेज दिया।

शरणार्थियों को नेक सलाह

महात्मा गान्धी ने प्रार्थना सभा में भाषण करते हुए अपनी यात्रा के सम्बन्ध में कहा कि मेरी यह यात्रा तीर्थ यात्रा के रूप में है। ठीक उसी तरह जिस तरह से लोग काशी या बद्रीनाथ की यात्रा करते हैं। ईश्वर किसी एक स्थान में नहीं रहता। वह तो प्रत्येक स्थान और प्रत्येक प्राणी में व्याप्त है। यदि कोई व्यक्ति ठीक भावना के साथ तीर्थ-यात्रा करता है, तो वह अधिकाधिक पवित्र होता है।

शरणार्थियों को सम्बोधित करते हुए गान्धीजी ने कहा कि क्या हर्ज है यदि आप लोगों के घर जला दिये गये हैं और आपकी सम्पत्ति लूट ली गयी है यदि आपमें यह भावना है कि जो भी सङ्कट आयेगा आप साहस और दृढ़ता के साथ उसका सामना करेंगे और एकबार फिर अपने ही परिश्रम से अपना जीवन फिर आरम्भ करेंगे। शरणार्थियों को साहस के साथ वास्तविकता का सामना करना चाहिये और कुछ दस्तकारी सीखनी चाहिये जिससे कि अपना और अपने कुटुम्बियों का भरण पोषण किया जाय। आपने कहा कि जो लोग परिश्रम नहीं करते और दूसरों की भीख पर निर्भर रहना चाहते हैं, वे चोर हैं। प्रत्येक मनुष्य के पालन-पोषण की जिम्मेदारी उसी पर है। यदि परिश्रम का भय और सङ्कटों का भय हृदय से निकल जाय, तो आक्रमणकारी का सामना बड़ी सफलता-पूर्वक किया जा सकता है और आक्रमणकारी को फिर आक्रमण करने का साहस नहीं होगा। यदि ४० करोड़ लकड़ी के टुकड़ों को मिला दिया जाय, तो ऐसा जबरदस्त पुल तैयार हो सकता है, जिसपर से होकर बड़ी से बड़ी सेना नदी पार कर सकती है। इसी प्रकार यदि हिन्दुस्तान के ४० करोड़ आदमी संगठित होकर एक हो जायँ और परस्पर सहायता तथा सहानुभूति की भावना से काम लें, तो एक नया जीवन देश में आ जाय, जिसमें प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बच्चा समृद्धिशाली हो जाय और स्वाधीनता आकर चरणों पर लोटे।

समस्या का हल—वीरों की अहिंसा

चंडीपुर में ६ जनवरी को "चंडीपुर—चंगीर गाँव ग्राम सेवा-सङ्घ" के एक सदस्य ने गान्धीजी से मिलकर पूछा कि ग्राम सेवा-सङ्घ किस प्रकार से काम करे कि मुसलमानों का आक्रमणकारी रुख बदल जाय और वे कैसे खुश किये जायँ? गान्धीजी ने कहा कि 'खून के बदले खून' का तरीका तो बहुत आजमा लिया गया और अब इस समस्या का हल एकमात्र 'वीरों की अहिंसा' है। आपने कहा कि खुश करने की बात तो फीकी पड़ गयी। आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचाकर खुश करने का प्रयत्न नहीं किया जा सकता। खुश करने का एकमात्र उपाय यह है कि भय बिल्कुल दूर कर दिया जाय और जो उचित बात है वह सब कुछ हानि उठाकर भी की जाय।

यह पूछने पर कि क्या सरकार से नाम मात्र को मिलने वाली सहायता शरणार्थी लोग स्वीकार करें, क्योंकि वह बिलकुल नाकाफी है, गान्धीजी ने कहा कि शरणार्थियों में ईमानदारी के साथ यह पता लगाना चाहिये कि वास्तव में उन्हें कुछ दिनों तक कहीं शरण लेने के लिये कितनी सहायता की आवश्यकता है। यदि उनकी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति प्रस्तावित सरकारी सहायता से नहीं हो सकती, तो वे उसे स्वीकार न करें। मगर फिर भी वे अपने घरों को वापस जायँ, चाहे उसमें उन्हें असुविधा भी हो। इस कार्य को तो साहस और व्यावहारिक दृष्टि से करना ही है।

यह पूछने पर कि क्या हिफाजत के लिये लोगों को संगठन

करना उचित है, गान्धीजी ने कहा कि इस प्रकार के सङ्गठन की बात सोची ही नहीं जा सकती। इसका मतलब तो यह होगा कि सारा देश विरोधी दलों में विभाजित हो जाय और हथियारों के बल पर शान्ति की बात सोची जाय। मनुष्यता के ढङ्ग पर जो बात करने की है, यह है कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह जिस जाति या श्रेणी का हो और चाहे बूढ़ा हो या जवान, अपने अन्दर आन्तरिक बल उत्पन्न कर अपनी रक्षा करे और यह बल ईश्वर से ही प्राप्त हो सकता है।

अपने घर वापस आने वाले शरणार्थियों की हिफाजत के सम्बंध में प्रश्न किये जाने पर महात्मा गांधी ने कहा कि वर्तमान समय में संसार में कोई ऐसी जगह नहीं है जो उपद्रवियों से रहित हो। इसलिये ग्रामीणों को चाहिये कि वे अपनी रक्षा के लिये अपनी ही शक्ति पर निर्भर रहें, परन्तु जस शक्ति से उनकी स्थायी रक्षा होगी, वह उनका आन्तरिक बल, उनके हृदय का बल है। जो ईश्वर को अपना स्वामी और रक्षक समझते हैं। उनके लिये इस बात की चिन्ता नहीं होनी चाहिये कि उपद्रवी लोग क्या उपद्रव करते हैं और उनकी रक्षा का क्या सांसारिक प्रबन्ध नहीं है अथवा यह कि अपराधियों को दंड मिलता है या नहीं। उन्हें तो अपने लिये जो ठीक हो वही करना चाहिये और बाकी सब ईश्वर पर छोड़ देना चाहिये।

गांधीजी ने कहा कि शरणार्थियों के लिये मेरी तत्काल सलाह यह है कि वे साहस के साथ सभी खतरों का सामना करें और अपने घरों को वापस आ जायँ। कोई हर्ज नहीं है अगर खुले

८—अपनी यात्रामें गांधीजी ने जल्दी ही समेट ली जाने वाली झोपड़ियों का उपयोग किया है यह चित्र काजिरखिज़ में उस समय लिया गया था जब ऐसी झोपड़ी खड़ी की जा रही थी।

में रहने या रसद की कमी के कारण उन्हें कुछ कष्ट भी मिले, परन्तु यह प्रयत्न तो किया ही जाना चाहिये।

यह पूछने पर कि यदि सहायता बन्द हो जाय, तो शरणार्थी लोग क्या करें, गान्धीजी ने कहा कि हालांकि व्यक्तिगत रूप से मैं तो यही कहूँगा कि सब लोग चरखा चलावें, परन्तु इस मामले में मैं यह नहीं कहूँगा। इसके बजाय कार्य-कर्ताओं को मैं यह सलाह दूँगा कि वे स्थानीय रूप से जाँचकर यह पता लगावें कि प्रत्येक गाँव में लोगों के लिये कौन पेशा हो सकता है। जब सब बातें मालूम हो जायँगी, तब मैं इस सम्बंध में विस्तृत सलाह दे सकूँगा।

गांधीजी की दिनचर्या

गान्धीजी की दिनचर्या नोआखाली में इस प्रकार है कि आप प्रतिदिन ४ बजे तड़के उठते हैं और सारा दिन पत्र-व्यवहार, लोगों से मिलने, सभाओं में भाषण देने तथा गाँवों के दौरे में व्यतीत करते हैं। आप संसार के सभी भागों के लोगों से महत्व-पूर्ण विषयों पर पत्र-व्यवहार करते हैं, मिलने में बड़े-बड़े नेताओं, राजनीतिज्ञों, प्रान्तों और देशी राज्यों के मंत्रियों से लेकर साधारण से साधारण ग्रामीणों तक से मिलते हैं। वार्ताएँ बड़े महत्वपूर्ण विषयों पर होती हैं। कल एक उड़ाके ने गान्धीजी से मुलाकात की थी, जिसने भारत में हवाई विस्तार के सम्बन्ध में बातें कीं।

गांधीजी भोजन करते और दाढ़ी बनाते समय भी एकाग्र

नहीं होते और इस बीच में भी चिट्ठियाँ और प्रार्थना सभाओं के लिये बंगला भाषा में तैयार किये हुए अपने लिखित भाषणों को सुनते हैं। प्रातःकाल टहलने के लिये जाते समय गांधीजी गाँवों का भी निरीक्षण करते हैं, तीसरे पहर ग्रामीणों को ग्राम-सुधार पर उपदेश देते हैं और शाम को प्रार्थना-सभाओं में भाषण करते हैं। जो प्रतिदिन विभिन्न स्थानों पर होती हैं। प्रार्थना के बाद आप फिर गाँवों को देखने जाते हैं।

प्रातःकाल ४ बजे से १०-११ बजे रात तक गान्धीजी कार्यों में बराबर व्यस्त रहते हैं और विश्राम आपको तभी मिलता है जब सोने के लिये जाते हैं।

—::—
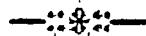
मसीमपुर

[७ जनवरी]

महात्मा गांधी ने आज से गाँव-गाँव का दौरा प्रारम्भ किया। आज से आप प्रतिदिन एक नये गाँव जायँगे और ग्राम-वासियों को एकता का सन्देश सुनाएँगे।

गांधीजी आज प्रातःकाल साढ़े सात बजे चण्डीपुर से रवाना हुए और डेढ़ घंटे में ढाई मील की पैदल यात्रा समाप्त कर ९ बजे अपने निर्दिष्ट गाँव मसीमपुर पहुँचे। मसीमपुर में आप अपनी चलती-फिरती कुटिया में ठहरे।

रास्ते में आप तीन जगह रुके। एक तो आप चङ्गीर गाँव में रुके, जहाँ आपने स्त्रियों के एक समूह में भाषण किया। आपने स्त्रियों से कहा कि एक तालाब वे केवल पीने के पानी के लिये सुरक्षित रखें और उससे कपड़े धोने या नहाने का काम न लें, क्योंकि सभी काम एक ही तालाब से लेने से उसका पानी गन्दा होता है और पानी पीने के काम का नहीं रहता। आपने कहा कि यह तालाब हिन्दुओं और मुसलमानों, दोनों के उपयोग के लिये रहना चाहिये।

गांधीजी जिस समय चण्डीपुर से चलने को हुए, बड़ा ही कारुणिक दृश्य उपस्थित था। जिन श्री मजूमदार के घर में आप ठहरे थे, उनके कुटुम्ब के लोग, स्त्रियाँ और बच्चे सब, आँखों

में आँसू भरे खड़े थे और गांधीजी का जाना सबको खल रहा था। घर की स्त्रियाँ एक थाली में आरती और रोली लेकर खड़ी हो गयीं। पहिले उन्होंने गांधीजी की परिक्रमा की और उसके बाद उनके मस्तक में तिलक लगाकर आरती उतारी। गांधीजी ने सब लोगों से विदा लेकर अपनी सहज मुस्कान के साथ प्रस्थान किया।

पाँव में छाला पड़ जाने के कारण गांधीजी नंगे पैरों चले। खादी प्रतिष्ठान के श्री सतीशदास गुप्त सबसे आगे थे, उनके बाद गांधीजी थे और आपके पीछे जन-समुदाय की भीड़ थी। रास्ते भर पुरुष और स्त्रियाँ अपने-अपने घरों से बाहर निकल कर गांधीजी के स्वागत में खड़े थे। सभी लोग इस बात के लिये उत्सुक थे। कि गांधीजी उनके मकान पर रुकें, किन्तु यह कैसे सम्भव था। परन्तु एक व्यक्ति इतना आतुर था कि उसने कहा कि यदि गांधीजी मेरे मकान पर नहीं रुकेंगे, तो मैं प्राण दे दूँगा। इस पर गांधीजी को कुछ क्षण के लिये उसके मकान पर रुकना पड़ा।

महात्मा गांधी मसीमपुर पहुँचे, तो वहाँ आपके लिये बनाये गये पंडाल के निकट गाँव के पुरुषों और स्त्रियों का समूह एकत्र था। पहुँचते ही आपको फल भेंट किये गये। आपने कहा कि ये फल बच्चों को बाँट दिये जायँ और यही किया गया। सबसे पहिले आप मसीमपुर करदा ग्राम-सेवा-संघ के मेम्बरों से मिले। यह संस्था यहाँ ग्राम-सुधार कार्य के लिये स्थापित की गयी है, जिसके सदस्य अहिन्सा के सिद्धान्त का पालन करते हुए सेवा-

कार्य करते हैं। एक चारपाई पर पड़े हुए गांधीजी ने सेवा-संघ द्वारा किये जाने वाले कार्यों का विवरण सुना। बताया गया कि यह संघ गांधीजी के आदेशानुसार श्री सुरेन बोस ने गत १२ दिसम्बर को स्थापित किया है। संघ के सदस्यों का प्रतिदिन का कार्यक्रम है प्रार्थना करना, तालावों को साफ करना, रास्तोंका सुधार करना और छुआछूत दूर करने के लिये काम करना। संघ के सदस्य मसीमपुर शरण-गृह में ठहरे हुए लगभग २,००० शरणार्थियों की देख-भाल और सेवा-सुश्रुषा का भी काम करते हैं। सङ्घ के स्वयं सेवकों ने अब तक ६ मील तक की सड़कों की मरम्मत की है और स्थानीय लोगों में विश्वास तथा साहस की भावना उत्पन्न करने में सहायता दी है। सङ्घ के सदस्यों ने कितने ही ऐसे कुटुम्बों को फिर गाँव में वापस लाकर रखा है, जो अपने घर छोड़ कर भाग गये थे। मसीमपुर में गांधीजी जिन सज्जन श्रीदुर्गाचरण पाल के यहाँ ठहरे हैं, वह इस ग्राम सेवा-सङ्घ के अध्यक्ष हैं।

प्रार्थना-सभा में भाषण

दिन में भोजन, थोड़ा विश्राम और ग्रामीणों से वार्ता करने के बाद गांधीजी ने सध्या समय प्रार्थना की और भाषण किया। प्रार्थना स्थानीय शरणार्थी विश्राम-गृह के सामने मैदान में हुई। सभा में पहुँचने पर गांधीजी का स्वागत किया गया और शरणार्थियों के एक बालक तथा एक बालिका ने आपको मालाएँ पहिनायीं।

प्रार्थना में बहुतेरे मुसलमान भी थे, पर जब रामधुन का गायन होने लगा, तो वे चले गये। प्रार्थना के बाद अपने भाषण में गान्धीजी ने मुसलमानों के चले जाने का उल्लेख किया। आपने कहा कि मुसलमानों के चले जाने के कारण के बारे में दर्याप्त करने पर मालूम हुआ कि वे इसलिये प्रार्थना से चले गये क्योंकि रामधुन गाया जा रहा था और इससे यहाँ की परिस्थिति का मुझे पता लग गया। मुझे यह मालूम हो गया कि ये लोग यह बात भी नहीं पसन्द करते कि ईश्वर का नाम सिवा उनके ढङ्ग के किसी दूसरे तरीके से लिया जाय। वे अपने ही ढङ्ग की इबादत चाहते हैं। इसी असहिष्णुता की भावना के कारण पिछले अक्टूबर में यहाँ उपद्रव हुए हैं और इसीलिये यहाँ हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया है।

आगे गान्धीजी ने कहा कि ईश्वर की प्रार्थना और पूजा लोग असंख्य ढङ्ग से करते हैं, परन्तु मुसलमान यह नहीं चाहते कि दूसरे लोग अपने ढङ्ग से ईश्वर की इबादत करें। मुझे इस बात की खुशी है कि अपनी यात्रा के पहिले ही दिन मुझे मुसलमानों का विचार मालूम हो गया। परन्तु जो लोग पाकिस्तान चाहते हैं, ऐसा कभी नहीं कहते। इसके विपरीत मैंने उन्हें हमेशा यह कहते हुए सुना है कि पाकिस्तान में हर एक आदमी को अपने मजहब पर चलने की बराबर से आजादी रहेगी। परन्तु मैंने अपनी जिन्दगी में मजहबों में कभी भेदभाव नहीं माना। मजहब तो खुदा रूपी पेड़ की पत्तियों की तरह हैं। खुदा को

चाहे कोई जिस नाम से पुकारे, पर है तो वह एक ही। मैं तो नोआखाली इसलिये आया था कि हिन्दुओं और मुसलमानों की बराबरी से सेवा करूँ, पर अगर मुसलमान यह चाहते हैं कि मैं अपने ढङ्ग से ईश्वर का नाम लेना छोड़ दूँ, तब तो मेरे लिये लाचारी होगी। जैसे मैं यह नहीं चाहता कि मेरे मजहब पर सब लोग चलें, उसी तरह मैं यह भी नहीं कर सकता कि अपना धार्मिक विश्वास, अपना मजहबी अकीदा मैं छोड़ दूँ। मैं तो यहाँ इस बात के प्रचार के लिये आया हूँ कि ईश्वर और सब मजहब एक ही हैं। जब तक मैं जिन्दा हूँ, इसे छोड़ नहीं सकता। मैं तो जब चण्डीपुर से चलने को हुआ था, तो मुझसे कहा गया कि यात्रा में रास्ते भर रामधुन गाया जाय, पर मैंने इसे इस ख्याल से स्वीकार नहीं किया कि सम्भव है कि मुसलमान भाई यह समझें कि हिन्दू लोग ऐसे उद्दंड हैं कि गान्धीजी के आने की वजह से रामधुन गाते हुए चलते हैं।

अन्त में गांधीजी ने यह कहकर अपना भाषण समाप्त किया कि अगर यहाँ मेरी मृत्यु हो, तो अन्तिम समय मेरे मुँह से यही शब्द निकलें कि मैं यहाँ हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की सेवा के लिये आया था।

गांधीजी की गाँवों के लिये नयी आर्थिक व्यवस्था

गान्धीजी जब से पूर्वी बङ्गाल में पहुँचे, उसी समय से आपने प्रार्थना-सभाओं में हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रचार करने के साथ ही गाँवों के पुनर्निमाण पर भी बराबर जोर दिया है। और इस

ग्राम-सुधार कार्य में आपने ग्रामीणों के लिये एक नयी आर्थिक व्यवस्था रखी है, जिससे ग्रामीणों के सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में नया सुधार हो और वे सामाजिक उन्नति के साथ आर्थिक उन्नति भी कर सकें और अन्य देशों के किसानों की भांति समृद्धिशाली हों।

इस नयी आर्थिक व्यवस्था में गांधीजी का ध्येय यह भी है कि अपने गाँवों को वापस आने वाले शरणार्थियों की समस्याओं को सफलतापूर्वक हल किया जाय। अधिकांश शरणार्थियों का सब कुछ पिछले उपद्रवों में लुट गया है और उन्हें जीवन की प्रत्येक दिशा में विविध प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ रहा है। इन्हें अपने जीवन को फिर से आरम्भ करना है, सब व्यवस्था करनी है और इस सब के लिये धन की आवश्यकता है। अतः गांधीजी चाहते हैं कि इस नयी आर्थिक व्यवस्था का अनुसरण कर ग्रामीण लोग, विशेषतः शरणार्थी लोग अपनी समस्त समस्याओं को हल करें। यही नहीं बल्कि वे अपनी स्थिति और अधिक दृढ़ बनायें तथा अपनी रहन-सहन का मान ऊँचा करें।

गान्धीजी की यह नयी आर्थिक योजना क्या है, इसे गांधीजी के दल के एक सज्जन ने बताया कि गांधीजी के रचनात्मक कार्य-क्रम की विभिन्न भेद ही इस योजना का आधार है। उसमें चरखा चलाकर सूत तैयार करने और छोटे-मोटे उद्योग-धन्धे जिन्हें ग्रामीण लोग वर्तमान परिस्थिति में कर सकें, जारी करने की बात मुख्य है। इसमें गांधीजी चाहते हैं कि हिन्दू और मुसल-

मान सब मिलकर काम करें, जिससे दोनों का समान रूप से आर्थिक हित हो और इस प्रकार वे एक दूसरे के घनिष्ट सम्पर्क में आवें। गांधीजी का कहना है कि इस योजना से आर्थिक लाभ होने और जीवन का स्तर ऊँचा होने के साथ ही साम्प्रदायिक समस्या भी सफलतापूर्वक हल हो जायगी और हिन्दू तथा मुसलमान अच्छे पड़ोसी तथा भाई-भाई की तरह रह सकेंगे।

—::❀::—

फतहपुर

[८ जनवरी]

मुस्लिम गाँवों के बीच से यात्रा

मसीमपुर में २४ घण्टा व्यतीत करने के बाद गांधीजी दूसरे दिन सवेरे सात बजे दूसरे गाँव फतहपुर के लिये तैयार हुए। ठीक साढ़े सात बजे आप रवाना हुए। आज से गांधीजी ने नंगे पाँव चलना शुरू किया। एक वृद्ध मौलवी के यह कहने पर कि इतनी कड़ी सरदी में, जब कि अक्सर पानी भी बरसा करता है, आप नंगे पैरों क्यों चलते हैं, क्योंकि आपको नंगे पाँव चलना देखकर हमलोगों को बड़ी तकलीफ होती है। गांधीजी ने कहा कि नोआखाली की यात्रा मेरे लिये तीर्थ यात्रा के समान है, इसलिये तीर्थ यात्रा पैरों में चप्पल पहिनकर कैसे कर सकता हूँ। हिन्दू मुसलमानों की एकता के लिये यात्रा करना मेरे नजदीक सबसे बड़ी तीर्थ-यात्रा है, इसलिये मैंने यह यात्रा नंगे पैरों करने का निश्चय किया है।

आज की गाधीजी की यात्रा का मार्ग मुस्लिम गाँवों से होकर जाता था, अतः आप जब इन गाँवों से होकर चले, तो गाँवों की मुस्लिम जनता बड़े उत्साह के साथ गांधीजी का दर्शन करने के लिये अपने-अपने घरों से निकलकर खड़ी थी। गांधीजी जब मुसलमानों के बीच से होकर निकलते थे, तो सब मुसलमान बड़े आदर से गांधीजी के सामने सिर झुका देते थे। एक जगह

गांधीजी को कुछ देर के लिये रुक जाना पड़ा, क्योंकि उस तरफ से मुसलमानों का एक दल गांधीजी के दर्शन के लिये दौड़ा आ रहा था। एक जगह गांधीजी का रास्ता रातों-रात रोक दिया गया इस कारण कि वह एक कब्रस्तान के बीच से होकर जाता था। अतः गान्धीजी को दूसरे रास्ते से लम्बा चक्कर लगाकर जाना पड़ा।

रामनगर नामक गाँव में, जो फतहपुर की सीमा पर है, मुसलमानों की एक भीड़ ने, जिसके अगुआ गाँव के मदरसा के मौलवी हफीउद्दीन मूका थे, गांधीजी से प्रार्थना की कि थोड़ी देर के लिये आप यहाँ रुकने की कृपा करें। इस पर गांधीजी कुछ देर के लिये यहाँ रुक गये। मौलवी मूका ने गांधीजी से कहा—हम लोग तो साधारण ग्रामीण जन हैं और राजनीति में नहीं पड़ना चाहते। हमें तो कोई ऐसा रास्ता आप बतावें जिससे कि वर्तमान झगड़ा दूर हो और हिन्दू तथा मुसलमान फिर नोआखाली में भाई-भाई की तरह रह सकें। गान्धीजी ने कहा कि इसके लिये आप लोग मेरी प्रार्थना सभा में आवें। इसे सब लोगों ने स्वीकार किया।

फतहपुर पहुँचने पर गान्धीजी एक मदरसा में ठहराये गये। मदरसा के सामने बहुत से मुसलमान और वालंटियरों का एक दल गांधीजी के स्वागत के लिये एकत्र थे। सब लोगों ने गांधीजी का स्वागत किया। यहाँ आते ही आपने एक मौलवी इब्राहीम साहब से बात की।

गान्धीजी यद्यपि थक गये थे, पर फिर भी प्रसन्न थे। रास्ते

में चलते समय भी आप प्रसन्न थे और विविध विषयों पर बातें करते जा रहे थे।

आज यहाँ गांधीजी से मसीमपुर, काल्पुर, केरोवा ग्राम सेवा-सङ्घ ने मेम्बरों से मिलकर एक रिपोर्ट आपके सामने उपस्थित की, जिसमें यह बताया गया कि पिछले उपद्रव में मसीमपुर को क्या क्षति पहुँची। यहाँ ९७८ हिन्दुओं के १५७ कुटुम्बों को क्षति पहुँची। १३१ मकान लूटे गये और ८९ मकान जलाये गये। सब मिलाकर ९,२३,३४० रु० की हानि हुई है। केरोवा गाँव में १,९७० आदमी सताये गये, ११० मकान लूटे तथा जलाये गये तथा २०० अन्य मकानों में आग लगायी गयी। इस गाँव में भी ७८०६५४ रु० की हानि हुई। काल्पुर में भी चार मकान जलाये गये और १९५० रु० की क्षति हुई।

मुसलमानों का कांग्रेस के साथ काम करने का वादा

फतहपुर की प्रार्थना सभा में प्राय: ७०० आदमी थे, जिनमें अधिकतर मुसलमान थे। गान्धीजी ने प्रार्थना के बाद अपने भाषण में इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि इतने अधिक मुसलमान इस सभा में उपस्थित हुए हैं। आपने कहा कि मैं कितने ही साल मुसलमानों के बीच में रहा हूँ और उनका दिया हुआ भोजन किया है क्योंकि वे मुझसे इतना प्रेम करते थे। मैंने उन लोगों के साथ कभी कोई भेदभाव नहीं किया जो दूसरे मजहबों पर चलते हैं। ईश्वर तो एक ही है, लोग उसे तरह-तरह के नाम से पुकारते हैं। कुछ लोग उसे अल्ला कहते हैं, कुछ राम कहते

हैं। दूसरे लोग और दूसरे नाम से पुकारते हैं। ईश्वर के नाम तो असंख्य हैं।

गान्धीजी के भाषण के बाद शिवपुर के मौलवी फजलुलहक साहब बोले। आपने मुसलमानों से अपील की कि वे हिन्दू भाइयों से भाई चारे का वर्ताव करें। मौलवी साहब ने गांधीजी से भी अपील की कि आप ऐसा रास्ता बतावें कि हिन्दू और मुसलमान साथ-साथ और सद्भाव के साथ रहें, जैसे कि वे पहिले रहते थे।

गांधीजी के भाषण का मुसलमानों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि गाँव के प्रमुख मुसलमान गांधीजी के पास आये, अपने सह-धर्मियों के कृत्यों के लिये क्षमा माँगी और हिन्दुओं के साथ अच्छा व्यवहार करने तथा काँग्रेस के साथ मिलकर काम करने का वचन दिया।

प्रार्थना सभा के बाद गांधीजी एक मील चलकर मौलवी अनवरउल्ला के मकान पर गये। वहाँ कुछ देर रहकर आप अपने स्थान पर वापस चले आये।

फतहपुर में गांधीजी शान्ति के साथ रहे। यहाँ थोड़े लोग आपसे मिलने आये। एक मुसलमान सज्जन ऐसे भी आये, जिन्होंने गांधीजी से कहा कि मेरे घर की स्त्रियाँ आपका दर्शन करना चाहती हैं। गांधीजी इस निमंत्रण से बड़े प्रसन्न हुए और कहा कि मुझे इस बात से बड़ी खुशी है कि मुसलमानों ने यहाँ मुझे ठहराया औरमेरेआराम का सब प्रबन्ध किया।

अमतुस सलाम का अनशन

फतेहपुर में यह सूचना मिली कि गांधीजी की एक मुस्लिम शिष्या कुमारी अमतुस सलाम सिरन्दी गाँव में १३ दिनों से इसलिये अनशन कर रही है कि पिछले उपद्रव के दिनों में इस गाँव से पूजा करने की तीन तलवारें उपद्रवी लोग उठा ले गये हैं, जिसके कारण हिन्दुओं की पूजा में बाधा पड़ती है, अतः आप चाहती हैं कि जो लोग तलवार ले गये हैं, वे लाकर वापस कर दें। चूँकि तलवार नहीं मिली, इसलिये उन्होंने अनशन शुरू कर दिया है। स्थानीय मुसलमानों की कोशिश से दो तलवारें तो वापस मिल गयी हैं, पर तीसरी अभी नहीं मिली है। इसलिये अमतुस सलाम का अनशन जारी है।

बताया गया कि अमतुस सलाम को बुखार भी आता है और उनकी हालत नाजुक है। गांधीजी को अमतुस सलाम की हालत बराबर बतायी जाती रही है और वे उनके इलाज का पूरा इन्तजाम करते रहे हैं। अमतुस सलाम बड़े ऊँचे मुस्लिम खानदान की लड़की हैं और गांधीजी के वरधा वाले आश्रम में आकर बहुत दिनों से रहती हैं। नोआखाली में पिछले तीन महीने से आकर वे हिन्दू मुस्लिम एकता का काम कर रही हैं।

—::❀::—

दासपाड़ा

[९ जनवरी]

महात्मा गांधी २४ घंटे फतहपुर में रहने के बाद आज प्रातः-काल साढ़े सात बजे दासपाड़ा के लिये चले और साढ़े आठ बजे दासपाड़ा पहुँच गये। आज से गांधीजी ने नियमित रूप से अपनी 'तीर्थ यात्रा' नंगे पैरों शुरू की।

आज की यात्रा आरम्भ करने के पहिले गांधीजी ने मौलवी इब्राहीम और अन्य स्थानीय मुस्लिम नेताओं से उत्साहपूर्वक बातें गाँव के मदरसा में की। आपने कहा कि सच्चे काँग्रेसी का यह कर्तव्य है कि हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच मित्रता बढ़ाने का पूरा प्रयत्न करे। आपने इस बात के लिये बड़ी कृतज्ञता भी प्रकट की कि फतहपुर के मुसलमानों ने आपका बहुत आतिथ्य सत्कार किया। आपने कहा—'मैंने आप लोगों के यहाँ भोजन राशनिंग के ज़माने में आपको परेशानी में न डालने के ही ख्याल से नहीं किया है, किन्तु मैंने आपके साथ ही अपना भोजन किया है। दूसरी बात यह भी है कि साधारणतया जैसा भोजन लोग करते हैं, उसका मैं आदी भी नहीं हूँ। मेरा भोजन तो विचित्र ढङ्ग का होता है। फिर जहाँ मुझे बकरी का दूध दिया गया है, मैंने उसे अवश्य ग्रहण किया है।'

दासपाड़ा पहुँचने पर गांधीजी श्रीवसन्त मजूमदार के मकान में ठहरे। फतहपुर की तरह दासपाड़ा में भी अधिकतर मुसल-मानों की ही बस्ती है।

आज गांधीजी जब चलने लगे, तो आपकी यात्रा का फिल्म तैयार करने के लिये एक सिनेमा कम्पनी के लोगों ने यात्रा की फोटो खींची।

दासपाड़ा पहुँचने के बाद गांधीजी को इस गाँव की घटनाओं का विवरण बताया गया। गाँव के लोगों से घटनाओं का विवरण सुनने में गांधीजी का अधिक समय लगा। दिन में भोजन इत्यादि करने के बाद गांधीजी ने आध घंटे विश्राम किया और उसके बाद कई व्यक्तियों से बातें कीं।

संध्या समय प्रार्थना हुई उसमें भाषण करते हुए गांधीजी ने कहा कि इसके पहिले गाँव में मैं मौलवी इब्राहीम साहब के मकान पर ठहरा था और वहाँ की प्रार्थना सभा में बहुत मुसलमान एकत्र हुए थे। मैंने हमेशा यही चाहा है कि पूर्वी बङ्गाल की यात्रा में मैं मुसलमानों के घरों में ही ठहरूँ। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि जो लोग मुझे अपने यहाँ ठहराएँगे, उन्हें मेरे भोजन के लिये कुछ खर्च नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि मेरे भोजन का प्रबन्ध सब पहिले ही से हो गया है। मैं तो अपने मुसलमान मित्रों से रहने के लिये केवल स्थान चाहता हूँ।

साथ में पुलिस रहने का विरोध

गांधीजी ने अपने भाषण में कहा कि—मुझे यह जान कर बहुत अफसोस हुआ कि बहुत लोग यह सुनकर गाँव से चले गये हैं कि मेरे साथ पुलिस और फौजी लोग हैं। मैं तो नहीं चाहता था कि मेरी हिफाजत के लिये पुलिस वगैरह मेरे साथ रहे, पर बङ्गाल सरकार ने यही निश्चय किया कि पुलिस

हिफाजत के ख्याल से जरूर रहेगी। जहाँ तक मेरी हिफाजत का सवाल है, मेरा तो ख्याल है कि कोई किसी की हिफाजत नहीं कर सकता। अगर मैं बीमार पड़ जाऊँ या मर जाऊँ, तो कौन मेरी हिफाजत करेगा। असली हिफाजत तो केवल ईश्वर कर सकता है। जो कोई अपराध नहीं करता, उसे किसी से डरने की जरूरत नहीं है। अगर किसी ने कोई गलती की है, तो उसे ईश्वर के सामने पश्चात्ताप करना चाहिये और उससे प्रार्थना करनी चाहिये कि उस अपराध के लिये ईश्वर उसे क्षमा कर दें। सच्चे धार्मिक आदमी को किसी से डरने की जरूरत नहीं है। डरना तो सिर्फ परमात्मा से चाहिये। खुदा में सच्चा विश्वास रखने वाले को उसी पर भरोसा रखना चाहिये। अगर किसी ने कोई गलती की है, तो खुदा उसे उसके लिये सजा देगा और अगर किसी ने कोई कुसूर नहीं किया है तो कोई उसे छू नहीं सकता।

आपने कहा कि नोआखाली के मुसलमानों को बङ्गाल सरकार से जो कि उन्हीं की सरकार है—कहना चाहिये कि गांधीजी की हिफाजत के लिये किसी पुलिस या फौज की जरूरत नहीं है और हम लोग खुद उनकी हिफाजत करेंगे।

गांधीजी ने कहा कि जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मुझे बिना किसी हिफाजत के कहीं भी जाने में कोई भी डर नहीं लगता क्योंकि मौत अगर आती है, तो उससे कोई अपने को बचा नहीं सकता। मुझे मुसलमानों से या किसी से भी कोई डर नहीं है, बल्कि मैं तो मुसलमानों के घरों में ही रहना चाहता हूँ अगर वे मुझे अपने यहाँ रखें।

प्रार्थना में गांधीजी के भाषण के वाद मौलवी इसहाक ने कुरान की आयतें पढ़ीं। गाँव के मुसलमानों ने कहा कि वे महज डर के मारे ही प्रार्थना में नहीं आते, ऐसी बात नहीं है। आज बाजार का दिन है और वहुत लोग चीजें खरीदने के लिये बाजार गये हैं। मगर कुछ लोग डर की वजह से भी नहीं आये हैं।

गांधीजी की इस अपील का प्रभाव मुसलमानों पर बहुत पड़ा और वे सभाओं में बड़ी तादाद में आने लगे। हिन्दुओं में भी भय की भावना बहुत कुछ दूर हो गयी और वे भी बिना डर के मुसलमानों के बीच चलने-फिरने लगे तथा अपने घरों को वापस आने लगे। कितने ही हिन्दुओं के मकान जले हुए अभी तक पड़े हैं, पर वे अपने मकान के पास खुले मैदान में ही आकर रहने लगे हैं। मन्दिरों में शङ्ख और घड़ियाली का बजना भी सुनायी देने लगा है जो इस बात का द्योतक है कि हिन्दुओं में विश्वास की भावना जम गयी है।

दासपाड़ा में गांधीजी ने मुसलमानों से अमतुस सलाम के अनशन का भी उल्लेख किया और कहा कि अमतुस सलाम की जान बचाना मुसलमानों का फर्ज है। अमतुस सलाम हिन्दू मुसलमानों में एकता होने के लिये अपनी जान खतरे में डाले हुए हैं, इसलिये उनकी इस अग्नि परीक्षा में उनकी सहायता सब को करनी चाहिये।

प्रार्थना के वाद गांधीजी पास के कुछ गाँवों को देखने गये और प्रातःकाल जगतपुर जाने का निश्चय किया।

जगतपुर

[१० जनवरी]

महात्माजी आज प्रातःकाल साढ़े आठ बजे अपनी पैदल यात्रा के पाँचवें गाँव जगतपुर पहुँचे। दासपाड़ा से जगतपुर का ढाई मील का मार्ग आपने एक घण्टे में तय किया।

जगतपुर के रास्ते में भी मुस्लिम ग्रामीण अपने-अपने घरों के दरवाजे पर गान्धीजी के दर्शन के लिये खड़े थे। इस गाँव में भी अधिकतर आबादी मुसलमानों की ही थी। रास्ते में गान्धीजी को कुछ दूर पर एक घर दिखाया गया, जो उपद्रव में जला दिया गया था। गान्धीजी एक अन्य स्थान पर गये, जहाँ एक बूढ़ी स्त्री दंगे में मरी थी। कहा जाता है कि दंगाइयों को आते देखकर ही डर के मारे उसके दिल की धड़कन बन्द हो गयी थी और वह मर गयी थी और उस मकान में रहने वाले दो आदमी भी मार डाले गये थे।

जगतपुर में पहुँचकर गान्धीजी श्री महेशचन्द्र भावमिक के मकान में ठहरे। यहाँ के एक मुस्लिम सज्जन ने पहिले गान्धीजी को अपने मकान में ठहराना स्वीकार किया था, पर आखिरी समय में उन्होंने इनकार कर दिया। जगतपुर दो वर्ग मील के रकबे का एक छोटा-सा गाँव है और रामगञ्ज थाने के दक्षिण में तीन मील पर है। इसकी आबादी उपद्रवों के पहिले

लगभग ५०० आदमियों की थी, जिसमें हिन्दुओं की संख्या बहुत थोड़ी थी। जगतपुर की घटनाओं की रिपोर्ट गान्धीजी के सामने पेश की गयी।

जबरन धर्म-परिवर्तन नाजायज है

दिन भर लोगों से मिलने और बातें इत्यादि करने के बाद गान्धीजी ने शाम को प्रार्थना की और भाषण भी दिया। आपने जबरन धर्म-परिवर्तन को बुरा बताया। आपने कहा कि पिछले कुछ दिनों से मैं सुन रहा हूँ—और खासकर कल से—अगर मुसलमान लोग हिन्दुओं से मुसलमान बनने को कहें तो हिन्दू राजी से मुसलमान हो जायँ और अगर ऐसा हो, तो हिन्दुओं की जान-माल की हिफाजत रहेगी और साथ ही जबरन धर्म-परिवर्तन भा नहीं किया जायगा। गान्धीजी ने कहा कि मैं एक क्षण के लिये भी नहीं मानता कि यह बात सच है और मुसलमानों ने ऐसा कहा होगा। पर मैं यह जरूर कहना चाहता हूँ कि अगर किया जाय, तो यह जबरदस्ती और भय दिखाकर इस्लाम ग्रहण कराना होगा। आपने कहा कि मुझे उन दिनों की याद आती है, जब ईसाई लोग अकाल के दिनों में गरीबों के बच्चों को खरीद लेते थे और उन्हें ईसाई बनाते थे। यह तो ईसाई धर्म ग्रहण करना नहीं हुआ। धर्म-परिवर्तन तो वह है, जो अपनी इच्छा से किया जाय और उसके तत्व को समझकर ग्रहण किया जाय। उसी तरह से इस्लाम ग्रहण करना वास्तविक और जायज तभी होगा जब उसे अपनी इच्छा से स्वीकार

किया जाय। मैं तो किसी से हिन्दू धर्म ग्रहण करने के लिये नहीं कहूँगा। मेरे पास तो जो लोग आयें और हिन्दू बनने के लिये कहें, तो मैं उनसे यही कहूँगा कि पहिले हिन्दू धर्म के तत्वों को समझ लो और उस पर यदि तुम्हारी आत्मा हिन्दू बनने को कहे, तब हिन्दू धर्म ग्रहण करो।

गान्धीजी ने कहा कि मैंने जो कुछ कहा है, सम्भव है वह हर कोई को पसन्द न आवे, पर मैं चाहता यही हूँ कि मुसलमान इस बात पर गौर करें। मैंने मुस्लिम सन्तों द्वारा लिखे गये ग्रन्थ इस्लाम के इतिहास को अपने व्यस्त जीवन में जो पढ़ा है, उसमें कहीं भी एक वाक्य भी ऐसा नहीं लिखा, जिसमें जबरन धर्म-परिवर्तन करने को कहा गया हो। वास्तविक धर्म-परिवर्तन तो हृदय से होता है और दिली धर्म-परिवर्तन बिना किसी धर्म को अच्छी तरह समझे हुए नहीं हो सकता। इसलिये जबरन धर्म-परिवर्तन नाजायज है।

प्रार्थना के बाद गान्धीजी गाँव में एक मील के करीब टहलने गये। दूसरे दिन लामचार गाँव जाने का आपने निश्चय किया।

जगतपुर में स्त्रियों का एक डेपुटेशन गान्धीजी से मिला और यह बताया कि उपद्रव के दिनों में उन पर कैसे-कैसे अत्याचार किये गये। अन्य अनेक सज्जन भी गान्धीजी से मिले।

—::※::—

लामचार

[११ जनवरी]

गान्धीजी अपनी यात्रा के प्रोग्राम के छठे गाँव लामचार में आज ९ बजे पहुँचे। आज आप कुछ देर से चले थे, क्योंकि आप कल रात में ढाई बजे ही उठ पड़े थे और बहुत देर तक चिट्ठियाँ लिखते रहे।

रास्ते में एक चौराहे पर बहुत से मुसलमान खड़े थे, जिनमें लड़के और लड़कियाँ भी थीं। इन लोगों ने गान्धीजी का स्वागत किया और हरे नारियल भेंट किये। इसके बाद ये लोग भी गान्धीजी के दल के साथ हो गये और लामचर तक आये। रास्ते में और भी कई जगह मुसलमान काफी संख्या में खड़े मिले, जो गान्धीजी के इन्तजार में खड़े थे। गान्धीजी जब इन लोगों के पास पहुँचते थे, तो वे गान्धीजी को सिर झुका देते थे। गान्धीजी हर आदमी के पास खड़े हो जाते थे और मुस्कराते हुए उसका अभिवादन स्वीकार करते थे।

धान के खेतों को पार करते हुए गान्धीजी लामचार की सीमा पर पहुँचे। वहाँ एक कीर्तन-मण्डली गान्धीजी के स्वागत के लिये राम-धुन गाती हुई आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। गान्धीजी के दल के पहुँचने पर यह मण्डली भी साथ हो गयी और दल के आगे कीर्तन करते हुए चली।

मार्ग में गान्धीजी ने दो जले हुए मकान देखे, जिनमें से एक मकान के मालिक ने आपको अपनी दुख-गाथा सुनायी। गांधीजी ने उसके मामले का जिक्र सुपरिनटेंडेन्ट पुलिस से किया जो कि साथ में थे।

एक अत्यन्त कठिन पुल पार कर गान्धी श्री सिनहा चौधरी के मकान पर ठहरे। वहाँ बहुत से स्त्री और पुरुष पहिले से ही गान्धीजी के दर्शन के लिये एकत्र थे। लामचार पहुँचने पर वहाँ की रिपोर्ट गान्धीजी को दी गयी। उसके कथनानुसार इस क्षेत्र में लामचार ही एक मात्र ऐसा गाँव था, जहाँ कोई जबरदस्ती मुसलमान नहीं बनाया गया, स्त्रियों पर अत्याचार नहीं हुआ और न वहाँ का कोई हिन्दू लापता है। गाँव के युवकों ने अपनी रक्षा के लिये रक्षक दल बनाये थे। रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि इस गाँव में ८५० मुसलमान तथा ७५० हिन्दू हैं। इस गाँव में ११ हिन्दू मारे गये और ३६ मकान जलाये गये, जो अधिकतर गरीबों के थे।

लामचार के मदरसा के मैदान में गान्धीजी ने प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद भाषण में आपने कहा कि नोआखाली की भस्म राख पर मैं ऐसे नये समाज का निर्माण करना चाहता हूँ, जो आर्थिक व्यवस्था के आधार पर हो। आपने कहा कि नोआखाली आने का मेरा उद्देश्य दोनों सम्प्रदायों के विचारों में परिवर्तन करना है। मैं चाहता हूँ कि मुसलमानों में ऐसा साहस आवे कि अपने किये अपराधों को वे स्वीकार करें—यदि उन्होंने अपराध किया है—और उसके लिये सजा भोगें। सजा भोगने से उन्हें

अपने किये कृत्यों पर पश्चात्ताप होगा और फिर इन अपराधों को करने की इच्छा नहीं होगी। और हिन्दुओं से मैं चाहूँगा कि वर्तमान कष्टों के आधार पर वे एक नये समाज के निर्माण का कठिन कार्य साहस के साथ करें और अपने भय का त्याग करें।

गांधीजी ने कहा कि सरकार का भी यह कर्तव्य है कि जिन लोगों के मकान नष्ट हुए हैं, उनके मकान बनवाये जायँ और उनकी जीविका का प्रबन्ध किया जाय। जो आदमी जो धंधा पहिले करता था, उसे फिर जारी करने में उसकी सहायता की जाय। पर यदि सरकार अपने कर्तव्य का पालन न करे, तो धनी लोगों का धर्म है कि वे पीड़ितों की सहायता करें और उन्हें अपना धंधा शुरू करने में मदद दें। परन्तु यह सहायता कर्ज के रूप दी जानी चाहिये, खैरात के रूप में नहीं।

प्रार्थना के बाद गांधीजी शाम को टहलने के समय चौधरी बाड़ी गये जहाँ उपद्रव के दिनों में शरण-गृह खोला गया था। यह मकान चारों तरफ उपजाऊ खेतों से घिरा है और इसमें इस गाँव तथा आस-पास के गाँवों के ८,००० आदमियों ने आकर शरण ली थी। लौटते समय गांधीजी ने जलाये हुए तीन मकानों को देखा और बूढ़े माता पिताओं को सान्त्वना दी जिनके जवान लड़के मार डाले गये थे।

तालाब से लाशें निकाली गयीं

गांधीजी के लामचार आने के एक दिन पहिले नोआखाली के सुपरिन्टेंडेन्ट पुलिस मि० अबुल्ला यहाँ आये थे। यहाँ आने पर

उन्हें बताया गया कि बगल के एक गाँव के तालाब में लोगों को मारकर फेंका गया है और कई लाशें इसमें मिलेंगी। सुपरिंटेंडेंट पुलिस के कहने से तालाब में कई हिन्दू उतरे, जिसमें से पाँच सिर कटे हुए धड़ तथा कम-से-कम ५-६ आदमियों की ठठरियाँ तथा हड्डियाँ निकलीं। ये लाशें और ठठरियाँ गांधीजी को भी दिखायी गयीं, जिन्हें देखकर गांधीजी बड़े दुखी हुए, पर कुछ बोले नहीं। दो लाशों पर कपड़े बच रहे थे, जिनमें से एक पर खद्दर का कपड़ा था और दूसरी पर किनार दार साड़ी तथा ब्लाउज थी। तालाब में कितनी लाशें फेंकी गयी, इसका कोई पता नहीं लगाया जा सका, पर यह बताया गया कि ११ आदमी इस गाँव के गायब थे और २५ दूसरे गाँव के।

—::※::—

कारपाड़ा

[१२ जनवरी]

आज गान्धीजी कारपाड़ा गाँव में प्रातःकाल पहुँचे। कार-पाड़ा नोआखाली के उन गाँवों में से है जहाँ उपद्रव के दिनों में घोर अत्याचार किये गये थे।

लामचार से ठीक साढ़े सात बजे प्रस्थान कर और डेढ़ मील का मार्ग प्रायः आध घंटे में समाप्त कर महात्माजी ८ बजे के थोड़ी देर बाद कारपाड़ा पहुँचे और यहाँ के प्रतिष्ठित निवासी स्वर्गीय श्री मनमोहन राय के मकान में ठहरे।

कारपाड़ा में गांधीजी का यह दूसरी बार आगमन हुआ था, जहाँ आप लगभग दो महीने पहिले एक बार और दो घंटे के लिये आये थे। कारपाड़ा से प्रस्थान करने से पहिले गांधीजी ने यह इच्छा प्रकट की कि अब आज से यात्रा समाप्त न होने तक प्रतिदिन रामधुन भजन यात्रा शुरू करने के पहिले और दूसरे गाँव में समाप्त होते समय गाया जाय। इसके अनुसार जब गांधीजी लामचार से चले उस वक्त रामधुन भजन शुरू हुआ और रास्ते भर गाया जाता रहा और कारपाड़ा में पहुँचने तथा यात्रा समाप्त होने पर बन्द हुआ।

रामधुन का यह विवाद रहित तथा सरल भजन जो गांधीजी को इतना प्रिय है और जिसे आपने नोआखाली की यात्रा में

प्रधानता दी है तथा जिस पर लीगी मत के नोआखाली जिले के कुछ गाँवों के मुसलमानों ने आपत्ति की है, इस प्रकार है :—

रघुपति राघव राजाराम
पतित-पावन सीताराम
मङ्गल-परसन राजाराम
पतित-पावन सीताराम
शुभ-शान्ति विधायक राजाराम
पतित-पावन सीताराम
डर-भय-दरिता राजाराम
पतित-पावन सीताराम
निर्भय कर प्रभु राजाराम
पतित-पावन सीताराम
दीन-दयाला राजाराम
पतित-पावन सीताराम
राजाराम जै सीताराम
पतित-पावन सीताराम

गान्धीजी ने रोज की तरह यात्रा नंगे पाँव की थी, किन्तु छाले पड़ने के कारण उँगलियों में कपड़ा बांधे हुए थे। रास्ते में स्त्रियों ने मकानों से निकल कर गान्धीजी का स्वागत किया। उन्हें मालाएँ पहिनायीं तथा फल भेट किये।

कारपाड़ा में जिस मकान में गान्धीजी ठहराये गये थे, उसमें फूल पत्तियों का फाटक सजाया गया था और सड़क पर दोनों ओर स्त्रियों की कतार आपके स्वागत के लिये खड़ी थी।

कारपाड़ा की प्रार्थना-सभा में भाषण करते हुए गान्धीजी ने यहाँ आये हुए आजाद हिन्द फौज के कुछ सिक्ख स्वयं सेवकों का उल्लेख किया। आपने कहा कि इन सिक्खों ने नेताजी सुभाष बोस के नेतृत्व में भारत की आजादी कील ड़ाई में अपना खून बहाया है। हिन्दुस्तान वापस आकर ये लोग मेरे पास आये और पूछा कि किस तरह से हिन्दुस्तान की सर्वोत्तम सेवा करें। पर मैं तो अहिन्सा का व्रती हूँ और मैंने इन्हें सलाह दी कि हिन्दू मुसलमान का बिना किसी भेदभाव के वे देशवासियों की सेवा करें। गान्धीजी ने कहा कि ये सिक्ख बङ्गाल आने से पहिले यहाँ के प्रधान मंत्री मि० सुहरावर्दी की इजाजत लेकर आये हैं और अपने कृपाण छोड़ आये हैं।

आज की सभा में गान्धीजी ने फिर अपने साथ पुलिस और फौजियों के रहने का जिक्र किया और कहा कि मैं नहीं चाहता कि ये लोग मेरे साथ रहें। आपने कहा कि मैं अपनी जिन्दगी में कभी किसी से डरा नहीं हूँ और न यहाँ मुझे किसी का भय है। अगर मुसलमान लोग पुलिस और फौजियों से डरते हैं, तो वे बङ्गाल सरकार को लिखें कि ये यहाँ से हटा लियें जायँ। जिसके लिये मैं स्वयं पहिले ही कह चुका हूँ। आपने कहा कि सच्चा मुसलमान तो वही है जो खुदा के सामने अपना सर झुकावे और दुनिया में किसी दूसरे से न डरे।

सन्ध्या समय टहलने के समय गान्धीजी ने कारपाड़ा के दो जलाये गये मकानों को देखा।

कारपाड़ा में गान्धीजी ने अपना भोजन फिर घटा दिया।

पिछले दो दिनों से आपने रात के भोजन के समय शब्जी लेना भी बन्द कर दिया था और आज से दूध के साथ छुहारा लेना भी बन्द कर दिया, केवल दूध लेते हैं।

कारपाड़ा के सम्बंध में गान्धीजी के सामने जो रिपोर्ट पेश की गयी, उससे विदित हुआ कि इस गाँव में अधिकतर हिन्दुओं की बस्ती है जिनकी संख्या २,२६१ है और मुसलमानों की लगभग ६०० । उपद्रवों के बाद अब यहाँ हिन्दुओं की संख्या आधी रह गयी है।

कारपाड़ा में आजाद हिन्द फौज के कर्नल निरंजन सिंह गान्धीजी से फिर मिलने आये थे। यहाँ से खिजिरखिल गये, जहाँ रहकर आप बङ्गाल पीड़ितों की सहायता का काम करेंगे।

शाहपुर

[१३ जनवरी]

गान्धीजी अपनी गाँव-गाँव यात्रा के सातवें गाँव आज पहुँचे। आप प्रातःकाल साढ़े आठ बजे कारपाड़ा से चलकर लगभग ५० मिनट में दो मील का रास्ता तय किया। आज आपका मौन दिवस था, अतः चलने से पहिले आपने २० मिनट अपना रास्ते में सुनाया जाने वाला भाषण लिखने में लगाया। यद्यपि गान्धीजी अपना भोजन घटा देने के कारण कमजोर हो गये हैं, पर यात्रा आपने प्रसन्नता के साथ समाप्त की।

रास्ते में आप शाहपुर बाजार होकर गुजरे जहाँ उपद्रव के दिनों में कुछ दूकानें लूटी गयी थीं। शाहपुर में भी गान्धीजी का यह आगमन दूसरी बार हुआ। पहिली बार पिछले नवम्बर में आप खिजिरखिल जाते हुए यहाँ आये थे। रास्ते में आपने कारपाड़ा के पूर्व में स्थित दो जलाये गये मकानों को देखा, जहाँ बड़ा दर्दनाक दृश्य दिखायी दिया। एक बूढ़ी स्त्री ने अपने पौत्र को गोद में लिये हुए बताया कि किस तरह से उसके पति और एकमात्र पुत्र की हत्या की गयी थी। बूढ़ी स्त्री की विधवा बहू भी उसके पीछे स्तब्ध खड़ी थी जिसकी आँखों में आँसू छलक रहे थे। गान्धीजी ने बूढ़ी की गोद के बच्चे को प्रेमपूर्वक थपथपाया। साथ में चलने वाले सुपरिंटेंडेंट पुलिस ने बताया

कि बूढ़ी स्त्री के पति ने १७,००० रु० दो किस्तों में उपद्रव के दिनों में मुस्लिम लीग को चंदे में दिये थे। परन्तु गुण्डों ने गहने वगैरह मांगे, जिस पर पति ने सोने के गहने तथा अन्य कीमती चीजें भी दीं। पर इतने पर भी उनकी जान नहीं बची और अपने घर में ही वह मार डाले गये। सुपरिंटेंडेंट पुलिस ने यह भी कहा कि बूढ़ी का जवान लड़का लापता है और यह भी समझा जाता है कि वह भी मार डाला गया।

रास्ते में गान्धीजी का यथावत् स्वागत किया गया। शाहपुर आने पर वहाँ की स्थिति के बारे में जो रिपोर्ट दी गयी, उससे विदित हुआ कि शाहपुर में हिन्दुओं की वस्ती अधिक है। ६०० हिन्दू हैं और ५०० मुसलमान। शाहपुर बाजार में ९ मकान जलाये गये और १६ मकान लूटे गये। इस गाँव में किसी हिन्दू को मुसलमान नहीं बनाया गया।

जमीन और तालाब से लाशें निकाली गयीं

गान्धीजी के आगमन से गाँवों के हिन्दुओं को साहस आ गया और उन्होंने पुलिस को बताया कि गुंडों ने हत्या करने के बाद लाशें कहीं जमीन में गाड़ दी हैं। कारपाड़ा और शाहपुर के बीच एक जगह इस तरह को दो लाशें जमीन खोदकर निकाली गयीं और तालाब से भी लाशें निकालीं।

संध्या समय गांधीजी ने अपना मौन समाप्त किया और प्रार्थना सभा में भाषण किया। आज यहाँ श्रीमती सुचेता कृपलानी, कुमारी वीणा दास तथा अन्य महिला कार्य-कर्त्रियाँ

आकर गान्धीजी से मिलीं। सभा में ये महिलाएँ भी उपस्थित थीं। प्रार्थना सभा में लगभग ३०० आदमी उपस्थित थे, जिनमें मुसलमान भी काफी थे। प्रार्थना के बाद गांधीजी जलालउद्दीन हाजी नामक प्रमुख मुसलमान सज्जन के मकान पर गये, परन्तु हाजी के न होने के कारण अपने स्थान पर वापस चले आये। यहाँ बहुत से मुसलमान आपके दर्शन के लिये एकत्र थे।

गान्धीजी से एक भूतपूर्व फौजी अफसर मिले और उन्होंने राजनीतिक मामलों पर कुछ प्रश्न पूछे। उनके एक प्रश्न के उत्तर में गान्धीजी ने कहा कि अ० भा० कांग्रेस कमेटी ब्रिटिश सरकार के ६ दिसम्बर के वक्तव्य को स्वीकार कर अन्तिम सीमा तक पहुँच गयी है और मुस्लिम लीग के प्रति मित्रता का रुख प्रकट किया है। दूसरे प्रश्न के उत्तर में आपने कहा कि मैं नहीं कह सकता कि काँग्रेस के इस मित्रतापूर्ण संकेत पर मुस्लिम लीग का क्या रुख होगा, मैं तो यही आशा कर सकता हूँ कि लीग भी इसका ऐसा ही प्रत्युत्तर देगी। प्रश्न कर्ता ने यह प्रश्न किया कि काँग्रेस क्या पसन्द करेगी, पाकिस्तान या गृह युद्ध? गान्धीजी ने कहा कि इन दोनों में खराबी है और किसी का यह समझना तो भारी भूल है कि पाकिस्तान गृह-युद्ध भड़का कर प्राप्त किया जा सकता है। प्रश्न कर्ता के यह पूछने पर कि भारत किस प्रकार का शासन पसन्द करेगा समाजवादी या कम्युनिस्ट ढङ्ग का, गान्धीजी बड़े जोर से हँस पड़े और बोले—'पहिले पूर्ण स्वाधीनता तो प्राप्त होने दीजिये।'

महियाज़पुर से नारायणपुर के रास्ते में गांधी जी एक पुल पार कर रहे हैं।

भटियालपुर

[१४ जनवरी]

महात्मा गान्धी शाहपुर से आज अपनी गाँव-गाँव यात्रा के आठवें गाँव भटियालपुर पहुँचे। इन दोनों गाँवों के बीच के एक मील का मार्ग तय करने में गान्धीजी को ८५ मिनट लग गये, क्योंकि आप रास्ते में चार मुस्लिम मकानों पर रुके थे और घर के लोगों से बातें कीं। भटियालपुर में गान्धीजी श्री भारत-चन्द्र नाग वकील के मकान पर ठहरे।

मुसलमानों के उपरोक्त चारों मकानों तक जाने में गान्धीजी को धान के खेतों के बीच से जाने वाले तथा ऊबड़-खाबड़ तीन मील रास्ते को तय करना पड़ा। इन मकानों के पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों को गान्धीजी के आने पर आश्चर्य और साथ ही बड़ी प्रसन्नता हुई। उन लोगों ने अपने घरों से निकल कर गान्धीजी का स्वागत किया। इनमें से दो मकानों पर गान्धीजी से अनुरोध किया गया कि आप अन्दर चलें, क्योंकि घर की स्त्रियाँ आपका दर्शन करना चाहती हैं। गान्धीजी अन्दर गये और स्त्रियों से कुछ देर तक बातें कीं। स्त्रियों ने आपको मालाएँ पहिनायी और स्वागत किया।

इन मकानों में से एक मकान में एक बीमार लड़का गांधीजी के सामने लाया गया। गान्धीजी ने उसकी बीमारी के बारे में

पूछा और उनके साथ के एक डाक्टर ने लड़के की जाँच की तथा दवा लिख दी। डाक्टर सुशीला नायर तथा कुमारी मनु गान्धी अन्दर गयीं और स्त्रियों से बातें कीं।

इनमें से मियाँ जान नामक व्यापारी ने गान्धीजी से कहा कि अपने साथ की इन स्त्रियों—डाक्टर सुशीला नायर और कुमारी मनु गान्धी को आप मेरे मकान के अन्दर भेज दीजिये, क्योंकि घर की स्त्रियाँ इनसे मिलना चाहती हैं। गांधीजी ने मियाँ जान से पूछा कि क्या मैं भी इन लोगों के साथ अन्दर जा सकता हूँ। इस पर मियाँ जान कुछ देर तक सोचता रहा। गान्धीजी ने मुस्करा कर कहा—क्या यह मजहब के खिलाफ होगा। पर वह फिर भी कुछ सोचता रहा और फिर खुशी से गान्धीजी को अन्दर ले गया। गान्धीजी हँसते हुए अन्दर गये।

भटियालपुर के मुसलमानों ने गान्धीजी के आराम का बहुत ख्याल रखा। गांधीजी के प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल इस गाँव में पिछले दो महीने से रह रहे थे और यहाँ सेवा कार्य करते थे। भटियालपुर की स्थिति के बारे में जो विवरण गांधी को दिया गया, उससे विदित हुआ कि इस गाँव में उपद्रव के पहिले हिन्दुओं की संख्या लगभग २०० और मुसलमानों की १७८२ थी। यहाँ के सब हिन्दू मुसलमान बनाये गये और ५०० रु० उनसे मुस्लिम लीग के लिये चन्दा लिया गया।

भटियालपुर में गांधीजी को अलीगढ़ यूनीवर्सिटी मुस्लिम

लीग के सहायक मन्त्री का पत्र मिला, जिसमें उन्होंने गांधीजी को लिखा कि पूर्वी बङ्गाल में आप जो काम कर रहे हैं, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ और अगर आप इजाजत दें, तो मैं भी आपके साथ रहकर काम करूँ। गांधीजीने उन्हें यह उत्तर लिखा कि बड़ी अच्छी बात है, आप जरूर आवें, मगर उसके लिये बङ्गाल के प्रधान मन्त्री मि० सुहरावर्दी से इजाजत ले लें।

मुस्लिम स्त्रियों को नसीहत

भटियालपुर में गान्धीजी ने एक मन्दिर में राधाकृष्ण की मूर्ति फिर से स्थापित की। पिछले उपद्रवों में इस मंदिर पर आततायियों ने आक्रमण कर इसे लूटा था और राधाकृष्ण की मूर्ति उठा ले गये थे। पिछले तीन महीने के अन्दर आज प्रथम बार गाँव में शंख और घड़ियाली की ध्वनि सुनायी दी। गांधीजी जब मंदिर से बाहर आये, तो गाँवों के प्रमुख और वृद्ध मुसलमानों ने गांधीजी के पास आकर यह आश्वासन दिया कि इस मंदिर और मूर्ति की रक्षा की जिम्मेदारी हम लोग अपने ऊपर लेते हैं और साथ ही यह प्रयत्न भी करेंगे कि यहाँ पहिले जो भाई-चारे की भावना हिन्दू मुसलमानों में थी, वह फिर कायम हो जाय और सभी को अपने-अपने मजहब पर चलने की आजादी रहे। सन्ध्या समय जब गान्धीजी टहलने के लिये निकले, तब भी गाँव के मुस्लिम युवक आप से मिले और यह इतमीनान दिलाया कि पिछले अक्टूबर में जो कुछ हुआ था, उसकी पुनरावृत्ति अब न होगी। युवकों ने गांधीजी

को नोआखाली आने के लिये धन्यवाद भी दिया और उसके लिये कृतज्ञता प्रकट की। गांधीजी ने कहा कि अगर आप लोग ये शब्द दिल से कहते हैं और यह महज जबानी नहीं है, तो इसका असर सिर्फ हिन्दुस्तान में ही सीमित नहीं रहेगा बल्कि सारी दुनिया पर फैलेगा।

प्रार्थना सभा में भाषण करते हुए गान्धीजी ने फिर यह बात दुहरायी कि जब तक पूर्वी बङ्गाल के हिन्दू और मुसलमान एकता के साथ नहीं रहने लगेंगे और जब यहाँ के अल्पसंख्यक हिन्दुओं को अपने विश्वास के अनुसार अपने मजहब पर चलने की आजादी नहीं मिलेगी, तब तक मैं पूर्वी बङ्गाल से नहीं हटूँगा। आपने इस बात पर भी फिर जोर दिया कि मैं नहीं चाहता की मेरे दौरे में मेरी हिफाजत के लिये पुलिस और फौजी सिपाही मेरे साथ रहें। बङ्गाल के प्रधान मन्त्री मि० सुहरावर्दी ने मेरी यह बात नहीं मंजूर की है कि वे पुलिस और फौजी सिपाही मेरे साथ से हटा लें। पर अगर यहाँ क मुसलमान मि० सुहरावर्दी को लिखें कि वे शान्ति स्थापित रखेंगे और मेरी हिफाजत खुद करेंगे, तो मेरी यह बात जोरदार हो जायगी कि पुलिस और फौजी लोग मेरे साथ से हटा लिये जायँ।

गान्धीजी ने आज चार मुसलमानों के घर जाने की अपनी बात का उल्लेख किया और कहा कि अगर मुस्लिम स्त्रियाँ मुझसे नही डरतीं, तो उनके मर्द लोग क्यों मुझसे डरें। इस सम्बन्ध में गान्धीजी ने एक बार अली-बन्धुओं के समय का जिक्र किया।

आपने कहा कि उन दिनों मुस्लिम स्त्रियों की एक सभा में मौ० मोहम्मद अली और मौ० शौकत अली अपनी आँखों पर पट्टी बाँधकर बोले थे, मगर मुझे बिना पट्टी बांधे बोलने की इजाजत दी गयी थी।

गान्धीजी ने मुस्लिम स्त्रियों से परदा त्याग देने और अपने अन्दर शिक्षा का प्रचार करने को कहा। आपने कहा कि असली परदा शरीर का नहीं मन का है। अगर आप लोगों के दिमाग का अन्धकार दूर नहीं होता तो बाहरी परदे से कुछ नहीं हो सकता।

गान्धीजी ने मजहबी नसीहत भी दी। आपने कहा कि राम और खुदा एक ही हैं। सिर्फ वे अलग-अलग नामों से पुकारे जाते हैं। आपने कहा कि हिन्दुओं को भी यह समझना चाहिये खुदा और राम एक हैं। आपने कहा कि मैंने सुना है कि बहुत मुसलमान इस डर से अपने घरों से भागे हैं कि उन्हें सजा मिलेगा। मगर सच्चे मुसलमान को तो गुनाह से डरना चाहिये सजा से नहीं जो कि उस गुनाह के लिये मिले। आपने कहा कि इस्लाम बड़ा ऊँचा मजहब है, जिसमें आदमी और आदमी में कोई फर्क नहीं माना जाता। फिर ऐसी हालत में इस्लाम को मानने वाले मुसलमान दूसरे मजहब पर चलने वाले आदमियों को क्यों सतावें और उन्हें अपने मजहब पर न चलने दें। 281

—::&::—

नरायनपुर

[१५ जनवरी]

गान्धीजी भटियालपुर से आज नरायनपुर गये। चलने से पहिले आप उस मन्दिर में गये, जिसमें कल राधाकृष्ण की मूर्ति की पुनर्स्थापना आपने की थी।

नरायनपुर में भी उपद्रव के दिनों में बड़ा विनाश हुआ था। कितने ही मकान तो बिल्कुल धराशायी हो गये। गान्धीजी ने भी मार्ग में दो पूर्णतया विध्वस्त मकानों को देखा और देखकर स्तब्ध रह गये। आप सूर्योदय से पहिले ही नरायनपुर के लिये चले थे, जब कि कुहरा पड़ रहा था। रास्ता भी बड़ा कीचड़दार तथा फिसलाहट का था। नंगे-पैरों बड़ी कठिनाई से गान्धीजी ने मार्ग तय किया। नरायनपुर में आप बादशाह मियाँ अमीन के मकान पर ठहरे।

रास्ते में पड़ने वाले शिवरामपुर और करोइतखाली नामक दो गाँवों में कुछ देर गांधीजी रुके। करोइतखाली में एक मुस्लिम लीगी मुंशी दोरावअली पंडित के मकान पर भी आप कुछ देर ठहरे। डा० सुशीलानायर और कुमारी मनु गांधी मुंशी दोरावअली के मकान के अन्दर गयीं और घर की स्त्रियों से कुछ देर बातें कीं। गाँव के मकतब में भी गांधीजी थोड़ी देर के लिये रुके, जहाँ छोटे लड़के और लड़कियाँ पढ़ रहे थे।

मकतब के मुंशी से आपने पूछा कि लड़के क्या पढ़ रहे हैं। दो छोटी लड़कियों को आपने माला पहिनायी।

नरायनपुर में आधे दिसम्बर तक लूट-पाट होती रही जब कि शरणार्थी लोग लौटने लगे थे। लूटे गये मकानों में एक मकान एक स्कूल के हेड मास्टर का भी था। नरायनपुर के दिये गये विवरण से गांधीजी को मालूम हुआ कि नरायनपुर, शिवराम-पुर तथा धरमपुर इन तीनों गाँवों को मिलाकर ३,७२० आदमियों की अबादी है, जिनमें २,५०० मुसलमान थे और १,२२० हिन्दू। उपद्रव के बाद केवल १२५ हिन्दू इन गाँवों में रह रहे थे और\१७४ बाद में वापस लौटकर आये। यहाँ २२ मकान, २ दवाखाने तथा २ दूकानें जलाई गई थी। पाँच आदमी मार डाले गये थे, जिनमें एक जमींदार भी थे। यहाँ चलने वाले १४४ करघे बिल्कुल नष्ट कर दिये गये थे।

नरायनपुर की प्रार्थना सभा बादशाह मियाँ के मकान पर हुई, जहाँ गान्धीजी ठहरे थे। आपने इस सभा में भाषण करते हुए मुसलमानों के बीच में अपने रहने पर सन्तोष प्रकट किया, परन्तु कहा कि मैं मुस्लिम स्त्रियों से भी मिलना चाहता हूँ, मगर वे मेरे सामने नहीं आतीं। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि मुस्लिम स्त्रियाँ कुमारी मनु गांधी से भी डरती हैं। इतनी छोटी लड़की से डरने को क्या बात है।

आपने कहा कि हिन्दुस्तान की स्त्रियों और खास कर मुस्लिम स्त्रियों में बड़ा अज्ञान है और शिक्षा की बेहद कमी है। इसलिये उनकी शिक्षा का प्रबन्ध होना बड़ा जरूरी है।

हिन्दू स्त्रियों का कर्तव्य है कि वे अपनी मुस्लिम बहिनों में शिक्षा का प्रचार करें और इस मामले में उनकी सहायता करें। गान्धीजी ने मुस्लिम स्त्रियों को परदा त्याग करने की सलाह दी।

गांधीजी ने गिरे हुए मकानों को फिर से बनाने के मामले में सरकारी सहायता के सम्बन्ध में अतिरिक्त जिला मैजिस्ट्रेट मि० जमन से बातें की। मि० जमन ने कहा कि सरकारी सहायता कम है, जिसे बढ़ाने के लिये मैंने सरकार को लिखा है और कर्ज देने को भी कहा है। मैं हर घर के लोगों को बर्तन और अन्य चीजें खरीदने के लिये भी कर्ज देने की सिफारिश सरकार से की है।

—::*::—

रामदेवपुर

[१६ जनवरी]

आज प्रातःकाल महात्मा गांधी ने नरायनपुर के अपने मुस्लिम मेजबान से विदा ली और रामदेवपुर के लिये रवाना हुए। बादशाह मियाँ और गाँव के कुछ अन्य मुसलमानों ने गान्धीजी के प्रति बड़ी कृतज्ञता प्रकट की कि आपने उनकी मेहमानदारी स्वीकार की। गांधीजी जब चलने लगे, तो सब मुसलमानों ने आप से 'नमस्ते' कहा जिसके जवाब में गान्धीजी ने 'सलाम' कहा। तीन मील पैदल चलकर आप एक घण्टे से कुछ अधिक समय में रामदेवपुर पहुँचे।

रास्ते में गांधीजी कुछ मिनट कचहरी बाड़ी में रुके, जो एक जमींदार की थी और जहाँ उपद्रव के दिनों में कुछ घटनाएँ घटी थीं। कचहरी के नायब मुसलमान ने गांधीजी का स्वागत किया और कुछ फल भेंट किये। गान्धीजी ने कहा—'मुझे तो केवल आपका प्रेम चाहिये और कुछ नहीं चाहिये। रास्ते में गान्धीजी खालिसपुर में एक हिन्दू के मकान पर भी रुके। वहाँ गान्धीजी का चरण धोया गया और स्त्रियों ने आरती उतारी।

मार्ग में गांधीजी को कई पुल पार करने पड़े, जो आपकी सुविधा के लिये बनाये गये थे। रास्ते के घरों के निवासी लोग

निकल कर आपके स्वागत के लिये खड़े थे और जब आप उनके दरवाजों पर होकर गुजरे, तो सबने जय-ध्वनि की। कुछ जगह मुसलमानों की भी भीड़ खड़ी थी। ये लोग दूसरे गाँवों के थे, जो गांधीजी के रास्ते में नहीं पड़ते थे। बहुत आदमी इनमें से गांधीजी के साथ हो लिये और शेष लोग आपका अभिवादन कर वापस चले गये।

यहाँ के बाद गांधीजी कुछ तेजी से चले और थोड़ी देर में रामदेवपुर पहुँच गये। गाँव में बहुत से लोग एकत्र होकर झाँझ और करताल सहित कीर्तन कर रहे थे, जो उपद्रवों के बाद आज प्रथम बार गाँव में सुनायी दिया था। यहाँ गांधीजी श्री रमणी मोहननाथ नामक सज्जन के घर में ठहरे।

रामदेवपुर पहुँचने पर गांधीजी के चरण धोये गये और आरती उतारी गयी। ग्रामीण लड़कियों और लड़कों ने आपको ग्राम्य-नृत्य दिखाये, जो श्री कनु गांधी और श्री विश्वरञ्जन सेन द्वारा तैयार किये गये थे। श्री कनु गांधी ने रामदेवपुर को अपने कार्यों का केन्द्र बनाया था और यहाँ एक कैम्प भी स्थापित किया था।

रामदेवपुर की प्रार्थना-सभा बड़ी महत्वपूर्ण थी, जिसमें भाषण करते हुए गांधीजी ने देश के सामने उपस्थित अत्यन्त महत्वपूर्ण राजनीतिक समस्या पर अपना मत प्रकट किया। नरायनपुर में एक मुस्लिम सज्जन द्वारा किये गये प्रश्न का उत्तर देते हुए गांधीजी ने कहा कि आसाम, सीमा प्रान्त और पञ्जाब के सिक्खों को जो मैंने प्रान्तों के गुट में शामिल न होने अथवा

शामिल होने पर यह देखने के बाद कि बहुमत दल द्वारा उनके साथ न्याय का व्यवहार नहीं होता, तो गुट में से निकल आने की सलाह दी है, वह मेरे हिन्दू-मुस्लिम एकता के आदर्श के विरुद्ध नहीं पड़ती। आपने कहा कि ब्रिटिश मंत्रिदल की योजना को स्वीकार करना या न करना अपनी स्वेच्छा पर है, जिसे स्वीकार करने के लिये किसी दल को मजबूर नहीं किया जा सकता। आपने अ० भा० कॉंग्रेस कमेटी द्वारा पास किये गये प्रस्ताव का उल्लेख किया, जिसमें मंत्रिदल की योजना को पूर्णरूप से स्वीकार किया गया है।

आपने कहा कि जो सलाह मैंने आसाम, सीमा प्रान्त और पञ्जाब के सिक्खों को दी है, उसमें ऐसी कोई बात नहीं है, जो मुस्लिम लीग को विधान सम्मेलन में शामिल होने से रोके। आपने यह आशा प्रकट की कि मुस्लिम लीग विधान सम्मेलन में जायगी और वहाँ तर्क उपस्थित कर अपना मत स्वीकार करायेगी। अन्यथा कुछ प्रान्तों या दलों के विधान सम्मेलन में शामिल न होने से उसका काम नहीं रुक सकता।

आपने कहा कि आसाम को उसकी इच्छा के विरुद्ध क्यों बंङ्गाल में मिलाया जाय और सीमा प्रान्त या सिक्खों को पञ्जाब और सिंध में शामिल होन के लिये मजबूर किया जाय।

दूसरा प्रश्न गांधीजी से यह किया गया था कि आप बिहार क्यों नहीं जाते, जहाँ मुसलमानों का सब कुछ लुट गया है? इस प्रश्न के उत्तर में गान्धीजी ने कहा कि बिहार में स्वयं जाने की अपेक्षा उससे अधिक काम वहाँ के मुसलमानों के लिये मैं यहीं

से कर रहा हूँ। वहाँ के मंत्रियों को मैं अक्सर सलाह दिया करता हूँ और वे उसका पालन कर बिहार के मुसलमानों को सब सुविधा पहुँचा रहे हैं। इसके अतिरिक्त मैं वहाँ न जाकर यह दिखलाना चाहता हूँ कि बिहार सरकार मेरे बिना जाये, मुसलमानों के लिये कितना अधिक करती है, जब कि मुस्लिम लीग के आदमी बिहार के मुसलमानों को बिहार वापस जाने और सरकारी सहायता लेने से रोक रहे हैं और बिहार सरकार के काम में बाधा पहुँचा रहे हैं।

तीसरा प्रश्न गान्धीजी से यह किया गया था कि जब आप अहिंसा के अवतार और आधुनिक संसार के बुद्ध कहे जाते हैं, तो देश के विभिन्न सम्प्रदायों में होनेवाली लड़ाई और रक्तपात क्यों नहीं रोक सकते। इसके लिये गान्धीजी ने यह उत्तर दिया कि मैं तो एक साधारण मनुष्य हूँ; जिसे केवल अपने काम का ही अनुभव है। बुद्ध या दूसरे पैगम्बर जो हो गये हैं, वे भी युद्धों को रोकने का प्रचार करते हुए चले गये। मैं जो लड़ाइयाँ नहीं रोक सका हूँ वह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मुझमें कोई अधिक बड़ी शक्ति नहीं है। परन्तु जैसा कि मैं बारम्बार कह चुका हूँ, मैं तब तक बङ्गाल नहीं छोड़ना चाहता जब तक कि दोनों सम्प्रदाय अपने कार्यों द्वारा यह न दिखा दें कि वे सगे भाई की तरह हैं और पूरी शान्ति तथा मित्रता के साथ रहते हैं।

लूट का माल लौटाया जाय

चौथा प्रश्न यह किया गया था कि आप हिंदू और मुसलमानों के बीच मित्रता के सम्बन्ध की आशा कैसे कर सकते हैं,

जब कि हिंदू लोग हत्या, आगजनी और लूट के अपराध के अपराधियों की गिरफ्तारी तथा उन पर मुकदमा चलाने की बात का आन्दोलन कर रहे हैं। गान्धीजी ने इस प्रश्न के उत्तर में यह स्वीकार किया कि ये शिकायतें ठीक नहीं हैं। परन्तु आपने शिकायत करने वालों के साथ सहानुभूति प्रकट की और यह कहा कि जब तक अपराधी लोग गिरफ्तारी और मुकदमे से बचते रहते हैं और नोआखाली के मुसलमान अपराधियों पर यह जोर नहीं डालते कि वे अपने नाम बता दें यह मन-गढ़न्त दिल से निकाल देना चाहिये कि यह सब उपद्रव गुण्डे लोगों का था। क्रोध के पागलपन में किये गये ये काम पेशेवर गुण्डों के काम नहीं हैं। ऐसे अवसर पर किये गये उत्पात सभी लोगों द्वारा किये गये हैं। मुझे यह देखकर खुशी होगी अगर मुस्लिम लोकमत उन अपराधियों को अदालत के सामने नहीं बल्कि लोकमत की अदालत के सामने लाने का प्रयत्न करेगा। अपराधी लोग भी पश्चात्ताप प्रकट करें और लूट के माल वापस लौटा दें। और जिनके साथ अत्याचार किये हैं, उन्हें यह विश्वास दिलावें कि वे अब सताये नहीं जायँगे और अब उन्हें डरने की कोई बात नहीं है। मुस्लिम लोकमत भी इस बात की गारंटी दे कि उपद्रवी लोग किसी को सताने का साहस नहीं करेंगे। ऐसा होने पर ही हिन्दुओं से कहा जा सकता है कि वे अपने गाँवों को सुरक्षित से वापस चले आवें।

—::※::—

पारकोट

[१७ जनवरी]

रामदेवपुर से गांधीजी आज सवेरे पौन घण्टे में दो मील चल कर पारकोट पहुँचे। आज जब गांधीजी रामदेवपुर से रवाना हुए, तो साथ में बहुत थोड़े लोग चले थे, किन्तु आप ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते गये, त्यों-त्यों गाँवों के आदमी आपके साथ होते गये और पारकोट पहुँचते-पहुँचते साथ के लोगों की संख्या ५०० से ऊपर हो गयी। गांधीजी के आगे और पीछे स्थानीय लोगों के दल थे, जो बाजों के साथ रामधुन गा रहे थे। रास्ते में मुस्लिम पुरुषों और तालाबों पर स्त्रियों के दल भी गांधीजी के दर्शन के लिये खड़े थे। गांधीजी के पीछे चलने वाले अनेक हिन्दू यह कह रहे थे कि शान्ति चाहे स्थापित हो या न हो, गांधीजी के आने से समस्त नोआखाली तीर्थ बन गया है और वे अपनी कष्ट कथाएँ वर्तमान युग के सर्वश्रेष्ठ आदमी को सुना सके हैं।

पारकोट जाते समय गांधीजी दासघरिया गाँव से होकर गुजरे और वहाँ के अपने पूर्णतया ध्वस्त तथा जलाये हुए मकानों को देखा। रास्ते में आपको कई लम्बे और तङ्ग पुल पार करने पड़े। सड़क के प्रत्येक घुमाव पर तिरंगे झण्डे और फूल-पत्तियों से सजे फाटक बनाये गये थे। कई फाटकों पर 'बापूजी स्वागतम्' लिखा था।

पारकोट में गांधीजी श्री चन्द्रकुमार सील के मकान पर ठहरे। वहाँ घर की स्त्रियों ने आरती उतार कर आपका स्वागत किया।

आज गांधीजी ने पारकोट से एक मील दूर जमीरटोली गाँव में प्रार्थना की। सभा धान के खेत में हुई। अनेक मुसलमान खेत की मेड़ों पर खड़े देख रहे थे। गांधीजी ने उन मुसलमानों को सभा में आने के लिये बुलाया। वे भी आकर बैठ गये और प्रार्थना तथा गांधीजी का भाषण सुना। प्रार्थना के बाद गान्धीजी पास के एक गाँव में दो हिन्दुओं के घर गये। इनमें से एक घर के लोगों ने आपसे मूर्ति स्थापित करने की प्रार्थना की। आपने कहा कि सच्चे हृदय से ईश्वर का नाम लेना मूर्ति स्थापित करने की अपेक्षा अधिक महत्व रखता है। इसके बाद गान्धीजी एक दूसरे गाँव में एक मुसलमान के घर गये। आज की सभा में और गान्धीजी के साथ गाँवों के भ्रमण में कर्नल निरंजन सिंह गिल भी थे।

पारकोट के ग्राम सेवा-सङ्घ के स्वयंसेवकों की सभा में भी गान्धीजी ने भाषण किया। यहाँ आपने कहा कि तलवार का जवाब तलवार से भी दिया जा सकता है, पर उससे कोई लाभ नहीं होता। इसके विपरीत अहिंसा बहुत काम करती है। आप लोग अहिंसात्मक बनिये और किसी से डरिये नहीं। यदि आप सब लोग अपने दिलों से भय निकाल दें, तो आप लोग ४२ स्वयंसेवक ४२ ० के बराबर हो जायँ।

यह उपदेश देने के बाद गान्धीजी ने स्वयंसेवकों से पूछा कि

आप लोगों के दिलों से भय निकला या नहीं। इस पर उनमें से एक स्वयंसेवक ने कहा कि अब हमें कोई भय नहीं रहा। गांधीजी ने कहा कि स्वयंसेवकों को कोई भय नहीं होना चाहिये, चाहे वे अकेले भी रहें। चाहे कुछ भी हो आप लोगों को कभी अपना सिर नहीं झुकाना चाहिये और भय तथा बेइज्जती नहीं बर्दाश्त करनी चाहिये। आप लोग ऐसा काम करें जिससे ग्रामीणों को लाभ हो। आपको मुसलमानों से भी मिलना-जुलना चाहिये और उनसे भाई तथा मित्र का-सा व्यवहार करना चाहिये। लाठी का जवाब लाठी से नहीं देना चाहिये, क्योंकि लाठी की सहायता से किसी पर विजय नहीं प्राप्त की जा सकती बल्कि प्रेम से वह प्राप्त हो सकती है।

स्वयंसेवक लोग जब चलने लगे, तो उन्होंने महात्माजी से आशीर्वाद माँगा। महात्माजी ने कहा—आप लोगों को मेरा आशीर्वाद प्राप्त है, पर वह तभी जब आप लोग मेरी सलाह पर चलें।

स्त्रियों की सभा में भाषण

गांधीजी ने पारकोट में भी स्त्रियों की अलग एक सभा में भाषण किया। आपने कहा कि नोआखाली में जो कुछ हुआ है, वह ईश्वर का श्राप है और वह भी केवल बङ्गाल के लिये नहीं बल्कि सारे देश के लिये। अतः हम लोगों को अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिये और ऐसी बात नहीं करनी चाहिये, जिससे किसी का दिल दुखे। हिन्दू स्त्रियों को चाहिये कि वे

जात-पाँत का भेद-भाव न करें और सब के साथ बराबरी का व्यवहार करें, सभी जाति की स्त्रियों से समान रूप से मिलना चाहिये। मुस्लिम स्त्रियों से भी मिलना चाहिये। यदि हिन्दू स्त्रियों का मुस्लिम स्त्रियों से मेल-जोल होता, तो नोआखाली में जो घटनाएँ हुई हैं, बहुत कुछ न होती।

आपने स्त्रियों को यह भी सलाह दी कि वे अपना समय व्यर्थ न खोया करें। जब उन्हें घर के काम से फुर्सत मिले, तो वे चरखा चलावें, अपने गाँव की और अपने तालाबों की सफाई करें।

गांधीजी के साथ सिक्ख वालंटियरों का एक दल उसी समय से रहता था, जब से आपने यात्रा शुरू की थी परन्तु पारकोट में वह दल तोड़ दिया गया और आजाद हिंद फौज के सरदार जीवन सिंह अकेले गांधीजी के साथ रह गये। शेष सिक्ख वालंटियरों को कर्नल निरंजन सिंह गिल ने नोआखाली के गाँवों में शान्ति स्थापना कार्य के लिये भेज दिया। सरदार निरंजन सिंह ने पञ्जाब से ६६ सिक्ख स्वयंसेवकों का एक दल पूर्वी बङ्गाल में काम करन के लिये भेजा था, जिनमें से एक दर्जन स्वयंसेवक गांधीजी के साथ रहा करते थे।

पिछले २१ दिनों से अनशन करने वाली अमतुस सलाम की दशा का समाचार गांधीजी को पारकोट में पहुँचाया गया। डा० सुशीला नायर ने सिरोंधी गाँव में जाकर अमतुस सलाम की दशा की जाँच की और उसे संतोषजनक पाया। गांधीजी को अमतुस सलाम के भाई का एक तार बम्बई से मिला था, जिसमें उन्होंने

अपनी बहिन की दशा के संबंध में गांधीजी से पूछा था। गांधीजी ने उत्तर दिया कि उनकी दशा संतोषजनक है, मैं उनकी पूरी जानकारी रखता हूँ और आपको चिन्तित होने की कोई बात नहीं है।

डा० सुशीला नायर ने गान्धीजी को एक पत्र अमतुस सलाम की दशा के सम्बंध में लिखते हुए यह भी सूचित किया है कि सिरोंधी के मुस्लिम निवासियों पर अमतुस सलाम के अनशन का बहुत बड़ा असर पड़ा है और वे पूरा प्रयत्न कर रहे हैं कि हिंदुओं की चुराई गयी पूजा की तलवार को शीघ्र ही लाकर दे दी जाय और अमतुस सलाम का अनशन जल्द से जल्द समाप्त हो।

बादलकोट

[१८ जनवरी]

महात्माजी ने अपने गाँव-गाँव के दौरे के १२ वें दिन में आज प्रातःकाल ८ बजकर २० मिनट पर बादलकोट नामक गाँव में प्रवेश किया। यह गाँव पारकोट के उत्तर पूर्व में दो मील पर है।

बादलकोट के मार्ग में एसोसिएटेड प्रेस का सम्वाददाता भी साथ में था। गांधीजी ने सम्वाददाता से बातें करते हुए कहा—'यदि मेरा यहाँ का मिशन असफल भी हुआ, तो इसका अर्थ यह नहीं होगा कि अहिन्सा ही असफल हो गयी। यह तो मेरी अहिन्सा की असफलता होगा, क्योंकि मैं तो यहाँ अपनी अहिन्सा की परीक्षा ले रहा हूँ।'

नोआखाली के इस हिस्से में इन दिनों भयानक सरदी पड़ रही थी। गांधीजी आज की यात्रा में पहिले २० मिनट तक धीरे-धीरे चलते रहे क्योंकि आप इस घोर सरदी का अनुभव कर रहे थे। परन्तु कुछ देर तक चलने के बाद आपने पग बढ़ा दिया और वही अपनी रोज की रफ्तार से चलने लगे। ४५ मिनट में आपने दो मील की यात्रा समाप्त कर ली।

मार्ग में गीशनपुर और रामदेवपुर नामक दो गाँव पड़े, जिनमें सवर्ण हिन्दू रहते हैं। रामदेवपुर गाँव में गांधीजी आलिमउद्दीन नामक एक मुस्लिम सज्जन के मकान पर गये।

यहाँ पहुँचने पर और गाँव का नाम मालूम होने पर गांधीजी को आश्चर्य हुआ आपने कहा कि अभी तो एक गाँव इस नाम का पीछे मिल चुका है। रामदेवपुर को जाने वाली सड़क का एक फर्लाङ्ग का हिस्सा अच्छा नहीं था, जिसे गांधीजी के आराम से चलने के ख्याल से वहाँ के मुसलमानों ने पिछले दिन बना दिया था। इस सम्बंध में स्थानीय मुस्लिम नेता ने आकर गांधीजी से कहा कि यह सड़क बहुत खराब थी, पर यहाँ के मुसलमानों ने इस ख्याल से उसे दुरुस्त कर दिया कि आपको चलने में तकलीफ न हो। इस पर गांधीजी ने कहा कि आप लोगों ने बड़ी मेहरबानी की। खुदा आपका भला करे। सड़क पर कुछ बुजुर्ग मुसलमान खड़े थे, जिनसे गांधीजी ने दुआ सलाम की और कुछ बात-चीत भी की।

इस यात्रा में गांधीजी बंगला बोली सीखने का बराबर प्रयत्न करते रहे और जब कोई नया शब्द सुनाई देता था, उसे सीख लेते थे।

बादलकोट में गांधीजी एक डाक्टर के यहाँ ठहरे। पिछले उपद्रव में इन डाक्टर को भी क्षति उठानी पड़ी थी।

मि० जिन्ना के उपदेश का उल्लेख

गांधीजी ने बादलकोट की प्रार्थना-सभा में भाषण करते हुए मुसलमानों से कहा कि यदि पाकिस्तान की स्थापना उत्तम आचरण और उच्च आदर्शों पर की जाय, तो प्रत्येक व्यक्ति उसका स्वागत करेगा। आपने मि० जिन्ना के अभी हाल में

कराची में दिये गये भाषण का उल्लेख किया और उसका वह हिस्सा सुनाया जिसमें मि० जिन्ना ने यह कहा था कि—'मुसलमानों को अपने अन्दर भारी जिम्मेदारी और न्याय की भावना उत्पन्न करनी चाहिये और अन्याय की बात नहीं करनी चाहिये। अगर अपनी अन्तरात्मा से पूछने पर कोई बात बुरी मालूम हो तो उसे नहीं करना चाहिये। अगर मुसलमान लोग मेरी इस सलाह पर चले, तो उन्हें पाकिस्तान लेने से कोई रोक नहीं सकता।'

गांधीजी ने कहा कि चूँकि इसमें कोई बल प्रयोग की बात नहीं है और चूंकि पाकिस्तान उन आदर्शों पर स्थापित किया जायगा, तो प्रत्येक मनुष्य ऐसे राज्य का स्वागत करेगा चाहे उसे जिस नाम से पुकारा जाय। आपने कहा कि लूट, आगजनी, जबरदस्ती, धर्म-परिवर्तन का कोई भी समझदार आदमी समर्थन नहीं करेगा।

गांधीजी ने कहा कि मि० जिन्ना ने यह भाषण कराची में लड़कियों का एक स्कूल खोले जाने के अवसर पर दिया था, जिसका उद्घाटन मि० जिन्ना की बहन मिस फातमा जिन्ना ने किया था। उस भाषण में मि० जिन्ना ने सिन्ध के शिक्षा मंत्री से कहा था कि वे अविद्या दूर करने के लिये कमर कस कर कोशिश करें और किसी मुस्लिम लड़के लड़की को बिना पढ़ा या बिना पढ़ी न रहने दें। गांधीजी ने कहा कि अगर सब लोग पढ़ लिखकर समझदार हो जायँ तो मुल्क में अमन हो जाय और सभी लोग एकता से रहने लगें। गांधीजी ने कहा पर साथ ही यह भी है कि सिर्फ पढ़ लिख लेने से ही कोई आदमी समझदार

नहीं हो जाता, क्योंकि ऐसे लोगों की कमी नहीं है जिन्होंने बहुत किताबें पढ़ी हैं और इम्तहान पास किये हैं। असली शिक्षा और पढ़ना तो वह है, जिससे लोग काम लें और जीवन की असली शिक्षा ग्रहण करें।

गांधीजी ने आगे कहा कि पुरुष और स्त्री समाज के दो अङ्ग हैं और अगर एक अङ्ग लुञ्ज-पुञ्ज है, तो सारे शरीर को उससे हानि उठानी पड़ती है। इसलिये अगर पुरुष लोग पढ़ लेते हैं और स्त्रियाँ नहीं पढ़तीं तो उससे समाज का हित नहीं हो सकता। इसलिये यह बदकिस्मती ही है कि हमारी बहिनें अविद्या और अंधिकार में पड़ी रह जायँ। हिन्दू स्त्रियाँ तो यहाँ प्रार्थना में ज्यादा तादाद में आती हैं, तो मुस्लिम स्त्रियाँ और स्त्रियाँ न सही, तो मुस्लिम लड़कियाँ ही क्यों प्रार्थना में न आवें? इसलिये हिन्दू स्त्रियों का यह फर्ज है कि वे अपनी मुस्लिम स्त्रियों के पास नितान्त सेवा की भावना से जायँ और उन्हें शिक्षित बनावें।

इसके बाद पुरुषों को सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा कि उन्हें मि० जिन्ना की सलाह याद रखनी चाहिये और उस पर अमल करना चाहिये, क्योंकि वह सलाह किसी खास सम्प्रदाय के लिये नहीं है। उसका महत्व सार्वभौतिक, सभी के लिये है। जो सलाह मि० जिन्ना ने लोगों को अपने अन्दर लाने की दी है, वह लड़ाई लड़ने की नहीं है, बल्कि न्याय और सत्य की है और उसका यह अर्थ है कि जब कभी न्याय न होता हो, उसके लिये खतरा हो, तो लोगों को चाहिये कि वे जंगलीपन के तरीके अखत्यार न कर समझदारी और तर्क से काम लें और उसी

ख्याल से अपने झगड़े तय कर लें, चाहे वह किसी एक खास आदमी का हो और चाहे सार्वजनिक हो।

गांधीजी ने अपने भाषण के अन्त में कहा कि अभी प्रार्थना में आने से पहिले मेरे पास वह मुसलमान सज्जन आये, जिनके मकान पर रास्ते में मैं रुका था। उन्होंने मुझसे कहा था कि मि० जिन्ना से और आप में समझौता हो जाय, तो मुल्क में सब सुलह हो जाय। गांधीजी ने कहा कि मैं अपने को कोई बड़ा आदमी नहीं समझता। मैं मि० जिन्ना के पास कई बार गया, पर कोई नतीजा नहीं निकला, जैसा कि सब लोग जानते हैं। असल बात यह है कि नेता तो जनता ही बनाती है। इसलिये अगर हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को मेरी यह सलाह है कि वे अपने रोज के झगड़े तय करने के लिये मुस्लिम लीग, कांग्रेस या हिन्दू सभा के पास न जायँ और आपस में ही तय कर लें। अगर अपने झगड़े वे आपस में ही तय कर लेंगे, तो नेता लोग भी समझ जायँगे और वे उनकी बातों में दखल न देंगे।

हज़ारा की घटना पर नेहरूजी का तार

सीमा प्रान्त के हज़ारा जिले में मुसलमानों द्वारा उपद्रव होने का समाचार गांधीजी को १३ जनवरी को मिला था। यह समाचार सुनकर फौरन एक तार पंडित जवाहरलाल नेहरू के पास भेजा। उस तार का जवाब जो नेहरूजी ने भेजा था, वह बादलकोट में गांधीजी को मिला। तार नेहरूजी और सरदार पटेल दोनों नेताओं की ओर से था, जो इस प्रकार था—'हज़ारा जिले में कितनी ही भीषण घटनाएँ घटी हैं। सीमा प्रान्तीय सरकार

ने उपद्रवियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की है और सरकार शरणार्थियों की सहायता भी कर रही है। वहाँ की परिस्थिति अब शान्त है।'

गांधीजी को नेहरूजी और सरदार पटेल का यह तार पाकर बड़ा सन्तोष हुआ।

स्वयं मुसलमानों ने लूट का माल वापस दिलाया

बादलकोट में मोहम्मद आसफ भूपाँ ने एक सम्वाददाता से बातें करते हुए कहा कि मुसलमानों का फर्ज है कि वे महात्मा गांधी के शान्ति और सुलह के प्रयत्न को सफल बनावें। जो कुछ हुआ है, वह सब हमें भूल जाना चाहिये।

उन मुस्लिम सज्जन ने यह भी कहा कि मुझे और गाँव के दूसरे मुसलमानों ने यह वचन दिया है कि अल्प संख्यक हिन्दुओं के जान-माल की हिफाजत की जाय। हिन्दुओं के लूटे गये माल हम लोगों ने कई जगहों से ढूँढ कर निकाला है, गहरे तालाबों और पोखरों से भी माल निकाला गया है और हिन्दुओं को वापस किया गया है।

मोहम्मद आसफ भूपाँ ने गांधीजी को अपने घर भी निमंत्रित किया था। गांधीजी के स्वागत में उन्होंने अपना मकान खूब सजाया था। महात्माजी वहाँ एक ऊँचे चबूतरे पर बैठाये गये थे। जिसे मुसलमानों ने बनाया था।

बादलकोट में गांधीजी से मिलने वाले प्रमुख व्यक्तियों में डा० अमिय चक्रवर्ती, डा० एन० के० सरकार तथा त्रिपुरा की श्रीमती निरुपमा देवी थीं।

अटखोरा

[१९ जनवरी]

महात्मा गांधी अपनी गाँव-गाँव यात्रा के १४ वें गाँव अटखोरा में आज प्रातःकाल ८ बजकर ४० मिनट पर पहुँचे। आप बादलकोट से सवेरे साढ़े सात बजे चले और ७० मिनट में ढाई मील का रास्ता तय किया।

रास्ते में गांधीजी एक मकतब के पास रुके। मकतब में छोटी-छोटी मुस्लिम लड़कियाँ कुरान पढ़ रही थीं। गांधीजी ने लड़कियों का पढ़ना दिलचस्पी के साथ सुना। आप वहाँ करीब १० मिनट तक रहे।

बादलकोट में नोआखाली के सुपरिनटेंडेंट पुलिस मि० अब्दुल्ला आज सवेरे गांधीजी के पास आये और अटखोरा तक आपके साथ गये। अटखोरा में गांधीजी ठाकुरबाड़ी में ठहरे और श्री कामिनी शर्मा के मेहमान रहे।

अटखोरा से सिरोंधी नामक गाँव केवल तीन मील की दूरी पर है, जहाँ गांधीजी की मुस्लिम शिष्या कुमारी अमतुस सलाम हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के अर्थ मुसलमान उपद्रवियों द्वारा उठा ले जायी गई एक हिन्दू की पूजा के काम में आने वाली तलवार वापस दिलाने के लिये अनशन कर रही हैं। अटखोरा से गांधीजी सिरोंधी ही जाने को थे, इसलिये अटखोरा में गांधीजी का अधिक ध्यान अमतुस सलाम की ओर था और अधिकतर चर्चा उन्हीं की थी।

अटखोरा की प्रार्थना-सभा के भाषण में भी गांधीजी ने

अमतुस सलाम के अनशन का उल्लेख ज्यादातर किया और उनके अनशन का महत्व बताया। आपने कहा कि सच्चे अर्थों में अमतुस सलाम ही असली मुसलमान हैं, जो दूसरे मजहब के लोगों का सताया जाना बरदाश्त नहीं कर सकतीं।

प्रार्थना के बाद गांधीजी अटखोरा गाँव में रहने वाले १०० वर्ष बूढ़े एक हिन्दू तथा ९० वर्ष की उसकी पत्नी से मिलने के लिये उसके मकान पर गये। इन दोनों की बड़ी उत्कंठा गांधीजी का दर्शन करने की थी, मगर अधिक अवस्था के कारण गान्धीजी के पास तक नहीं आ सकते थे। यह सुनकर गान्धीजी स्वयं उनके मकान पर गये। मकान पहुँचने पर गान्धीजी के स्वागत में आपको एक माला पहिनाने के लिये लाया गया, परन्तु उसके पहिनाये जाने से पहिले ही गान्धीजी ने उसे अपने हाथ में ले लिया और वह माला उस १०० वर्ष के वृद्ध को पहिना दी, क्योंकि वह आयु में गान्धीजी से बड़ा था।

संध्या समय टहलने के लिये निकलने पर गान्धीजी गाँव के चरखा स्कूल में गये। यहाँ गाँव के लड़के बाँस के बने हुए चरखे से सूत कात रहे थे। यह देखकर गांधीजी बहुत प्रसन्न हुए।

अटखोरा गाँव में एक घटना गांधीजी के आने के एक दिन पहिले घटी। गांधीजी के आगमन के संबंध में तैयारी करने वाले एक हिंदू को उपद्रवियों ने मारा-पीटा और कहा कि गाँव से चले जायँ। इस घटना की रिपोर्ट रामगंज थाने में कर दी गई थी।

सिरोंधी

[२० जनवरी]

अमतुस सालम का अनशन समाप्त

महात्मा गांधी हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित कराने के लिये एक नया प्रयोग करते हुए नोआखाली की यात्रा के लिये जो निकले हैं, उसमें उनके प्रयत्न में आज सिरोंधी पहुँचने पर अंतिम सफलता मिली, जब कि वहाँ के प्रमुख मुसलमानों ने महात्मा गांधी को एक लिखित आश्वासन दिया कि वे लोग ईमानदारी के साथ यह प्रयत्न करेंगे कि ऐसा साधारण दशा फिर आ जाय जब कि दोनों सम्प्रदायों में एकता हो जाय और अपने-अपने विश्वास के अनुसार वे धार्मिक कृत्य कर सकें। यह आश्वासन मिलने पर गांधीजी ने बीबी अमतुस सलाम को अनशन समाप्त करने की सलाह दी और उन्होंने गान्धीजी की आज्ञा से अनशन समाप्त किया।

गान्धीजी आज अटखोरा से कुछ और जल्दी सिरोंधी के लिये रवाना हुए और सवेरे साढ़े आठ बजे सिरोंधी पहुँच गये। रास्ते में देहाला, शहरपाड़ा और साकनाला नामक तीन गाँव पड़े। गांधीजी मार्ग में तीन मुसलमानों के घरों पर थोड़ी-थोड़ी देर रुके। डा० सुशीला नायर और श्रीमती अवा गांधी उन मकानों के अन्दर गयीं और मुस्लिम स्त्रियों से बात-चीत की। इनमें से पहिला मकान चाँद मियाँ का था, जिन्होंने गान्धीजी से प्रार्थना की थी कि सिरोंधी जाते समय मेरे मकान पर आने की तकलीफ कीजियेगा। यहाँ गान्धीजी का स्वागत

किया गया, मालाएँ पहिनायी गयीं और कुछ फल भेंट किये गये। गांधीजी का आज मौन-दिवस था, अतः आपने एक पत्थर पर यह लिख दिया कि—'आपने मुझे जो निमंत्रित किया, यही बहुत है और यही मैं चाहता हूँ। दूसरे दो मकान अब्दुल लतीफ पाल और फजल हककारी के थे।

नोआखाली की यात्रा में आज पहिले-पहल 'वंदेमातरम्' और 'अल्लाहो अकबर' के नारे साथ-साथ लगाये गये। रामधुन भजन और स्वर्गीय महा कवि टैगोर का एक गाना भी गाया जा रहा था जिसका आशय यह था कि 'अगर तुम्हारी बात कोई न सुने, तो अकेले अपने रास्ते पर चलते जाओ।

गान्धीजी सिरोंधी पहुँचकर ठाकुरवाड़ी में ठहरे, जहाँ एक, कमरे में पड़ी हुई बीबी अमतुस सलाम २५ दिनों से अनशन कर रही थीं। ठाकुरबाड़ी पहुँचते ही गान्धीजी उस कमरे में गये। मौन रहने के कारण गान्धीजी अमतुस सलाम से कुछ बोल नहीं सके। बगल में चुपके से बैठ गये और प्रेमपूर्वक उनका हाथ अपने हाथ में लिया तथा माथे पर हाथ फेरा।

गान्धीजी के सिरोंधी पहुँचने से एक दिन पहिले नोआखाली के सुपरिन्टेंडेंट पुलिस वहाँ आये थे। स्थानीय आस-पास के गाँवों के प्रमुख मुसलमान आज दिन में बराबर अमतुस सलाम के पास आकर उन्हें देखते रहे, क्योंकि आज अमतुस सलाम की हालत नाजुक थी। एक मौलवी ने कहा—हम कभी न चाहेंगे कि ऐसी खुदा-परस्त मुस्लिम बीबी का यहाँ इन्तकाल हो जाय। अगर ऐसा हुआ, तो यह बात हम लोगों के लिये बड़ी

शर्म की होगी। इसलिये हमें पूरी कोशिश करनी है कि आज गान्धीजी के यहाँ रहते हुए यह अनशन बन्द हो जाय।

दो पहर के बाद तीसरे पहर लगभग २० बुजुर्ग मुसलमान जिनका आस-पास के गाँवों पर बड़ा प्रभाव था, गान्धीजी की कुटिया के आँगन में इकट्ठा हुए और गान्धीजी वहीं एक किनारे एक चारपाई पर पड़े अपने मुँह तथा शरीर पर मिट्टी का पलस्तर चढ़ाये प्राकृतिक चिकित्सा कर रहे थे। मुस्लिम नेताओं की सभा में अमतुस सलाम के अनशन समाप्त करने के उपाय पर विचार हो रहा था और इधर अमतुस सलाम की चारपाई के पास एक मौलवी कुरान का पाठ अमतुस को सुना रहे थे।

गांधीजी ने दो पहर के बाद अपना मौन व्रत समाप्त कर दिया। आपने ठाकुर वाड़ी में एकत्र मुसलमानों के सामने भाषण करते हुए बहुत देर तक समझाया कि मनुष्य में धार्मिक सहिष्णुता का होना बहुत जरूरी है और उन्हें यह समझना चाहिये कि सभी मजहब के लोगों को अपने-अपने विश्वास के अनुसार पूजा और धार्मिक कृत्य करने का अधिकार है। किसी के धार्मिक कार्य में बाधा डालने का किसी को अधिकार नहीं है।

गांधीजी ने यह भी कहा कि अगर पाकिस्तान का अर्थ है मुसलमानों का शासन, तो वह तो बङ्गाल में पाकिस्तान कायम है। ऐसी हालत में तो बङ्गाल के मुसलमानों का और भी फर्ज हो जाता है कि वे यहाँ के अल्प-संख्यक लोग के हितों की रक्षा करें और उन्हें यह समझने का अवसर न दें कि पाकिस्तान कायम होने पर उनकी बदतर हालत होगी। अगर मुसलमान

इसी तरह का अच्छा व्यवहार अल्प-संख्यकों के साथ करें, तभी वे पाकिस्तान कायम करने को बात सोच सकते हैं।

गांधीजी के इस भाषण का और साथ ही अमतुस सलाम की हालत देखकर स्थानीय मुसलमानों पर बहुत प्रभाव पड़ा और उनकी ओर से मौलाना अनवरउल्ला, मि अब्दुर रशीद, मौलवी अब्दुल लतीफ, मौलवी फजलुल हककारी, मौलवी हशमत उल्ला, मौलवी अब्दुल खालिक और मौलवी अमीन उल्ला चौधरी ने गांधीजी को यह आश्वासन दिया कि वे दोनों सम्प्रदायों में शान्ति और एकता के लिये पूरी कोशिश करेंगे। इसके बाद प्रमुख मुसलमानों द्वारा एक लिखित खरीता गांधीजी के सामने पेश किया गया, जिसमें यह कसम खायी गयी कि वे इस बात की पूरी कोशिश करेंगे कि यहाँ शान्ति बनी रहे। इस खरीते पर हस्ताक्षर करने वाले मुसलमानों ने अपने में से अपना अध्यक्ष चुना जिसके पास आवश्यकता पड़ने पर सब मामले पेश किये जायँ।

यह लिखित प्रतिज्ञा-पत्र और आश्वासन मिलने के बाद महात्मा गांधी ने उसे अमतुस सलाम के सामने रखा और उन्हें यह सलाह दी कि वे अनशन समाप्त कर दें। उस समय का दृश्य बड़ा मार्मिक था। मौलवी फजलुलहक कुरान की आयतें पढ़ने लगे और महात्मा गांधी ने स्वयं सन्तरे का रस बीबी अमतुस सलाम को पिलाया। डा० सुशीला नायर ने अमतुस सलाम को उठाकर बैठा दिया और उन्होंने गांधीजी के हाथ से सन्तरे का रस ग्रहण किया। इस अवसर पर गांधीजी

के दल के सब लोग, समस्त स्थानीय प्रमुख मौलवी तथा अन्य मुसलमान, श्री सतीश दास गुप्ता, प्रो० निर्मल बोस आदि उपस्थित थे। जब अमतुस सलाम ने अनशन तोड़ दिया, तो महात्मा गांधी ने उपस्थित लोगों को मिठाइयाँ बाँटी।

कुमारी अमतुस सलाम ने इस प्रकार २५ दिन के बाद अपना अनशन तोड़ा। उन्होंने अपना यह अनशन वैसे तो पूजा की तलवारें वापस कराने के लिये किया था, मगर उनका उद्देश्य केवल तलवार दिलाना ही नहीं बल्कि संकेतरूप में मुसलमानों में यह भावना उत्पन्न करने के लिये था कि वे अल्पसंख्यक हिन्दुओं के साथ जुल्म और अन्याय न करें और उनकी लूटी हुई चीजें उन्हें वापस कर दें।

गान्धीजी ने अमतुस का अनशन समाप्त कराने में सिरोंधी का अपना सारा २४ घंटे का समय लगा दिया था। और उसी प्रकार स्थानीय प्रमुख मुसलमानों ने भी पूरा प्रयत्न किया था।

महात्माजी ने मुसलमानों से यह भी कहा कि अगर मुसलमानों ने अपने वादे को पूरा नहीं किया और यहाँ फिर कोई घटना होगी, तो इस बार मैं अनशन करूँगा।

उठा ले जायी गयी तीन तलवारों में से दो तो स्थानीय मुसलमानों के परिश्रम और प्रयत्न से मिल गयी है, पर तीसरी तलवार का पता नहीं लगा मगर मुसलमानों ने इस तलवार को ढूँढ लाने का वादा किया है। तीसरी तलवार ले जाने वाले आदमी का बहुत पता लगाया गया, पर वह नहीं लगा और यह ख्याल है कि शायद वह तलवार खो गयी है।

केथूरी

[२१ जनवरी]

सिरोंधी में २४ घंटे तक व्यस्त रहने और अन्त में कुमारी अमतुस सलाम का अनशन सफलतापूर्वक समाप्त कराने के बाद महात्मा गांधी आज सबेरे साढ़े सात बजे अपने दौरे के कार्य-क्रम के अगले गाँव केथूरी के लिये रवाना हुए। ३५ मिनट में अपनी यात्रा समाप्त कर गांधीजी सवा आठ बजे केथूरी पहुँच गये। रास्ते में आपको पूरब भाँडर और राजारामपुर नामक दो छोटे गाँव मिले। कई जगह खड़ी हुई दर्शकों की भीड़ों ने गान्धीजी की जय-ध्वनि की। रास्ते में मौलाना अनवरउल्ला गान्धीजी से फिर मिले और यह आश्वासन दिया कि वे लोग पूरी कोशिश करेंगे कि इस हिस्से में शान्ति और एकता बनी रहे। सिरोंधी से चलने के पहिले भी वहाँ के दो प्रमुख मुसलमान गान्धीजी से मिले थे और कुछ देर तक बातें की थीं।

सिरोंधी में कल गान्धीजी के पास मि० महमूद हुनर नामक एक मुस्लिम सज्जन आये जो 'हरिजन सेवक' के उर्दू संस्करण में काम करते हैं। अब आप महात्माजी के साथ उनके दौरे में रहेंगे और उर्दू में आने वाली चिट्ठियों का जवाब देंगे।

पहिले महीने का आधा दौरा

सिधोंरी पहुँचने के बाद गान्धीजी का नोआखाली में प्रथम मास का आधा दौरा समाप्त हुआ। अब गान्धीजी यह विचार

५—मौलाना-महात्मा मिलन—केथुरी जाते हुए गांधीजी की मुलाकात मौलाना अनवरुल्ला से हुई। मौलाना साहब ने शान्ति स्थापनामें गांधीजीको पूर्ण सहयोग देनेका वचन दिया।

कर रहे हैं कि एक गाँव में एक दिन ठहरने का समय बहुत कम पड़ता है और इतने समय में आप एक गाँव का सब काम पूरा नहीं कर पाते। अतः अब आपका इरादा एक गाँव में दो या आवश्यक हो, तो तीन दिन भी ठहरने का है और इसी दृष्टि से आपके दौरे का नया कार्य-क्रम बनाया जा रहा है।

केथूरी की प्रार्थना सभा में भाषण करते हुए गान्धीजी ने कहा कि सिरोंधी के मुसलमानों ने अपनी दस्तखत से जो लिखित प्रतिज्ञा-पत्र मुझे दिया है, अगर उसे किसी प्रकार भी भङ्ग किया गया, तो उसके कारण मुझे अनशन करना पड़ेगा, आपने यह भी बताया कि अमतुस सलाम ने क्यों अनशन किया था और अन्त में उसे क्यों तोड़ा।

गांधीजी ने कहा कि यह अनशन इसलिये नहीं था कि तलवार लाकर वापस की जाय, बल्कि इसके पीछे भारी उद्देश्य था। आपने कहा कि इसका वास्तविक उद्देश्य मुसलमानों का हृदय परिवर्तन करने का था। इसके बाद गांधीजी ने मुसलमानों द्वारा दिये गये प्रतिज्ञा-पत्र का उल्लेख किया। आपने कहा कि उसमें यह सिद्धान्त रखा गया है कि हर एक आदमी को उसका मजहब उतना ही प्यारा है जितना दूसरे आदमी को उसका मजहब, इसलिये सभी मजहबों का बराबर आदर किया जायगा। प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों की इसकी कसम ली है। गांधीजी ने हस्ताक्षर कर्ताओं को यह आश्वासन दिया है कि मैं भी इस काम में आप लोगों की पूरी मदद करूँगा और इस बात की कोशिश करूँगा कि हर सम्प्रदाय को अपने उचित

अधिकारों का उपयोग करने की सुविधा रहे। गांधीजी ने य
भी कहा कि कोई मामला पुलिस या अदालत में जाने के बजा
आपस में ही तय कर लिया जाय और किसी के अधिका
और सम्मान की हत्या न हो, क्योंकि किसी दल के अधिका
का आत्म-समर्पण करा कर किया गया समझौता स्थायी नह
हो सकता।

प्रार्थना के बाद गांधीजी नित्य की भांति सन्ध्या समय टहल
के लिये निकले। आपने टहलते समय आस-पास के दो गाँव
का निरीक्षण किया और यहाँ के लोगों से उनकी दशा के सम्बं
में पूछ-ताछ की। रात में आकर आपने विश्राम किया।

—::*::—

पनियाला

[२२ जनवरी]

आज गान्धीजी सवा घण्टे की सफर के बाद गाँवों के दृश्यों को देखते हुए अपनी नोआखाली की तीर्थ-यात्रा के १७ वें गाँव पनियाला ९ बजे पहुँचे। पनियाला केथूरी के पूर्व में ढाई मील पर है।

पनियाला में गान्धीजी पिछले उपद्रवों में जलाये गये एक मकान के फिर से बने हिस्से में ठहरे। इस मकान के दो आदमी उपद्रवों में मारे गये थे।

पनियाला की प्रार्थना-सभा में भाषण करते समय कुछ मुसलमानों द्वारा किये गये प्रश्नों के उत्तर दिये। आपने कहा कि बाहरी नियंत्रण से अपने को स्वतन्त्र घोषित करने वाले किसी भी राज्य में पूर्ण धार्मिक सहिष्णुता उसका मौलिक सिद्धान्त रहना चाहिये।

एक प्रश्न के उत्तर में गन्धीजी ने कहा कि पिछले २५ साल से मेरा यह मत है कि यदि कोई प्रान्त या गाँव अथवा व्यक्ति दूसरों के बन्धन से मुक्त रहना चाहता है, तो वह ऐसा कर सकता है यदि वह अपने ध्येय पर दृढ़तापूर्वक चले। यदि वह अपने ध्येय पर दृढ़ रहे, तो वह शीघ्र ही वास्तविक स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकता है। आपने कहा कि मिसाल के तौर पर बङ्गाल

या किसी भी दूसरे प्रान्त को ले लीजिये। अगर वहाँ की जनता में एकता है और भाईचारे की भावना से सब लोग काम करते हैं, तो उसे स्वतन्त्रता से कोई रोक नहीं सकता।

पाकिस्तान के संबंध में प्रश्न किये जाने पर गान्धीजी ने कहा कि इस प्रश्न पर मैं कराची में एक स्कूल के उद्‌घाटन के समय कायदे आज़म जिन्ना का उल्लेख करना चाहूँगा जिसमें उन्होंने कहा है कि पाकिस्तान न्याय पर आधारित होगा। गान्धीजी ने कहा कि अगर ऐसा राज्य स्थापित हो जो न्याय और सत्य पर आधारित हो, तो उस पर किसी को एतराज़ न होगा, चाहे उसे पाकिस्तान के नाम से पुकारिये और चाहे दूसरे किसी नाम से। अगर मुसलमान लोग यह समझें कि पाकिस्तान में सिर्फ मुसलमानों को ही रहने दिया जाय, तो मैं यह कहूँगा कि यह उनका गैर-इस्लामी विचार है। इस्लाम का मौलिक सिद्धान्त लोकतंत्र है, जिसमें दूसरे मजहबों के प्रति सहिष्णु रहने को कहा गया है। अगर कोई आदमी चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो या ईसाई, दूसरे के धर्म के मौलिक सिद्धान्त को नहीं मानता तो वह आदमी पतित है, उसका धर्म पतित नहीं है।

दूसरा सवाल गान्धीजी से किया गया कि बिहार में आपकी अहिंसा का क्या प्रभाव रहा ?

इस सवाल के जवाब में गान्धीजी ने कहा कि हालाँ कि बिहार के उपद्रवों के समय मेरी अहिंसा का कुछ समय के लिये प्रभाव नहीं रहा, मगर उपद्रवों के बाद वह बात नहीं रही।

उपद्रवों के बाद बिहार सरकार से बराबर मेरा घनिष्ट सम्पर्क रहा और मैंने यह देखा कि वहाँ जो कुछ हुआ था, उसके लिये उसमें बहुत गहरा पश्चात्ताप की भावना रही। बिहार सरकार ने अपनी जिम्मेदारी से हटने की कभी कोशिश नहीं की। वह बराबर मुझे बताती रही कि मुस्लिम शरणार्थियों की सहायता के लिये वह कितना प्रयत्न कर रही है और भविष्य में भी सब तरह से क्षति-पूर्ति करने को तैयार है। बिहार के एक मंत्री यहाँ नोआखाली में मेरे पास आये थे जिन्होंने बिहार सरकार की ओर से यह वादा किया कि शरणार्थियों को फिर से बसाने में वह पूरी सहायता करेगी और कोई कोशिश उठा नहीं रखेगी।

गान्धीजी ने कहा कि मुस्लिम लीग की ओर से मेरे पास बराबर चिट्ठियाँ और प्रस्ताव आते रहे हैं और सब मामले मेरी जानकारी में लाये जाते रहे हैं। मैंने वे सब मामले बिहार सरकार के पास भेजे और बिहार सरकार ने सब मामलों की जाँचकर पूरी कार्रवाई की।

तीसरा सवाल गान्धीजी से यह किया गया कि दङ्गों की असली जड़ क्या है? गान्धीजी ने कहा कि साम्प्रदायिक दंगे हिन्दुओं और मुसलमानों के एक फिरके के पागलपन की वजह से होते हैं। आपने कहा कि किसी एक दल के लड़ने से झगड़ा नहीं हो सकता अगर दूसरा दल अहिन्सात्मक रहे और ईमान-दारी के साथ काम करे।

बम्बई और दूसरी जगहों के हाल के दङ्गों का उल्लेख करते

हुए गान्धीजी ने कहा कि मैंने यह बराबर देखा है कि इन जगहों में एक दूसरे को ईंट का जवाब पत्थर से देने की भावना ने काम किया है। एक दिन अगर एक मुसलमान को छुरा मारा गया, तो दूसरे दिन एक हिन्दू को छुरा मारा गया। इस तरह दोनों ओर से कार्रवाई की गयी। यही दृष्टिकोण साम्प्रदायिक दङ्गों की जड़ है।

गान्धीजी ने कहा कि हम सब लोग एक ही देश की संतान हैं और एक ही सूत्र से हमारा जन्म हुआ है। अगर हमारा एक भाई कोई बुरा काम करने को उत्तेजित करता है तो हम उसकी बातों में क्यों आएँ? अगर कोई आदमी किसी का जबरदस्ती मजहब बदलना चाहता है या किसी स्त्री को बेइज्जती करना चाहता है, तो उसकी पाशविक शक्ति के आगे क्यों आत्मसर्पण कर दिया जाय? ऐसी पाशविक शक्ति का सामना अहिंसात्मक रूप से करने के लिये क्यों न जान दे दी जाय? कब तक कोई आक्रमणकारी हिन्सात्मक कार्य करता जायगा जब कि वह देखेगा कि अहिन्सा का व्रती बजाय आत्मसमर्पण करने के मौत का सामना करने पर तुला हुआ है। गान्धीजी ने कहा कि दंगे बन्द करने का ठीक उपाय बदला लेने की भावना नहीं है, केवल अहिन्सा से ही अन्याय का मुकाबिला किया जा सकता है और साम्प्रदायिक दङ्गों के पागलपन का अन्त हो सकता है।

—::*::—

डाल्टा

[२३ जनवरी]

नेताजी के कार्यों की प्रशंसा

महात्मा गान्धीजी आज पनियाला से प्रातःकाल दूसरे गाँव डाल्टा पहुँचे। आज २३ जनवरी को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म-दिवस था। आज नेताजी ५१ वर्ष के हुए। लोगों में आज बड़ा उत्साह था।

गान्धीजी फसल कटे हुए खेतों के बीच होते हुए सवा घण्टे में डाल्टा पहुँचे। यहाँ पहुँचकर आपने नोआखाली के गाँवों का १०० मील का दौरा समाप्त किया।

अब गान्धीजी टिपरा जिले की सीमा पर पहुँच गये हैं। अब आपका दौरा नोआखाली के ही गाँवों में दूसरी दिशा की ओर होगा।

डाल्टा में गान्धीजी दलित जाति के एक व्यक्ति के मकान में ठहरे। आपके साथ चलने वाले पत्र-सम्वाददाता लोग एक बड़े मकान में ठहराये गये, जिसमें २५ झोपड़े थे। उपद्रव के दिनों में ये सभी झोपड़े लूटे गये थे और जला दिये गये थे। इन झोपड़ों में रहने वाले लोग अब वापस आ रहे हैं और फिर से बनने वाले झोपड़ों में रह रहे हैं।

आज की प्रार्थना सभा में गान्धीजी ने नेताजी सुभाषचन्द्र

बोस के कार्यों के सम्बंध में भाषण किया। आपने बताया कि नेताजी ने विदेशों में जाकर भारत की स्वाधीनता के लिये सभी सम्प्रदायों को एक झण्डे के नीचे लाकर किस प्रकार लड़ाई लड़ी और साम्प्रदायिक एकता का कितना सुन्दर उदाहरण उपस्थित किया।

गान्धीजी ने कहा कि नेताजी के जीवन से सबसे बड़ी जो शिक्षा ली जा सकती है, वह यह है कि उन्होंने अपने समस्त सैनिकों में एकता की कितनी जबरदस्त भावना उत्पन्न की कि सब लोगों ने मजहबी तथा प्रान्तीयता का सब भेद-भाव भुलाकर आजादी के सामान्य उद्देश्य के लिये एक साथ अपना खून बहाया। इस भारी काम में जैसी अद्वितीय और अभूतपूर्व सफलता नेताजी ने प्राप्त की, उससे उन्होंने इतिहास के पृष्ठों में अपने को अमर बना लिया है। आपने कहा कि नेताजी के जितने भी अनुयायी आकर मुझसे मिले हैं, उन सब ने बताया है कि नेताजीका प्रभाव जादू की तरह सब पर था और सभी सम्प्रदायों के लोगों ने उनके नेतृत्व में हिन्दुस्तान की आजादी हासिल करने के एक ही उद्देश्य के लिये लड़ाइयाँ लड़ी थीं। उनके सैनिकों के मन में कभी धार्मिक या प्रान्तीयता की भावना नहीं आयी।

गान्धीजी ने कहा कि नेताजी की बुद्धि बड़ी प्रखर थी और जीवन की सभी शिक्षाओं की योग्यता उनमें थी। अपनी बुद्धि की प्रखरता से उन्होंने आई० सी० एस० की परीक्षा पास की किन्तु सरकारी नौकरी करना उन्होंने अपना अपमान समझा

इङ्गलैण्ड से वापस आकर वे देशबन्धुदास के साथ देश का काम करने लगे। काँग्रेस में उनका इतना प्रभाव हुआ कि वे दो बार अध्यक्ष चुने गये। परन्तु उन्होंने जीवन की सबसे बड़ी सफलता विदेशों में जाकर काम करने में प्राप्त की। भारत से गायब होने के बाद वे काबुल, इटली, जर्मनी इत्यादि होते हुए अन्त में जापान पहुँचे। विदेशी लोग चाहे जो समझें, पर हिन्दुस्तान में एक भी ऐसा आदमी नहीं है जो नेताजी का देश से भागकर जाना अपराध समझे। जैसा कि गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है—'समरथ को नहिं दोष गुसाईं' सामर्थ्यवान मनुष्य को सब कुछ करने का अधिकार है। नेताजी ने जब पहिले-पहल अपनी सेना खड़ी की, तो उन्हें इसकी चिन्ता नहीं हुई कि सेना में कितने थोड़े से आदमी भरती हुए हैं। उन्होंने सोचा कि सेना में चाहे कितने ही थोड़े आदमी क्यों न हों, पर उन सब में देश को आजाद कराने की दृढ़ भावना, उस पर मर मिटने की चाह होनी चाहिये।

गान्धीजी ने आगे कहा कि मेरी दृष्टि में नेताजी की सबसे बड़ी सफलता और उनका सबसे बड़ा स्थायी काम यह था कि उन्होंने जात-पाँत का सब भेदभाव मिटा दिया था। वे केवल हिन्दू या केवल बङ्गाली नहीं थे। उन्होंने कभी अपने को सवर्ण हिन्दू नहीं समझा। वे अपने को केवल हिन्दुस्तानी समझते थे और इससे भी अधिक काम उनका यह हुआ कि अपने नेतृत्व में रहने वाले सभी लोगों में यही जोश उन्होंने फूँक दिया था। यह उन्हीं का प्रभाव था कि आजाद हिंद फौज के सभी सैनिकों

ने जाँत-पाँत का भेदभाव त्याग कर अपने को केवल हिन्दुस्तानी समझकर एक झण्डे के नीचे काम किया था।

मुसलमानों से आर्थिक अपील

आज की प्रार्थना-सभा में गांधीजी ने गृह-विहीन शरणार्थियों को शीघ्र सहायता पहुँचाने और उनके कष्ट दूर करने की विशेष रूप से अपील मुसलमानों से की। आपने एक हफ्ते पहिले पनियाला में किये गये एक भोज का उल्लेख किया, जिसमें हिन्दुओं, मुसलमानों तथा अछूत कहे जाने वाले सब लोगों ने भाग लिया था। गान्धीजी ने कहा कि इस प्रकार का भोज करना बड़ा अच्छा था और मैं भी इस भोज में आना चाहता था, पर काम में बहुत फसे रहने के कारण नहीं आ सका।

मगर, गान्धीजी ने कहा, इतना ही काफी नहीं है। मुझे तो तब और ज्यादा खुशी होगी, जब हिन्दू और मुसलमान अपने में एकता और मित्रता स्थापित करने में पूर्ण रूप से सफल होंगे। अमतुस सलाम ने इसी उद्देश्य से अनशन किया था, जैसा कि सभी लोग जानते हैं और उसी का यह प्रभाव था कि आस-पास के मुसलमानों ने अमतुस सलाम से यह वादा किया है कि बङ्गाल के मुँह पर जो जख्म इन उपद्रवों के कारण लगा है, उसे भरने की वे पूरी ताकत के साथ कोशिश करेंगे।

गान्धीजी ने आगे कहा कि एक समस्या की ओर मेरा ध्यान पिछले कुछ दिनों से बड़ी व्यग्रता के साथ लगा है और वह है उन कुटुम्बों का प्रश्न जिनका सभी कुछ पिछले उपद्रवों

में नष्ट हो गया है। ऐसे असंख्य कुटुम्ब हैं, जिनके पेट पालने वाले पुरुष मारे गये हैं और अब उनमें जो लोग बचे हैं, उनके पेट भरने का सवाल है, उनके बच्चों की तालीम और हिफाजत का सवाल है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह सब फर्ज सरकार का है। मगर दिल से शान्ति चाहने वाले हम लोगों को इस प्रश्न को और अधिक विस्तृत दृष्टिकोण से देखना है। मेरी नाचीज राय में तो होना यह चाहिये कि जिस सम्प्रदाय के लोगों ने अन्याय और उत्पात किये हैं उसी सम्प्रदाय के लोगों का यह फर्ज है कि वे अपने दुखी पड़ोसियों की सहायता करें और उनकी तकलीफें दूर करें।

आपने कहा कि सरकार यह काम तो अपनी ताकत के बल पर करेगी, मगर पब्लिक की ओर से यह काम दिली तौर पर होगा और पीड़ितों में विश्वास पैदा करने का असली यही काम है। मानवता के ख्याल से आदमी को आदमी समझकर उदार दृष्टिकोण से काम करना चाहिये और आने वाले सब सङ्कट का सामना किया जाना चाहिये। तभी सब संकट दूर होगा। ऐसे काम के लिये शक्ति-बल पर आधारित सरकार से सहायता लेना अच्छा नहीं है। जो लोग दस्तकारी का धंधा करते हैं, उनके सम्बंध में गान्धीजी ने कहा कि उन्हें लोगों के दान या दया पर निर्भर नहीं रहना चाहिये, बल्कि अपनी कठिनाइयाँ दूर करने के लिये अपनी ही शक्ति तथा साधनों से काम लेना चाहिये। आपने कहा कि जो मनुष्य बिना परिश्रम किये मुफ्त का भोजन करता है, वह चोर के समान है और

बिना परिश्रम किये अपना पेट पालता है। आपने कहा कि संसार में स्थायी शान्ति तभी स्थापित होगी, जब कि समाज के विभिन्न अङ्ग परिश्रम के बन्धन से बँध जायँगे।

भाषण के बाद गान्धीजी से एक मुस्लिम सज्जन ने यह प्रश्न किया कि—बिना केन्द्रीय सरकार के काँग्रेस और लीगी सदस्यों में समझौता हुए बिना आपका नोआखाली में शान्ति का प्रयत्न किस प्रकार सफल होगा ?

महात्मा गान्धी ने उत्तर दिया कि सिरोंधी के मुसलमानों ने अमतुस सलाम का अनशन समाप्त कराने में जो उदाहरण उपस्थित किया है, वह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि ग्रामीणों में अच्छे पड़ोसी की तरह रहने की भावना बढ़ाने में काँग्रेस या मुस्लिम लीग अथवा केन्द्रीय सरकार का कोई सम्बंध नहीं है। ये संस्थाएँ क्या करती हैं, इसकी ओर गाँवों में रहने वालों को ध्यान नहीं देना चाहिये। उन्हें तो वही करना चाहिये, जिससे उनका हित हो, जिससे गाँव के सब लोग भाई-भाई की तरह प्रेम के साथ रह सकें, एक दूसरे की मुसीबत के समय खड़े हों और बिना मजहब या जात-पाँत का ख्याल किये सब मिलकर अपने गाँव को उन्नति करें। सिरोंधी के मुसलमानों ने अपने हिन्दू पड़ोसियों को धार्मिक स्वतन्त्रता का विश्वास दिलाकर सारे देश के सामने सुन्दर उदाहरण उपस्थित किया है।

गान्धीजी ने कहा—'राजनीतिक संस्थाओं को एसेम्बलियों और कौन्सिलों में सरकारी मामलों में लड़ने दीजिये, मगर आप

लोग अपने गाँवों में शान्ति से रहकर अपना जीवन सुखी बनाइये और अपनी फिक्र कीजिये।'

इसके बाद गान्धीजी से दूसरा प्रश्न किया गया कि नोआखाली में जो हिन्दू बच रहे हैं, उनकी रक्षा किसने की है?

गान्धीजी ने कहा—उनकी रक्षा ईश्वर ने की है। यह हो सकता है कि कोई आदमी चाहे अपने पड़ोसियों की जानें बचाने में ईश्वर के हाथ का साधन बन गया हो, पर उस आदमी में यह भावना उत्पन्न करने वाला तो ईश्वर ही है। यह कहना कि किसी एक आदमी ने इतने अधिक हिन्दुओं की जानें बचायी, केवल अहंकार और मूर्खता है, जो ईश्वर से डरने वाले मुसलमानों के स्वभाव के विपरीत है। अगर इस प्रकार का अहङ्कार किसी के मन में आया और उसे बढ़ने दिया गया, तो इसके लिये खुदा उसे माफ नहीं करेगा।

एक गाँव में दो दिन

महात्मा गांधी ने यहाँ एक प्रस्ताव स्वीकार किया कि आप एक गाँव में अब दो दिन ठहरा करेंगे, क्योंकि एक दिन में सब आवश्यक काम नहीं पूरा हो पाता। पर इसे आपने फरवरी से शुरू करने का निश्चय किया और उसके पहिले आप नोआखाली के शेष गाँवों का दौरा एक गाँव में एक दिन रहकर ही पूरा करेंगे।

—::§::—

मुरैम

[२४ जनवरी]

महात्मा गान्धी अपनी गाँव-गाँव यात्रा के १९ वें गाँव मुरैम में आज प्रातःकाल साढ़े आठ बजे पहुँचे। डाल्टा से आप साढ़े सात बजे सबेरे चले थे। आप गीले खेतों से होकर चले जो अभी हाल ही में जोते गये थे। यहाँ आप मौलाना हबीबुल्ला बटारी के मकान पर ठहरे।

दिन में कार्यों में व्यस्त रहने के बाद गान्धीजी ने शाम को प्रार्थना सभा में भाषण किया। आज की सभा बड़ी भारी थी। लगभग १० हजार आदमी उपस्थित हुए थे। प्रार्थना के बाद अपने भाषण में गान्धीजी ने पहिले कुछ अखबारों के सम्बन्ध में खेद प्रकट किया कि वे गलत तथा बढ़ा चढ़ाकर दिया हुआ विवरण छापकर जनता के दिमाग और विचार को जहरीला बनाते हैं। आपने कहा कि अखबारों को बहुत सावधान होकर काम करना चाहिये। इस समय अखबारों ने बाइबिल, गीता और अन्य धार्मिक ग्रन्थों का स्थान ले लिया है और जनता उनके कथन को बहुत महत्व देती है तथा उससे बहुत प्रभावित होती है। इसलिये अखबारों का कर्तव्य है कि अपने पाठकों के सामने केवल सच्ची घटनायें और सच्चे समाचार रखें।

इसके बाद महात्माजी ने प्रान्तों में अल्प-संख्यक सम्प्रदायों द्वारा आन्दोलन करने के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये। आपने कहा कि बहुमत वाले प्रान्तों में अल्प-संख्यक सम्प्रदाय का आन्दोलन करना उचित तथा व्यवहारिक नहीं है। आपने कहा

कि विहार के मुसलमानों को अपना प्रान्त छोड़ना नहीं चाहिये। आपने कहा कि इसमें सन्देह नहीं कि कुछ विहारी हिन्दुओं ने अमानुषिक कार्य किये है, परन्तु इससे मुसलमानों को अपने कर्तव्य से हटना नहीं चाहिये और उन्हें बहादुरी से अपने घरों में बने रहना चाहिये, जिन पर उनका अधिकार है। और विहार के हिन्दुओं को चाहिये कि वे उन हिन्दुओं के दुष्कृत्यों के के लिये जितनी क्षति पूर्ति सम्भव हो करें, जो कि उन दिनों पागल हो गये थे।

यही बात मैं नोआखाली के हिन्दुओं और मुसलमानों से कहूँगा कि नोआखाली के मुसलमानों का फर्ज है कि अगर नोआखाली में एक भी हिन्दू रहे तो वे उसे अपने बीच में हिफाजत से ही नहीं बल्कि पूरी हिफाजत से रखें। और हिन्दुओं को भी विश्वास के साथ नोआखाली में रहना चाहिये।

नोआखाली के कलेक्टर मि० मैकइनर ने भी गांधीजी से मिलने के लिये मुरैम आये थे। उन्होंने महात्माजी से बातें की और बाद में प्रार्थना की सभा में भी उपस्थित हुए थे।

अपने भाषण के अंत में महात्माजी ने इस बात का विशेष-रूप से उल्लेख किया कि प्रार्थना और सभा में मुसलमान लोग अधिक संख्या में आने लगे हैं, मगर इसका सारा श्रेय बीबी अमतुल सलाम के अनशन को है, जिसने यह उत्साह लोगों में उत्पन्न कर दिया है और उनके हृदयों पर इतना प्रभाव डाला है।

—::&::—

हीरापुर

[२५ जनवरी]

महात्मा गांधी आज मुरैम से हीरापुर आये, जो मुरैम से दक्षिण में एक मील से कुछ अधिक है। ३५ मिनट में एक मील का रास्ता तय कर आप ८ बजकर २५ मिनट पर हीरापुर पहुँचे। वहाँ आप एक नाई के मकान में ठहरे।

मुरैम से चलने के पहिले गांधीजी उन मुसलमान सज्जन के घर के अन्दर गये जिनके आप मेहमान थे और घर की स्त्रियों से आपने बातें कीं। इस कारण, आपको मुरैम से रवाना होने में कुछ देर भी हो गयी।

हीरापुर में अधिकतर बस्ती मुसलमानों की है, जिनकी संख्या गाँव में लगभग २५० है और हिन्दुओं की केवल ९२।

हीरापुर पहुँचकर गांधीजी अपनी कुटिया में गये और बंगला भाषा पढ़ना आरम्भ किया। गांधीजी ने अब ध्यान के साथ बँगला पढ़ना शुरू कर दिया है और यह निश्चय कर लिया है कि इतनी बँगला सीख लेंगे कि बङ्गाल के दौरे में आप बंगला भाषा में ही वहाँ के लोगों से बातचीत करें।

हीरापुर में प्रार्थना सभा में भाषण करते हुए गांधीजी ने अपने पास आये हुए तारों का जिक्र किया, जिनमें से एक तार मदरास के जमायत-उल इस्लाम का था और दूसरा बम्बई का। आपने बताया कि इन तारों में कहा गया है कि इस्लाम में आपका विश्वास नहीं है, इसलिये आपको इस्लामी कानून में दखल देने का कोई हक नहीं है। गांधीजी ने कहा कि तार

भेजने वालों को मालूम होता है वाकयात की जानकारी नहीं हीरापुर
है। मैंने कभी किसी धर्म के पालन में हस्तक्षेप नहीं किया है
और न मुझे दस्तन्दाज़ी करने का अधिकार ही है। मैंने तो
पैगम्बर के वचनों को जो पढ़ा है, उन्हीं के आधार पर मैंने सिर्फ
अपना नाचीज सलाहें दी हैं। मैंने तो बड़े सुसंस्कृत मुस्लिम
घरों में परदे की पूर्णरूप से अवहेलना देखी है। अपनी आँखों
से देखा है कि स्त्रियाँ वहाँ परदा बिल्कुल नहीं करतीं। मगर
इसका मतलब यह नहीं है कि वे दिल का परदा नहीं करतीं।
और मेरी राय में वही असली परदा है, जो इस्लाम चाहता है।
ख़ैर, मेरी राय कुछ भी हो, मेरे भाषण सुनने वाले मुसलमानों
को अधिकार है कि वे मेरी सलाह न मानें अगर वे समझते हैं
कि इस्लाम के सिद्धान्तों से वह मेल नहीं खाती। जो आलोचना-
पूर्ण तार मुझे मिले हैं, उनसे यही प्रकट होता है कि इन तारों
के भेजने वाले दूसरे लोगों के मतों को सुनना भी गवारा नहीं
कर सकते परन्तु उन्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि अदालतों
में और प्रिवी कौंसिल तक में भी जिनमें जज लोग अक्सर
गैर-मुसलमान होते हैं, इस्लाम कानून का अर्थ लगाया जाता है
और उस अर्थ को इस्लामी दुनिया पर लागू किया जाता है।
इसके विपरीत मैंने तो सिर्फ अपनी राय दी है। अगर मैं
आलोचना और नुक्ताचीनी के डर से या शारीरिक दंड से भी
डरकर अपनी राय न दे सकूँ, तो सत्य और अहिंसा का अयोग्य
प्रतिनिधि सिद्ध होऊँगा।

—::ॐ::—

बन्सा

[२६ जनवरी]

स्वाधीनता दिवस का समारोह

नोआखाली के सुदूर एक कोने में पड़े हुए बन्सा गाँव को आज महात्मा गान्धी का मेहमान के रूप में स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जब कि सारे देश में स्वाधीनता-दिवस मनाया गया। आज २६ जनवरी का दिन देश की स्वाधीनता के लिये दृढ़ प्रयत्न करने की शपथ दुहराने का पुनीत दिवस था। आज संसार को एक बार फिर यह याद दिलाने का दिन था कि आज हम भारतवासी अपनी स्वाधीनता लेने के लिये पहिले की अपेक्षा अधिक दृढ़-प्रतिज्ञ हैं और अब उसे अनिच्छुक हाथों से ले लेने में संसार की कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती।

गान्धीजी आज प्रातःकाल हीरापुर में अपनी कुटी से जब बन्सा चलने को तैयार हुए, तो आपकी आज की यात्रा में साथ चलने को उद्यत सभी लोगों ने एक साथ 'बन्देमातरम्' गायन गाया।

इसके बाद जब महात्माजी ने प्रस्थान किया, तो 'वंदेमातरम्' और 'अल्लाहो अकबर' की गगन भेदी ध्वनि की गयी और चलने के साथ रामधुन भजन गाया जाने लगा। दूर-दूर के

गाँवों में भी राष्ट्रीय गाने की ध्वनि गूंज उठी। यह गाना आज के अवसर के लिये विशेष रूप से तैयार किया गया था। यात्रा में रास्ते भर बराबर यह गाना गाया जाता रहा।

बन्सा हीरापुर से ठीक दो मील दक्षिण में है। ४५ मिनट में गान्धीजी ने यह दो मील का मार्ग पूरा किया और ८ बजकर ३५ मिनट पर बंसा आप पहुँच गये। वहाँ आप कविराज जगबंधु सील के मकान पर ठहरे।

गांधीजी की कुटी में आज स्वाधीनता-दिवस मनाया गया। सरदार जीवन सिंह ने तिरङ्गा झण्डा गान्धीजी की कुटी के सामने फहराया। गान्धीजी वहाँ से थोड़ी दूर पर मालिस करा रहे थे। झण्डाभिवादन के समय आजाद हिन्द फौज के लोगों ने 'जन-गण-मन अधिनायक' गाना गाया और 'वंदेमातरम्' 'अल्लाहो अकबर' 'महात्मा गांधी की जय' 'नेताजी की जय' आदि नारे लगाये गये। इसके अतिरिक्त अन्य कोई कार्य गांधीजी की कुटी में नहीं हुआ।

गांधीजी के साथ चलने वाले पत्र-सम्वाददाताओं ने भी अपने खेमे में स्वाधीनता-दिवस गांधीजी के आशीर्वाद के साथ मनाया। अ० भा० कांग्रेस कमेटी और विधान सम्मेलन के सदस्य श्री यदुनंदन सहाय ने राष्ट्रीय झण्डा फहराया, जो बिहार सरकार की ओर से गांधीजी के साथ रहते हैं। गांधीजी के उर्दू 'हरिजन सेवक' के कार्य-कर्ता तथा गांधीजी के पास आने वाली उर्दू चिट्ठियों का उत्तर देने वाले मि० महमूद अहमद हुनर ने हिन्दुस्तानी में स्वाधीनता की शपथ दुहरायी, जिसे

एक बङ्गाली पत्रकार ने बङ्गला में दुहराया। श्री वीरेन्द्र सिनहा के नेतृत्व में राष्ट्रीय गान गाया गया। इसके बाद शहीदों की स्मृति में दो मिनट तक सब लोग मौन रहे।

तीसरे पहर सम्वाददाता लोग आस-पास के गाँवों में गये और ग्रामीणों को सफाई से रहने, हिन्दू-मुस्लिम एकता और छुआछूत दूर करने की बात समझायी।

सन्ध्या समय एक भोज हुआ, जिसमें हिन्दू-मुसलमान, हरिजन आदि सभी जातियों के लोगों ने भोजन किया। इस भोज के लिये गांधीजी से स्वीकृति ली गयी थी।

प्रातःकाल झण्डाभिवादन के कार्य में सम्मिलित होने वाले प्रमुख सज्जनों में प्रो० निर्मल बोस सरदार जीवन सिंह और श्री वीरेन्द्रनाथ गुह भी थे।

अंग्रेजों का भारत छोड़ना निश्चित है

बंसा में तीसरे पहर की गयी प्रार्थना-सभा में गान्धीजी स्वाधीनता-दिवस के सम्बंध में भाषण किया। आपने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा—'बङ्गाल के अभिमान नेताजी ने विदेशों में भारत की स्वाधीनता के लिये लड़ाई लड़कर केवल बङ्गाल के लिये लड़ाई नहीं लड़ी थी, बल्कि समस्त भारत के वास्ते लड़ी थी। नेताजी की सेना में सभी मजहबों के लोग थे, पर उन लोगों को एक क्षण के लिये भी कभी यह ख्याल नहीं हुआ था कि वे किसी एक प्रान्त या किसी खास सम्प्रदाय के लिये लड़ रहे हैं। आज इस अवसर

पर उन महान नेताजी और स्वाधीनता के शानदार कार्य में अपने जीवन लगा देने वाले अन्य सभी लोगों का स्मरण करना चाहिये।'

आगे गांधीजी ने कहा कि अंग्रेजों का भारत से जाना निश्चित है। इस समय अन्तराष्ट्रीय परिस्थिति ऐसी है कि अंग्रेज लोग अब अधिक समय तक इस देश पर अपना अधिकार नहीं रख सकते। पर यदि हिन्दुस्तानी लोग आपस में लड़ते गये, तो दूसरी शक्तियाँ भारत के साधनों से लाभ उठाएँगी और उसे बेकार नहीं रहने देंगी। उस हालत में भारतीयों को केवल एक नहीं अनेक मालिकों के नीचे रहना होगा।

स्वाधीनता-दिवस के सम्बंध में गांधीजी ने कहा कि २६ जनवरी का दिन भारत के लिये स्मरणीय दिवस है। इसी दिन भारत ने काँग्रेस के नेतृत्व में अपनी स्वाधीनता की घोषणा की थी। यद्यपि उसके पहिले भी भारतीयों में स्वाधीनता की भावना थी, किन्तु कांग्रेस के जन्म से उस भावना ने एक निश्चित रूप ग्रहण किया। यह भावना सन् १९१६ से देश के ग्रामीणों में भी फैलने लगी और स्वाधीनता का प्रस्ताव पास होने तक बराबर फैलती रही। तब से २६ जनवरी का दिन जिस दिन कि स्वाधीनता का प्रस्ताव पास हुआ था, समस्त भारत में मनाया जाता है। स्वाधीनता के आन्दोलन में लाखों आदमियों ने भाग लिया है और अगर हमारी किस्मत हमारे खिलाफ न हो गयी होती और हमारे अन्दर फूट न हो गयी होती, तो आज इस सभा में भी तिरङ्गा झंडा गर्व के साथ फहराता नजर आता।

एक समय पहिले था, जब मुसलमान लोग भी इस झण्डे को अपना झण्डा समझते थे और वह समस्त भारतीयों की आकांक्षाओं का प्रतीक समझा जाता था। मगर आज हमारी बदकिस्मती है कि हमारे मुसलमान भाई इस झण्डे से गर्व का अनुभव नहीं करते और यही नहीं बल्कि वे उस पर नाराजी जाहिर करते हैं।

इस समय मुसलमान पाकिस्तान चाहते हैं, पर अगर वे चाहते हैं कि अंग्रेज लोग पाकिस्तान दें, तो बेशक अंग्रेजों को हिन्दुस्तान में बने रहने में मदद पहुँचा रहे हैं। इसलिये ठीक रास्ता तो यह है कि पहिले आजादी हासिल की जाय और उसके बाद पाकिस्तान का सवाल तय किया जाय। अंग्रेजों का हिन्दुस्तान से जाना तो निश्चित है। अन्तराष्ट्रीय परिस्थिति ऐसी है कि वे अब इस देश पर अपनी हुकूमत नहीं कायम रख सकते। पर अगर हिन्दुस्तानी लोग आपस में लड़ते रहे, तो तीसरे लोग हिन्दुस्तान के विशाल साधनों को बेकार नहीं जाने देंगे और उससे फायदा उठाएँगे।

इसलिये आजादी से लाभ उठाना हमारे हाथ में है, पर अगर हमने अपनी मूर्खता दिखायी तो आजादी हमारे हाथ से निकल जायगी और उस हालत में विधान सम्मेलन स्वाधीनता की रक्षा नहीं कर सकेगा अगर सभी हिन्दुस्तानियों ने मिलकर काम नहीं किया तथा स्वाधीनता के लिये नहीं लड़े।

पल्ला

[२७ जनवरी]

गान्धीजी अपनी पैदल यात्रा के २२वें गाँव पल्ला के लिये आज प्रातःकाल साढ़े सात बजे बंसा से रवाना हुए और लगभग आध घण्टे में एक मील से कुछ अधिक का रास्ता तय कर ८ बजे पल्ला पहुँच गये। वहाँ आप जगतबंधु सील नामक एक हिन्दू जुलाहे के यहाँ ठहरे।

आज गान्धीजी का सोमवार का मौन-दिवस था, अतः प्रार्थना की सभा में आपका लिखित भाषण पढ़कर सुनाया गया। गान्धीजी ने अपने भाषण में इस बात पर बड़ा संतोष प्रकट किया कि आपको एक जुलाहे मित्र के घर में ठहराया गया है। आपने कहा कि बङ्गाल में एक साधारण झोपड़ी पक्के महलों से कहीं अधिक प्रिय लगी है। पक्के महल तो मुझे कैदखानें की तरह लगते हैं। जिन घरों में प्रेम का साम्राज्य हो, जैसा कि इस झोपड़ी में है, वह उन महलों से कहीं बढ़कर है जहाँ प्रेम न हो।

गान्धीजी ने कहा कि अपने ऐसे सुन्दर देश में मुझे यह देखकर बड़ा ही दुख होता है कि हिन्दू मुसलमान आपस में लड़ते हैं। क्या मजहबी मतभेद के कारण साम्प्रदायिक एकता नहीं बनायी रखी जा सकती?

आगे गांधीजी ने कहा कि ऐसे मकानों का चक्कर लगाया है जो बिल्कुल नष्ट हो गये हैं और खाली पड़े हैं। बाजार और स्कूल भी खाली दिखायी देते हैं। इससे किसे फायदा हुआ, हिन्दुओं को या मुसलमानों को ? खेती बिल्कुल चौपट हो गयी, उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दे पाता, जिससे आगे चलकर अकाल फिर पड़ता दिखाई देता है। गाँव सब गन्दे दिखायी देते हैं, पानी सब जगह गन्दा है। शिक्षा की कमी तो सर्वत्र है ही। ये सब खराबियाँ दूर की जानी चाहिये और शिक्षा के लिये नयी स्कीम बनायी जानी चाहिये, जिससे जनता में ज्ञान आवें, और सब खराबियाँ दूर हों।

अन्त में गांधीजी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह हिन्दुओं और मुसलमानों में सुबुद्धि दे जिससे कि वे अपनी ये समस्याएँ हल कर सकें तथा एकता के साथ रहें।

पंचगाँव

[२८ जनवरी]

आज प्रातःकाल साढ़े सात बजे महात्मा गांधी ने पल्ला से पञ्चगाँव के लिये प्रस्थान किया। आज आपके पीछे छोटे बच्चों का एक जुलूस चला। बच्चे छोटे-छोटे राष्ट्रीय झण्डे हाथों में लिये थे। यह जुलूस रास्ते भर गांधीजी के साथ था। एक स्त्री भी एक जलता हुआ दीपक हाथ में लिये थी।

लगभग डेढ़ घण्टे की सफर के बाद गांधीजी ९ बजे पञ्च-गाँव पहुँचे और वहाँ श्री भारतचन्द्र चक्रवर्ती के मकान पर ठहरे। रास्ते में गांधीजी तीन मकानों पर थोड़ी-थोड़ी देर रुके। पहिला मकान श्री रामकुमार दे का था। इस मकान को जाने वाले रास्ते पर गांधीजी के स्वागत में फूल बिछा दिये गये थे। घर की स्त्रियों ने गांधीजी का स्वागत किया और आपके ऊपर पुष्प-वर्षा की।

जब गांधीजी दूसरे मकान की ओर जा रहे थे, तो मोहम्मद रजा नामक एक अधेड़ मुसलमान दौड़ता हुआ गांधीजी के पास आया और अपने घर गांधीजी को चलने का आग्रह किया। गांधीजी मोहम्मद रजा की सच्ची भावना देखकर उसका अनुरोध टाल नहीं सके, हालांकि उसके घर जाने की बात आपके प्रोग्राम में नहीं थी। गांधीजी मोहम्मद रजा के घर के भीतर गये और स्त्रियों से भी बात-चीत की।

तीसरे जिस मकान में गांधीजी गये, वह मुकलेसर रहमान नामक एक अन्य मुसलमान सज्जन का था। यह सज्जन गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। मकान के सामने गांधीजी के बैठने के लिये एक ऊँचा मञ्च बनाया गया था और आस-पास के बहुत से मुसलमान भी आपके स्वागत के लिये उपस्थित हुए थे। गांधीजी मंच पर बैठाये गये। गांधीजी ने यहाँ उपस्थित मुसलमानों को थोड़ा उपदेश भी दिया।

पुलिस के कथनानुसार चाटखिल पुलिस थानेके एक अफसर अपने साथ तीन हथियारबन्द सिपाही लेकर याकूबअली नामक एक मुसलमान के घर तलाशी लेने का वारंट लेकर गये। वहाँ पहुँचने पर घर के लोगों ने आग लगाने का दो बार प्रयत्न किया, पर पुलिस ने आग बुझा दी।

मकान की तलाशी लेने पर लूट का माल बरामद हुआ और मकान मालिक गिरफ्तार किया गया। जब गिरफ्तार आदमी को पुलिस अपने साथ ले जा रही थी, तो लगभग ३०० आदमियों की भीड़ ने घातक हथियार लेकर पुलिस-दल को चारों ओर से घेर लिया और उस पर हमला करना चाहा, मगर पुलिस ने एक राउंड गोली चलाकर भीड़ को भगा दिया। गोली से कोई घायल नहीं हुआ।

पंचगाँव की प्रार्थना सभा साधारण रूप से हुई। प्रार्थना के समय गांधीजी को मालूम हुआ कि मुस्लिम लीग के लोगों को प्रार्थना की कुछ बातों के सम्बंध में एतराज है। गांधीजी ने लीग वालों की इस असहिष्णुता पर खेद प्रकट किया।

जयाग

[२९ जनवरी]

लीगियों को खरा उत्तर

महात्मा गान्धी अपनी यात्रा के २४वें गाँव जयाग में आज प्रातःकाल सवा आठ बजे के लगभग पहुँचे। पंचगाँव से आप नित्य की भाँति पैदल ही चले और डेढ़ मील का मार्ग ४० मिनट में तय किया।

गान्धीजी से नोआखाली जिला मुस्लिम लीग की ओर से कुछ लोग लीग के मंत्री मि० मुजीबर रहमान की अध्यक्षता में डेपुटेशन के रूप में मिले और अनेक शिकायतें की। उन लोगों ने कहा कि अगर नोआखाली में स्थायी शान्ति और सद्भाव स्थापित करना है, तो कुछ बातों का होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि नोआखाली में बाहरी लोग नहीं रहने चाहिये, क्योंकि उनके रहने से हम लोगों के काम में बाधा पड़ती है। हम लोग आपके रहने में कोई हर्ज नहीं समझते, क्योंकि हमें विश्वास है कि आपके रहने से हमारा कोई नुकसान नहीं हो सकता। पर आप यहाँ के मुसलमानों को अपनी सचाई का विश्वास दिलाने के लिये कम से कम कुछ दिनों के लिये बिहार जायँ।

डेपुटेशन वालों ने यह भी कहा कि मुसलमान लोग सताये जा रहे हैं और बहुत से बूढ़े तथा बेगुनाह लोग गिरफ्तार किये

गये हैं। मुसलमानों के साथ रियायत की जानी चाहिये, ताकि शान्ति स्थापित होने में जल्दी हो। डेपुटेशन वालों ने गांधीजी की प्रार्थना सभाओं का भी उल्लेख किया और कहा कि आपकी प्रार्थनाओं में कुरान की आयतों का पढ़ा जाना तथा उसका अर्थ लगाया जाना मुसलमानों को पसन्द नहीं आ सकता, क्योंकि आप हिन्दू हैं। यह भी एक वजह है जिससे मुसलमान अधिक संख्या में आपकी प्रार्थना सभाओं में नहीं आते।

गांधीजी ने इन बातों का जवाब देते हुए कहा कि—'मैं तो हमेशा अपने को जनता का आदमी समझता रहा हूँ और जनता के ही लिये हूँ तथा हमेशा जनता के बीच में ही रहूँगा। अगर आप लोग मुस्लिम जनता के दिलों तक पहुँचने का कोई दूसरा प्रभावशाली रास्ता बतावें, तो मैं उसे सुनने के लिये तैयार हूँ। पर मैं नोआखाली से किसी भी तरह जाने को तैयार नहीं हूँ। जहाँ तक दूसरे लोगों का नोआखाली में काम करने का सम्बंध है, यह काम बङ्गाल सरकार का है कि वह देखे कि जो लोग यहां काम कर रहे हैं, उनसे नोआखाली में शान्ति स्थापित करने के उनके काम में क्या बाधा पड़ती है।'

अपने बिहार जाने के बारे में गांधीजी ने कहा कि मैं जानता हूँ कि मुस्लिम लीगी दलकों की यह राय है कि मैं बिहार जाऊँ। मगर मैं बिहार सरकार के बराबर सम्पर्क में रह रहा हूँ कि बिहार में मुस्लिम शरणार्थियों की सहायता के लिये क्या काम हो रहा है और बिहार सरकार का एक प्रतिनिधि मेरे नोआखाली के दौरे में बराबर मेरे साथ रहता आया है। अगर मैं

अभी बिहार जाऊँ और वहाँ देखूँ कि मैंने जो कुछ कहा है, वह सब बिहार सरकार ने किया है, कुछ छोड़ा नहीं है, तो वह सब मुझे साफ-साफ सब कहना पड़ेगा और उससे सम्भव है कि मुस्लिम लीग वालों के काम में कोई सहायता न मिले।

नोआखाली में मुसलमानों की अधिक संख्या में गिरफ्तारी के सम्बंध में गांधीजी ने कहा कि समाज सुधारक का कर्तव्य तो यह है कि अपनी जनता में ऐसी जागृति उत्पन्न करे कि लोग अपने अपराधों को स्वयं स्वीकार कर लें और बेगुनाह लोग न पकड़े जायँ। असली अपराधी लोग अगर अपने को गिरफ्तार करवा लें, तो निर्दोष लोग गिरफ्तार होने और सजा पाने से बच जायँगे। मगर जब तक यह नहीं होता, तब तक उपद्रवियों के नेता जरूर पकड़े जाने चाहिये।

प्रार्थना के सम्बंध में गांधीजी ने कहा कि अगर लोगों में इतनी असहिष्णुता है कि कोई आदमी अपनी इच्छानुसार प्रार्थना भी नहीं कर सकता, तो मैं नहीं समझता कि बेचारे हिन्दुस्तान के भाग्य में क्या बदा है। मैं तो अपने एक खुदा परस्त दोस्त के ही कहने से अपनी प्रार्थना में कुरान की आयतों को भी शामिल किया था। इसमें सन्देह नहीं कि मैं इस्लाम के सिद्धान्तों के विरुद्ध नहीं जाना चाहता पर साथ ही मैं किसी एक आदमी की या आध दर्जन आदमियों की बात भी सुनने को तैयार नहीं हूँ कि कुरान की कुछ आयतें पढ़कर मैं इस्लाम के खिलाफ जा रहा हूँ।

लीगियों के डेपुटेशन से मिलने के बाद गांधीजी अपनी

प्रार्थना सभा में गये और प्रार्थना के बाद अपने भाषण में आपने डेपुटेशन वालों से हुई अपनी वार्ता का उल्लेख किया। आपने कहा कि मुस्लिम जनता के हित के लिये ही मैं बिहार सरकार पर बराबर जोर डालता आया हूँ और नोआखाली में भा जो कुछ कर रहा हूँ, उसमें भी मुसलमानों का अधिक हित है। मैं स्वयं इस ढङ्ग से नोआखाली में काम कर रहा हूँ कि मुसलमानों को किसी तरह की शिकायत न हो। मुसलमानों की ज्यादतियों की मैंने बहुत थोड़ी चर्चा कर और वह भी बहुत दबी जबान से की है। फिर भी अगर लोग इतना भी सुनना पसन्द नहीं करते और जिस संयत ढङ्ग से गैर-मुस्लिम कार्यकर्तागण नोआखाली में शान्ति स्थापना का काम कर रहे हैं, वह भी उन्हें पसंद नहीं आता, तो यह हिंदुस्तान की बदकिस्मती ही है।

प्रार्थना के बाद गांधीजी शाम को टहलने के लिये निकले। टहलते समय आपने अनेक ग्रामीणों से, जिनमें हिंदू और मुसलमान दोनों थे, बातें कीं और उनका हाल-चाल पूछा।

जयाग में गान्धीजी ने शरणार्थियों के कैम्प में एक स्कूल का उद्घाटन किया और उसमें विद्यार्थियों को कुछ पढ़ाया भी। छोटे बच्चों को गान्धीजी ने स्लेट पेन्सिल तथा पुस्तकें भी बटवायीं। उद्घाटन का उत्सव सादे ढङ्ग का था, लेकिन था बड़ा आकर्षक। ग्रामीणों तथा शरणार्थियों ने गान्धीजी का अच्छा स्वागत किया था।

—::❀::—

अमकी

[३० जनवरी]

महात्मा गान्धी आज जयाग गाँव से साढ़े सात बजे अपने दौरे के ५वें गाँव अमकी के लिये रवाना हुए। आपने ढाई मील का मार्ग ४० मिनट में समाप्त किया और ८ बजकर १० मिनट पर अमकी पहुँचे। आप यहाँ श्री यशोदा कुमार दे नामक एक बङ्गाली सज्जन के यहाँ ठहरे। इस मकान में चारों ओर अभी हाल में टिन के कई नये शेड बनवाये गये हैं।

अमकी गाँव बेगमगंज थाने में लगता है और चौमुहानी से लगभग ७ मील है, जहाँ कि गांधीजी नोआखाली का दौरा गत नवम्बर में आरम्भ करने पर पहिले-पहिल यहाँ आये थे। अमकी डिस्ट्रिक बोर्ड की सड़क के बगल ही में है। यहाँ गांधीजी जिस कुटी में ठहराये गये हैं, वह नोआखाली के अतिरिक्त मैजिस्ट्रेट मि० जमन की हिदायत से बने हुए नमूने के एक मकान से थोड़ी दूर पर है।

स्मरण होगा कि सरकार ने प्रत्येक ऐसे कुटुम्ब को जो २५० रु० मकान बनवाने के लिये देने को कहा है, जो पिछले उपद्रवों में नष्ट कर दिये हैं, उस रकम को नाकाफी समझे जाने के बारे में मि० जमन से कुछ समय पहिले गान्धीजी से बातें हुई थीं और उसमें यह तय हुआ था कि सरकार ५ आदमियों

के कुटुम्ब के रहने योग्य नमूने का एक मकान बनवायेगी, जिसमें एक सोने के लिये कमरा, एक रसोई-घर एक पाखाना रहेगा और यह मकान सरकार द्वारा मंजूर की गयी २५० रु० की रकम में बनाया जायगा।

इसी के साथ-साथ एक मकान श्री सतीशदास गुप्त ने खिजिरखिल कैम्प में बनवाने को कहा। श्रीदास गुप्त के अनुमान से ऐसे मकान में कम-से-कम ८०० रु० खर्च होगा।

सरकार के बनाये मकान रहने योग्य नहीं

गान्धीजी ने अमकी से दूसरे गाँव में प्रार्थना के लिये जाते समय मि० जमन द्वारा बनवाया गया नमूने का मकान देखा। उसे अच्छी तरह देखने के बाद गान्धीजी ने कहा कि मेरी राय में तो यह मकान मनुष्यों के रहने लायक नहीं है आपने कहा कि यह मकान न तो जाड़े में रहने लायक है और न गरमी में। मकान तो सरकार को ऐसा बनाना चाहिये, जो ग्रामीणों के लिये नमूना हो और वे उसे देखकर अपना मकान बनवा सकें। अगर ऐसा न हुआ, तो मकान की समस्या शरणार्थियों की हल न होगी और वे मकान बनवा ही न सकेंगे।

गान्धीजी ने कहा कि झोपड़े नारियल की पत्तियों या दूसरी ऐसी चीजों से बनवाये जायँ, जो बङ्गाल के इन हिस्सों में बहुतायत से मिलती हों। मि० जमन ने गान्धीजी के बताये अनुसार मकान बनवाना मंजूर किया और कहा कि ऐसा मकान बनवा कर आपको दिखाएँगे।

बाद में अपनी प्रार्थना सभा में भी गान्धीजी ने इस झोपड़े

१०—कष्ट का अन्त-शिरोधी ग्राममें गांधीजी की शिष्या कुमारी अमतुस सलाम २५ दिन के उपवास के बाद गांधीजी के हाथ से नारंगी का रस ग्रहण कर रही है।

का जिक्र किया। आपने कहा कि ऐसा मकान रहने योग्य नहीं है। मकान क्या केवल एक संदूक है। ये मकान गरमी के दिनों में भट्टी की तरह तपेंगे और इसमें रहने वाले भुन जायँगे। गान्धीजी ने कहा कि बाँस के झोपड़े बनवाये जायँ। ऐसे झोपड़े हवादार और ठण्डे होंगे और देखने में भी अच्छे लगेंगे।

प्रार्थना की सभा से लौटते हुए गान्धीजी एक मुसलमान के मकान पर गये। चूँकि गांधीजी उस मुसलमान से हिन्दी में बोल रहे थे, तो एक मुस्लिम सज्जन ने कहा कि हम लोग आपकी हिन्दुस्तानी नहीं समझ सकते। गांधीजी ने कहा कि मैं बङ्गला भाषा सीख रहा हूँ और दो या तीन महीने में बङ्गला बोलने लगूँगा।

गांधीजी ने अमकी से एक वक्तव्य नागरी और फारसी लिपि के झगड़े के सम्बंध में प्रकाशित किया और कहा कि सब लोग दोनों लिपियाँ सीखें।

—※—

नवाग्राम

[३१ जनवरी]

गांधीजी अमकी से दूसरे गाँव नवाग्राम गये। यह गाँव अमकी से ढाई मील पर है। नवाग्राम जाते हुए गांधीजी रास्ते में तीन मकानों पर थोड़ी-थोड़ी देर रुके, जिनमें से दो मकान मुसलमानों के थे। पहिला मकान हबीबुल्ला मास्टर का था, जो बहुत दूर से गांधीजी के स्वागत के लिये आये थे। गांधीजी यहाँ मकान के बाहर एक चारपाई पर बैठाये गये। आपने वहाँ जमा हुए स्थानीय ग्रामीणों से कुछ देर बातें कीं और कुमारी मनु गान्धी ने मकान के अन्दर जाकर स्त्रियों से बात-चीत की। कुछ फल इत्यादि गान्धीजी को भेंट किये गये, जिन्हें आपने वहाँ उपस्थित बच्चों को बाँट दिया।

दूसरा मकान श्री आनन्दकुमार दास का था। यहाँ स्त्रियों ने गांधीजी का स्वागत किया। आप मकान के अन्दर भी ले जाये गये, जहाँ लड़कियों ने 'वंदेमातरम्' गाया। तीसरा मकान गुलाबअली व्यापारी का था। यहाँ भी गान्धीजी को कुछ फल भेंट किये गये, जिन्हें आपने बच्चों को दे दिया।

आज की यात्रा में गांधीजी के साथ फ्रेंड्स एम्बुलेन्स यूनिट दल के मि० एलेक्जेण्डर होरेस भी थे। आप दो दिन तक गांधीजी के साथ रहे।

यहाँ यह मालूम हुआ कि पूर्वी बङ्गाल के उपद्रव पीड़ित सभी क्षेत्रों से, जिनमें नोआखाली भी है, सरकार ने फौजी पहरा हटा दिया। फौज हटाने का काम एक हफ्ते से धीरे-धीरे हो रहा था।

नवाग्राम में गान्धीजी को पण्डित जवाहरलाल नेहरू की एक चिट्ठी मिली, जो नेहरूजी को मध्यप्रान्त के एक जमींदार ने भेजी थी और जिसमें यह लिखा था कि मैं मध्यप्रान्त में अपनी जमींदारी में दो सौ उपद्रव-पीड़ित लोगों को जमीन देने और बसाने के लिये तैयार हूँ।

गान्धीजी ने इसका उत्तर नेहरूजी को भेजते हुए लिखा कि मैं लोगों की आबादी एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में जाने के विरुद्ध हूँ। गान्धीजी ने इस मामले की जिक्र अपनी प्रार्थना-सभा में भी किया।

तेभागा आन्दोलन पर गान्धीजी का मत

नवाग्राम की प्रार्थना-सभा में नवाग्राम मिडिल स्कूल के कुछ कार्य-कर्ताओं ने गान्धीजी से बङ्गाल के कुछ हिस्सों में शुरू हुए 'तेभागा' आन्दोलन के संबंध में प्रश्न किया और यह जानना चाहा कि आपका इस आन्दोलन के बारे में क्या मत है।

यह आन्दोलन किसानों द्वारा उठाया गया है, जिसका उद्देश्य यह है कि जमीन की उपज में से जमींदार लोग किसानों से जो आधा हिस्सा ले लेते हैं, वह आधा न देकर तिहाई हिस्सा दिया जाय। गांधीजी ने इस सम्बंध में अपना मत प्रकट करते

हुए इस आन्दोलन का स्वागत किया और कहा कि मेरी राय तो यह है कि खेतों की सारी उपज किसानों की होनी चाहिये, क्योंकि मेरे विचार में जमीन किसी की नहीं है, वह ईश्वर की है और जो आदमी जमीन जोतने-बोने में कोई मेहनत नहीं करता, उस का कोई हिस्सा उसकी उपज में नहीं होना चाहिये। जमीन तो किसी आदमी की नहीं बल्कि परमात्मा की है, जो हम सब लोगों का मालिक है और उस पर हक उसी का हो सकता है, जो उसमें परिश्रम करे। मगर जब तक यह स्थिति न आ जाय, तब तक जमींदार का हिस्सा घटाने वाला आन्दोलन उचित ही होगा। परन्तु गांधीजी ने आन्दोलन करने वालों को यह चेतावनी दी कि आन्दोलन में हिंसा या बल-प्रयोग से काम न लिया जाय। आपने कहा कि यदि इसमें हिंसा आदि से काम लिया गया, तो उसके प्रति मेरी कोई सहानुभूति नहीं होगी।

गांधीजी ने कहा कि यह तो ऐसा सुधार है, जो लोकमत का आदर करने वाले अधिकारियों को स्वयं करना चाहिये। इसलिये धर्म से काम लेना चाहिये। आन्दोलन यदि सचाई और शुद्ध भावना से चलाया गया, तो अवश्य सफल होगा, क्योंकि यदि साधन शुद्ध होगा, तो उद्देश्य अवश्य सिद्ध होगा और यदि साधन तथा उद्देश्य ही शुद्ध नहीं होगा, तो ऐसा आन्दोलन कभी सफल नहीं होगा।

दूसरा प्रश्न गांधीजी से यह पूछा गया कि मुसलमानों ने हिंदुओं का बायकाट करना शुरू किया है और मछली पकड़ने

बढ़ईगीरी आदि पेशों का काम हिंदुओं से न लेकर मुसलमानों ने स्वयं करना शुरू कर दिया है; जिसका नतीजा यह हो रहा है कि हिंदुओं के पेशे मुसलमानों से छूट रहे हैं और सब कुछ लूटे या जला दिये जाने पर अब उनके पेट पर भी यह प्रहार हो रहा है।

गांधीजी ने इसके जवाब में कहा कि मैं यह समझता हूँ कि यह बात बढ़ा-चढ़ाकर बतायी गयी मालूम होती है, क्योंकि यह बायकाट तो कुछ ही लोग करते होंगे। मगर मेरे ख्याल में यह बायकाट चल नहीं सकता। अगर बाय-काट जारी रखा गया, तो इसका नतीजा यह भी हो सकता है कि हिंदू लोग छोड़कर हिंदू बहुमत प्रांतों में चले जायँ और वहीं जाकर रहें और यह बात ऐसी है, जिसे कोई मुसल-मान पसन्द न करेगा क्योंकि मैंने किसी मुस्लिम लीगी नेता को यह कहते नहीं सुना और न वे इसके लिये प्रोत्साहन ही देते हैं। गांधीजी ने यह सलाह दी कि बायकाट की बात अधिकारियों को बतानी चाहिये और वह बायकाट करने वालों को सजा दिलाने के विचार से नहीं बल्कि इसलिये कि अगर बायकाट की बात सही है, तो वह अधिकार रूप से उसे बता दें।

गांधीजी ने श्रोताओं से कहा कि सब लोग मिलकर ईश्वर से यही प्रार्थना करें कि वह हिंदुओं और मुसलमानों दोनों में सुबुद्धि लावे और वे एक दूसरे के प्रति घृणा का भाव निकाल कर भाई-चारे का भाव ग्रहण करें।

आक्रमण होने पर स्त्रियाँ क्या करें

एक बूढ़ी हिंदू स्त्री ने गांधीजी से यह सवाल किया कि अगर कोई उपद्रवी आक्रमण करने आवे व मुसलमान बनाने को धमकावें, तो स्त्रियाँ क्या करें। इसके जवाब में गांधीजी ने कहा कि मजहब किसी आदमी के जीवन की साँस है और चूँकि कोई आदमी किसी के धमकाने या जबरदस्ती करने से साँस लेना नहीं छोड़ सकता, उसी तरह उसे किसी के जबरदस्ती करने से धर्म नहीं छोड़ना चाहिये। आपने कहा कि हिंसा का सामना करने के लिये कोई तैयारी की जरूरत नहीं है? उस हालत में सबसे सहज उपाय स्वयं अपनी जान दे देना है। उस दशा में आक्रमणकारी क्या कर सकेगा और उसके मन में भी ग्लानि होगी।

यह पूछे जाने पर कि स्त्रियाँ अपने पास हथियार रखें या नहीं, गांधीजीने कहा कि हथियार रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। जैसे स्त्री हथियार चलाकर अपनी रक्षा करने का साहस कर सकती हैं, वह बिना हथियार के भी अपनी रक्षा कर सकती हैं। फिर एक सत्याग्राही हथियार रखने की सलाह कैसे दे सकता है। जिनमें साहस ही नहीं है, वह हथियार रखकर भी आक्रमणकारी का सामना नहीं कर सकता। वास्तविक उपाय तो अपने में साहस लाना है और यदि किसी में साहस है, तो वह बिना हथियार के भी आक्रमणकारी का सामना कर सकता है। सत्याग्रही तो अपने आत्म-बल से आक्रमणकारी पर विजय प्राप्त करेगा और यदि उसमें वह सफल न होगा, तो अपने

प्राण का त्याग कर देने का महल नुस्खा उसके पास तो सदा रहेगा ही।

यह पूछे जाने पर कि क्या आपकी सलाह यह होगी कि आक्रमणकारी द्वारा हमला होने पर क्या किसी के लिये यही उचित होगा कि आत्म-समर्पण करने की अपेक्षा वह अपना प्राण दे दे। गांधीजी ने कहा कि—निस्संदेह किसी स्त्री के लिये यही उचित है कि वह आत्म-समर्पण करने की अपेक्षा स्वयं अपनी जान दे दे। जान किस तरह से दी जाय, इस सम्बंध में गांधीजी ने कुछ नहीं बताया।

यह पूछने पर कि अगर ऐसी स्थिति आ जाय कि चाहे आक्रमणकारी की जान ले लें और चाहे अपनी जान दे दें, उस दशा में आप कौन सी बात पसन्द करेंगे, गांधीजी ने कहा कि उस दशा में मैं तो दूसरे की जान लेने की अपेक्षा अपनी ही जान देना पसन्द करूँगा।

—::※::—

अमीशापाड़ा

[१ फरवरी]

नोआखाली के एक-एक गाँव में एक-एक दिन रहकर दौरा करते हुए महात्माजी को आज एक महीना पूरा हुआ। आज आप नवाग्राम से अमीशापाड़ा गये। नवाग्राम से अमीशापाड़ा का तीन मील का मार्ग आपने १। घण्टे में समाप्त किया। आप श्री भारतचन्द्र लोध के मकान पर ठहरे।

आज की यात्रा में गांधीजी के साथ एक डाक्टर भी थे। गांधीजी अमीशापाड़ा पहुँचने पर डाक्टर से मजाक में कहा कि मैं १२५ साल तक जीना चाहता हूँ, तो क्या आप उसके लिये कोई नुस्खा बता सकते हैं। डाक्टर ने कहा, आप कुछ दिन कलकत्ते में रहकर अपना स्वास्थ्य सुधारिये। गांधीजी ने कहा कि यह कैसे सम्भव है।

अमीशापाड़ा में गांधीजी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये बहुत लोग आये थे। उनमें १०० वर्ष की एक वृद्धा भी थी। कमर झुकाये और लठिया टेकते हुए वह गांधीजी के कमरे के बाहर तक पहुँच गयी। उसे देखकर गांधीजी कमरे के बाहर आ गये और उसे अपने पास लिवा ले गये। वहाँ आपने प्रेम से उसे बैठाया और उसकी उम्र आदि पूछी। गांधीजी ने अपने गले से एक माला उतारकर वृद्धा को पहिना दिया। बुढ़िया गदगद हो गयी और फूली न समाती हुई चली गयी।

अमीशापाड़ा आते हुए गांधीजी रास्ते में वसूमियाँ चौकीदा और अलीजमन मास्टर नामक दो मुस्लिम व्यक्तियों के मकानों पर कुछ देर रुके थे। दोनों जगह आपका फल-फूल और पान से स्वागत किया गया, जिसे वहाँ उपस्थित लोगों को बाँट दिया।

इस गाँव में जहाँ गांधीजी ठहराये गये थे, ७०० वर्ष का एक प्राचीन मन्दिर था। यहाँ बहुत सी स्त्रियाँ गांधीजी के दर्शन के लिये एकत्र थीं।

अमीशापाड़ा में गांधीजी से मिलने के लिये आज अनेक प्रमुख लोग आये थे, जिनमें आठ अंग्रेज फौजी अफसर, नोआखाली के अतिरिक्त कलेक्टर मि० जमन तथा गाधीजी के एक अंग्रेज मित्र मि० होरेस एलेकजेंडर भी थे। ये सभी लोग प्रार्थना में भी सम्मिलित हुए। इन अफसरों में एक आस्ट्रेलियन अफसर भी था, जिसने अपना परिचय देते हुए गांधीजी से कहा कि मैं एक पत्रकार भी हूँ। गांधीजी ने मजाक में कहा कि पत्रकार लोग तो बड़े भयङ्कर जीव होते हैं हालाकि मैं भी पत्रकार हूँ। आपने यह भी कहा कि आस्ट्रेलिया तो सफेद चमड़े के लोगों की सम्पत्ति न केवल वर्तमान समय के लिये बल्कि भविष्य के लिये भी बन गया है।

आज की प्रार्थना सभा विराट थी, प्राय: १५,००० पुरुषों और स्त्रियों की भीड़ थी, जिनमें ९० प्रतिशत मुसलमान थे। गांधीजी ने आज की सभा में भी यह घोषित किया कि "नोआखाली से मैं तब हटूँगा जब मुझे निश्चय हो जायगा कि सब लोग हिन्दू और मुसलमान सच्चे दिलों से रहने लगे हैं। परन्तु

मैं लोगों के धोखे और बहकावे में नहीं आऊँगा और यदि देखूँगा कि लोग शान्ति और प्रेम के साथ रहने का वादा तोड़कर मुझे धोखा दे रहे हैं, तो मैं यहीं नोआखाली में अपना प्राण दे दूँगा।"

मुस्लिम आपत्तियों का उत्तर

इसके बाद गांधीजी ने कुछ ऐसे लोगों का जिक्र किया, जो प्रत्यक्ष रूप से पश्चात्ताप की भावना प्रकट करते हुए लूट का माल इसलिये वापस करने को तैयार हैं कि उन्हें गिरफ्तार न किये जायँ। कुछ लोग यह कह रहे हैं कि लूट का थोड़ा माल लौटाकर वे एकता और प्रेम का प्रमाण देना चाहते हैं। परन्तु मैं इतने ही से सन्तुष्ट नहीं हूँ। मैं चाहता हूँ कि जो कुछ भी वे लोग करें, सच्चे दिल से करें। यदि किसी व्यक्ति में पश्चात्ताप की सच्ची भावना है और वह अपने दोषों का सुधार करना चाहता है, तो उसे बिना गिरफ्तारी वगैरह के डर से अपना अपराध खुल्लम-खुल्ला स्वीकार करना चाहिये और जो उसका नतीजा हो, उसे भोगना चाहिये। परन्तु मेरा विश्वास है कि उस दशा में अपराधी को लोग क्षमा कर देंगे और पुलिस भी कोई कार्रवाई उसके खिलाफ न करेगी।

पिछले दिन की प्रार्थना सभा में एक मौलवी द्वारा यह एतराज किये जाने पर कि गांधीजी को इस्लाम के सम्बंध में कुछ कहने का अधिकार नहीं है, गांधीजी ने कहा कि मुझे अपनी सारी जिन्दगी में हिंदुस्तान में और दूसरे देशों में भी मुसलमानों के बीच रहने का और उनके रिवाजों के सम्बंध में अपना मत

प्रकट करने के कितने ही अवसर मिले हैं, परन्तु कभी किसी मुसलमान ने इस तरह की आपत्ति नहीं उठायी।

परदा प्रथा छोड़ने के सम्बंध में अपने कथन का जिक्र करते हुए गांधीजी ने कहा कि परदे की प्रथा विभिन्न देशों में भिन्न प्रकार की है और उस दिन मैंने इस सम्बंध में कुरान का जो उल्लेख किया था, उसमें यह कहा था कि कुरान में इसका कोई जिक्र नहीं है। मेरा यह विश्वास है कि इस्लाम ऐसा धर्म नहीं है कि उसके सम्बंध में किसी अन्य को अपना मत प्रकट करने की मनाही हो। यह बात इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध है।

गांधीजी ने आगे कहा कि उक्त मौलवी ने राम और रहीम तथा कृष्ण और करीम के नामों का साथ-साथ उल्लेख पर भी एतराज किया था और कहा था कि इससे इस्लाम का अपमान होता है आपने कहा कि इससे मौलवी का अज्ञान ही प्रकट होता है। मालूम होता है कि वह यह समझते हैं कि राम और कृष्ण कोई साधारण मनुष्य रहे होंगे। उन्हें शायद यह पता नहीं कि राम और कृष्ण ईश्वर के ही नाम हैं। मनुष्य ईश्वर का ध्यान विभिन्न नामों से करता है और कुरान इसके विरुद्ध नहीं है और न इससे इस्लाम का अपमान होता है। धार्मिक मनुष्य का लक्षण यह है कि उसका हृदय शुद्ध हो। जो लोग दूसरों की जायदाद लूटते हैं, दूसरों की हत्या करते हैं और उसके साथ ही खुदा का नाम भी लेते हैं, उन्हें धार्मिक या मजहब पर चलने वाला आदमी नहीं कहा जा सकता।

नोआखाली में रखी गयी फौज इन दिनों हटा ली गयी थी।

सैनिकों के हटाये जाने पर उनका अफसर अमीशापाड़ा में गांधीजी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये आया था। अमीशापाड़ा में गांधीजी से मिलने के लिये ब्रिटिश गाइना के 'लेबर एडवोकेट' नामक पत्र के सम्पादक मि० आयूब मोहम्मद एमेल भी उनकी पत्नी के साथ आये थे। इसके अतिरिक्त हिन्दू सिक्ख संरक्षक बोर्ड के मंत्री श्री बी० जोशी, सीमा प्रान्त के सरदार गणेश सिंह और नोआखाली के सैयद मोहम्मद तजम्मुल हैदर चौधरी, मि० नफीजुल हैदर चौधरी और मि० मोमीबुल हैदर चौधरी भी गांधीजी से मिले थे।

लूटे हुए माल की वापसी

स्थानीय एकता बोर्ड के अध्यक्ष मौलवी लतीफुररहमान की अध्यक्षता में एक डेपुटेशन अमीशापाड़ा में गांधीजी से मिला और पिछले उपद्रवों के दिनों में लूटा गया माल वापस करने का प्रश्न गांधीजी के सामने रखा गया। यह कहा गया कि जिन कुछ गरीबों ने पिछली लूट-पाट में हिस्सा लिया था, वे अब जो कुछ माल उनके पास बचा है, उसे लौटाने को तैयार हैं।

नोआखाली के अतिरिक्त कलेक्टर मि० जमन ने यहाँ एसोसिएटेड प्रेस के प्रतिनिधि से बातें करते हुए कहा कि शरणार्थियों के लिये जिस नमूने का मकान मैंने बनवाया था, वह गांधीजी को पसन्द नहीं आया, इसलिये मैं अब एक दूसरे ढङ्ग का मकान बनवा रहा हूँ और मेरा ख्याल है कि वह मकान गांधीजी को पसन्द आयेगा।

—::※::—

सतघरिया

[२ फरवरी]

महात्मा गांधी अमीशापाड़ा से आज सवेरे सतघरिया पहुँचे। आज का रास्ता बहुत घुमाव का था, इसलिये आपको ८० मिनट का समय उसे समाप्त करने में लगा। ८ बजकर ५० मिनट पर आप सतघरिया पहुँचे।

सतघरिया जाते समय गांधीजी को रास्ते में एक स्थान मिला, जहाँ के सभी मकान जलाकर भस्म कर दिये गये थे और सिर्फ राख का ढेर दिखायी देता था। एक मकान के ९ आदमी मार डाले गये थे। जो लोग बच रहे थे, वे आँखों में आँसू भरे गांधीजी के सामने आये। गांधीजी ने उन्हें सान्त्वना दी और कहा कि रोना मनुष्यों का काम नहीं है। धैर्य और साहस से काम लेना चाहिये और वीरता के साथ आयी हुई विपत्ति का सामना करना चाहिये।

सतघरिया पहुँचने पर गांधीजी की नोआखाली यात्रा का द्वितीय चरण समाप्त हुआ। दौरे के द्वितीय चरण में आपने नोआखाली जिले के प्रत्येक गाँव में पैदल जाने का क्रम आरम्भ किया था और एक गाँव में एक दिन आप रहते थे। परन्तु जैसा कि पिछले किसी पृष्ठ में कहा गया है, गांधीजी ने यह महसूस किया कि केवल एक दिन एक गाँव के लिये बहुत कम

होता है, न तो आप सभी इच्छुक लोगों से मिल पाते हैं और न सब काम अपने सन्तोषानुसार समाप्त कर पाते हैं, अतः आपने यह निश्चय किया था कि अब आगे आप एक गाँव में दो दिन रहा करेंगे। उसी निश्चय के अनुसार आपने सतघरिया पहुँच कर एक गाँव में एक दिन रहने का क्रम समाप्त किया और दूसरे साधूरखिल नामक गाँव में आप दो दिन रहे, यद्यपि इसे आपने अभी नियम का रूप नहीं दिया और निश्चय यही किया कि जहाँ आप आवश्यक समझेंगे वहाँ दो दिन ठहर जयँगे और जहाँ नहीं समझेंगे नहीं ठहरेंगे। दौरे के द्वितीय चरण में आप औसत रूप से एक घण्टे में तीन मील चला करते थे।

सतघरिया की प्रार्थना सभा में भाषण करते हुए गांधीजी ने मुस्लिम लीग के अभी हाल में कराची में पास किये गये प्रस्ताव पर अपना मत प्रकट किया, जिसमें लीग के विधान सम्मेलन में सम्मिलित न होने का निश्चय काँग्रेस पर तीव्र आक्षेप करते हुए किया गया था। गांधीजी ने कहा कि लीग काँग्रेस की अखिल-भारतीय कमेटी द्वारा पिछले पास किये गये प्रस्ताव को गैर, इमानदारी का प्रस्ताव समझती है और उसने कहा है कि काँग्रेस ने जो बात प्रस्ताव में कही है, वह वास्तव में उसकी नियत में है नहीं। साथ ही लीग ने यह भी कहा है कि विधान सम्मेलन का चुनाव जायज नहीं है।

गान्धीजी ने कहा कि अगर लीग यह समझती है कि विधान सम्मेलन का चुनाव और उसकी कार्यवाही जायज

नहीं है, तो उसके लिये सीधा मार्ग यह है कि वह इसका फैसला अदालत से करावे। नहीं तो, उसके इस आरोप का कोई अर्थ नहीं है। आपने इस बात पर खेद प्रकट किया कि लीग काँग्रेस को गैर-ईमानदार समझती है। एक का दूसरे को बेईमान समझना बड़ी अनुचित बात है और यह दोनों महान संस्थाओं के लिये शोभा की बात नहीं है। जनता को भी यह नहीं समझना चाहिये कि काँग्रेस और लीग एक दूसरे की दुश्मन है। राजनीतिक झगड़ा केवल इन दो संस्थाओं के बड़े-बड़े लोगों में ही सीमित रहना चाहिये और गाँवों के लोगों में नहीं पहुँचना चाहिये, क्योंकि यदि वह गाँवों में पहुँचा, तो वह अत्यन्त विनाशकारी होगा।

महात्माजी ने आगे कहा कि मुस्लिमलीग को विधान सम्मेलन में शामिल होना चाहिये और उसमें उपस्थित प्रतिनिधियों के सामने अपना पक्ष उपस्थित कर उन्हें अपने मत में लाना चाहिये। परन्तु यदि वह ऐसा नहीं कर सकती और विधान सम्मेलन में जाना ही नहीं चाहती, तो उसे शान्ति के साथ प्रतीक्षा कर सम्मेलन की सचाई तथा ईमानदारी की परीक्षा लेनी चाहिये और देखना चाहिये कि विधान सम्मेलन मुस्लिम समस्या का किस प्रकार हल करता है। लीग का यह कहना ठीक नहीं है कि विधान सम्मेलन में केवल सवर्ण हिन्दुओं के प्रतिनिधि हैं। उसमें परिगणित जातियों, ईसाइयों, पारसियों, एंग्लोइंडियनों, सिक्खों आदि सभी सम्प्रदायों के प्रतिनिधि हैं। यह बड़ी उत्तम बात है कि डा० अम्बेदकर भी सम्मेलन में

सम्मिलित हो रहे हैं। मुस्लिम लीग ने अपने प्रस्ताव में जो कहा है कि ब्रिटिश सरकार को चाहिये कि वह विधान सम्मेलन भङ्ग कर दे, उस सम्बंध में गान्धीजी ने कहा कि ब्रिटिश सरकार अपनी योजना तथा घोषणा को अमल में लाने के लिये वाध्य हैं और मुझे आशा है कि वह अपने वचन से हटेगी नहीं।

प्रार्थना से लौटते समय गान्धीजी हरगोबिन्दपुर गाँव में करीमबख्श मियाँ नामक एक मुस्लिम सज्जन के मकान पर गये। वहाँ गान्धीजी का स्वागत सन्तरे इत्यादि से किया गया, जिसे आपने वहाँ उपस्थित बच्चों को बाँट दिया। इसके बाद आप कुमारी मनु गांधी के साथ करीमबख्श के मकान के अन्दर गये और, यह सलाह दी कि बच्चों को साफ-सुथरा रखना चाहिये।

—::※::—
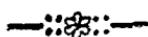
७—प्रार्थना के बाद हेमचपडी में रेड क्रॉस केन्द्रकी श्रीमती अलेक्जेंडर से गांधीजी बात कर रहे हैं।

साधूरखिल

[३ फरवरी]

गान्धीजी को मुसलमानों का मान-पत्र

सतघरिया से महात्मा गान्धी आज प्रातःकाल साढ़े आठ बजे साधूरखिल नामक गाँव पहुँचे। यह गाँव सतघरिया से तीन मील पर है। साधूरखिल आते समय गांधीजी के साथ बहुत लोगों की भीड़ आयी और वे सब झाँझ तथा करताल के साथ रामधुन गाते हुए आये। गांधीजी यहाँ श्री यशोदापाल के मकान पर ठहरे और दो दिन रहे। साधूरखिल पहिला गाँव है, जहाँ गांधीजी दो दिन रहे।

यहाँ महात्माजी को उपद्रव-पीड़ितों की सहायता के लिये ८२,००० रु० एक कारखाने से मिले और १०,००० रु० महाराज मोरवी से प्राप्त हुए। सहायता के लिये मिलने वाले रुपये गांधीजी लोगों को खेती तथा अन्य पेशों के औजार इत्यादि देने में खर्च करेंगे।

साधूरखिल गाँव में हिन्दुओं की संख्या पहिले ही से बहुत कम थी, किन्तु पिछले उपद्रवों के बाद यहाँ हिन्दू नहीं के बराबर है। साधूरखिल में एक बड़ी महत्वपूर्ण बात हुई, जो नोआखाली जिले के दौरे में अपने ढङ्ग की प्रथम घटना थी। यहाँ की प्रार्थना सभा एक मुसलमान सज्जन सलामउल्ला साहब के मकान पर हुई थी, जिसके लिये सलामउल्ला साहब ने गान्धीजी से विशेष रूप से प्रार्थना की थी कि आज की प्रार्थना

मेरे गरीबखाने पर की जाय। उन्होंने यह आश्वासन भी गांधीजी को दिया था कि रामधुन ताली बजाकर गाने पर मुसलमानों की ओर से कोई एतराज नहीं किया जायगा। गांधीजी ने बड़ी प्रसन्नता से यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और प्रार्थना सभा उन्हीं के मकान पर हुई।

प्रार्थना के बहुत पहिले से बहुत मुसलमान एकत्र हुए थे। प्रार्थना के बाद गान्धीजी को मुसलमानों की ओर से मान-पत्र भेंट किया गया। मान-पत्र में गांधीजी के प्रति सम्मान प्रकट करने के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रश्नों का भी उल्लेख किया गया था जैसे कि मस्जिद के सामने बाजा, गोहत्या इत्यादि। इधर पिछले कई दिनों से प्रार्थना सभाओं में मुसलमानों की ओर से गांधीजी से कुछ प्रश्न पूछे जाते थे। प्रश्न प्रायः एक ही किस्म के होते थे, जिनमें यह पूछा जाता था कि गांधीजी को इस्लाम के सम्बंध में कुछ कहने का क्या अधिकार है। इसी ढङ्ग की कुछ बात आज के मान-पत्र में भी उठायी गयी।

गान्धीजी ने मस्जिद के सामने बाजा बजाने में हिन्दुओं के अधिकार और मुसलमानों के गोकशी करने के अधिकार के सम्बंध में कहा कि ये प्रश्न कानून से सम्बंध रखते हैं, जिनके बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता। मैं तो केवल एक बात जानता हूँ और वह यह कि हिन्दू और मुसलमान सब एक-दिल हो जायँ और एक दूसरे के विरुद्ध जो भावनाएँ उनके दिलों में है उन्हें निकाल दें। अगर यह बात हो जाय, तो बाजा, गोकशी आदि के सब सवाल आप से आप हल हो जायँगे। जब तक

दोनों के दिल एक नहीं होते, तब तक ये झगड़े बराबर बने रहेंगे। और यह बदकिस्मती दोनों को हमेशा गुलाम बनाये रहेगी।

गान्धीजी ने आगे कहा कि बदला लेने की भावना दिलों से निकाल देनी चाहिये। बादशाह खाँ ने पठानों के दिलों से यह भावना बहुत कुछ निकाल दी है, जो कि पठानों के पुश्त-दर-पुश्त से चली आ रही थी और उनमें अहिन्सा की भावना भर दी है। मैं चाहता हूँ कि वही भावना नोआखाली के लोगों में भी भर जाय। अगर आप लोग सच्चे दिल से यह विश्वास नहीं करते कि बिना विभिन्न सम्प्रदायों के बीच असली शक्ति और प्रेम के न तो पाकिस्तान हो सकता है और न हिन्दुस्तान, तो यह गुलामी हमेशा आपके पल्ले पड़ी रहेगी और उस हालत में न पाकिस्तान हो सकेगा और न हिन्दुस्तान।

गांधीजी ने कहा कि चार मुस्लिम युवक मित्र मेरे पास आये थे, जिन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि नोआखाली और आस-पास के स्थानों में हुई हत्याओं की संख्या तो बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बतायी गयी है, उसे मैंने गलत क्यों नहीं कहा है और हत्याओं की ठीक संख्या क्यों नहीं बतायी है। मैंने उनसे कहा कि यह मैंने इसलिये नहीं किया है क्योंकि मैंने अपनी आँखों से जो कुछ देखा है, उस सबको मैं प्रकट नहीं करना चाहता। पर अगर मेरे कहने से बात बनती हो, तो मैं यह कह सकता हूँ कि यहाँ हुई हत्याओं की जो संख्या ५,००० बतायी गयी है। उसके समर्थन में मुझे कोई प्रमाण नहीं मिला है।

हत्याओं की संख्या निस्सन्देह इससे बहुत कम है। मैं यह स्वीकार करने को तैयार हूँ कि बिहार में जितनी हत्याएँ हुई हैं और जैसी बर्बरताएँ वहाँ की गयी हैं, उन्हें देखते हुए नोआखाली पीछे पड़ जाता है। परन्तु इसके साथ ही मैं यह नहीं कह सकता कि यहाँ से अधिक सेवा मैं बिहार जाकर कर सकता हूँ। बिना स्वयं अपने विश्वास के और किसी के कहने मात्र से मैं बिहार नहीं जा सकता।

अपने भाषण के अन्त में गांधीजी ने अपने सम्बंध में और अपने कार्यों के सम्बंध में भी कुछ बातें कहीं। आपने कहा कि नोआखाली में रहकर यह दिखाना चाहता हूँ कि सच्चा पाकिस्तान स्थापित होने पर क्या किया जा सकता है। हिन्दुस्तान में बङ्गाल एक ऐसा प्रान्त है जहाँ यह दिखाया जा सकता है। बङ्गाल ने बड़े प्रतिभाशाली हिन्दू और बड़े प्रतिभाशाली मुसलमान उत्पन्न किये हैं और बङ्गाल ने राष्ट्रीय संग्राम में बहुत बड़ा योग दिया है। अतः बङ्गाल के लिये यह उचित ही है कि वह दिखा दे कि हिन्दू और मुसलमान किस प्रकार एकता तथा प्रेम से एक साथ रह सकते हैं।

प्रार्थना के बाद गांधीजी साधारणतया टहलने के लिये निकले और इस समय में आपने कई जलाये तथा नष्ट किये गये मकानों को देखा। रात में भी आप कुछ लोगों से मिले और साथ ही कुछ आये हुए पत्रों के उत्तर लिखवाये।

दूसरे दिन गांधीजी साधूरखिल में ही रहे। इस दिन प्रातःकाल टहलने जाते समय अमीन उल्ला नामक एक मुस्लिम

सज्जन ने गांधीजी को अपने घर आने का आग्रह किया, जिसे आपने सहर्ष स्वीकार किया।

यशोदापाल के मकान पर कार्य-कर्ताओं को उपदेश देते हुए गांधीजी ने कहा कि अपने को पूर्ण रूप से ईश्वर के हाथों में सौंपकर अपने अन्दर निर्भीकता उत्पन्न करनी चाहिये। ईश्वर के हाथों में आत्मसमर्पित करने से ही मनुष्य में निर्भीकता आती है। अपना आदर्श ऊँचा बनाये रखने के लिये लोग मृत्यु का भी निर्भीकता के साथ आलिंगन करते हैं। किसी भी परिस्थिति में भी अपना आदर्श नहीं छोड़ना चाहिये। यही वैयक्तिक साहस है। यही आत्म-सम्मान है। बिना इन बातों के जीवन व्यर्थ है।

गान्धीजी ने नोआखाली के अपने कार्य के सम्बन्ध में प्रो० जे० सी० कुमारप्पा को एक पत्र लिखते हुए लिखा कि—'मैं यहाँ अपने जीवन का सबसे कठिन कार्य कर रहा हूँ। मेरी राय में जो लोग देश का काम कर रहे हैं, वे अपने-अपने क्षेत्रों में ही अधिक लगन से काम कर मेरे यहाँ के कार्य में सबसे बड़ी सहायता पहुँचायेंगे। आपने जो ग्राम-सुधार का काम उठाया है उससे तो मेरे यहाँ के काम में बड़ी भारी सहायता मिलेगी, क्योंकि मैं यह जानता हूँ और यहाँ एक गाँव से दूसरे गाँव जाकर मैंने यह देखा है कि ग्रामीणों में काम करना, उन्हें सफाई से रहने की बात सिखाना और चरखा तथा करघा चलाने के लिये प्रोत्साहित करना ही देश का वास्तविक तथा सबसे बड़ा काम है।

श्रीनगर

[५ फरवरी]

वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति पर गांधीजी का मत

साधूरखिल में दो दिन रहने के बाद महात्माजी ने आज ठीक साढ़े सात बजे अगले गाँव श्रीनगर के लिये प्रस्थान किया और ४० मिनट में दो मील का मार्ग चलकर आप ८ बजकर १० मिनट पर श्रीनगर पहुँचे।

गान्धीजी धान के खेतों के अन्दर बनाये गये रास्ते से होकर चले थे। जिसे स्वयंसेवकों ने रातों-रात बनाया था। श्रीनगर में आप श्री चन्द्रकुमार व्यापारी के मकान में ठहरे।

महात्माजी ने आज की प्रार्थना-सभा में कुछ मुसलमानों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर देते हुए देश की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति पर अपना मत प्रकट किया।

मुसलमानों के प्रश्न इस प्रकार थे—आपने प्रान्तों से कहा है कि जिन प्रान्तों में साहस और क्षमता हो, वे अपना विधान स्वयं बनावें और साथ ही आपने ब्रिटिश सेना से चले जाने को भी कहा है जिससे स्वाधीनता की प्राप्ति प्रमाणित हो। अतः प्रान्तों में जो कि अपने को स्वतन्त्र घोषित करेंगे, मताधिकार का आधार क्या होगा? क्या साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणाली के स्थान पर संयुक्त निर्वाचन प्रणाली जारी की जाय? क्या प्रान्तीय

एसेम्बलियों में साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के बजाय संयुक्त प्रतिनिधित्व हो ?

गान्धीजी ने इन प्रश्नों के उत्तर में कहा—कोई भी प्रान्त अपना विधान स्वयं बना सकता है, मगर वह अत्याधिक बहुमत के द्वारा ही बनाया जा सकता है। केवल एक वोट के बहुमत से नहीं। उन लोगों को स्वतन्त्रता प्राप्त करने से संसार की कोई भी शक्ति नहीं रोक सकती जो अपने विरोधियों को मारने को नहीं बल्कि उनके द्वारा अपने को ही मारे जाने के लिये तैयार हों। यह मेरा मत सन् १९१९ से है। ब्रिटिश मन्त्रि-दल की घोषणा का यही उद्देश्य है जहाँ तक मैंने उसे समझा है। किसी प्रान्त को उसकी इच्छा के विरुद्ध चलने को मजबूर नहीं किया जा सकता। जो बात एक प्रान्त के लिये लागू है, वही सभी प्रान्तों के लिये है।

मताधिकार के सम्बंध में गांधीजी ने कहा कि मैं तो बालिग मताधिकार का पक्षपाती हूँ। २१ साल या १८ साल ही की उम्र के समस्त पुरुषों और स्त्रियों को वोट देने का अधिकार होना चाहिये। परन्तु मेरे सदृश बूढ़ों को वोट देने के अधिकार का कोई उपयोग नहीं है। उनसे कोई लाभ नहीं है। भारत और समस्त संसार को अब इन बूढ़ों से क्या करना है, जो मृत्यु के मार्ग पर पाँव रखे हुए हैं। अतः मेरी राय में ५० वर्ष की आयु के बाद के लोगों को वोट देने का अधिकार नहीं होना चाहिये। इसी प्रकार सनकी लोगों और लफंगों को भी मताधिकार नहीं होना चाहिये। इसके साथ ही साम्प्रदायिकता के आधार पर

वोटाधिकार नहीं होना चाहिये, बल्कि संयुक्त निर्वाचन प्रणाली होनी चाहिये, जिसमें कुछ सीटें रिजर्व रहें मगर किसी सम्प्रदाय के लिये—मसलन, मुसलमानों, सिक्खों, पारसियों आदि को कोई पक्षपात या विशेष सुविधा नहीं होनी चाहिये।

गांधीजी ने प्रश्नों के उत्तर में अहिंसा पर जोर दिया। आपने कहा कि स्वतन्त्र भारत अहिंसा पर चलकर ही अपनी स्वतन्त्रता बनाये रख सकता है। यह समझना भारी भूल होगी कि तलवार के जोर से अंग्रेजों को हिंदुस्तान से हटाया जा सकता है। अंग्रेजों के साहस और दृढ़ निश्चय के गुण का बहुतों को पता नहीं है। वे तलवार के आगे सिर नहीं झुका सकते, पर साथ ही अहिंसा के सामने भी वे नहीं ठहर सकते। अहिंसा से बढ़कर किसी में भी शक्ति नहीं है और अगर हिंदुस्तानियों को अभी तक असली आजादी नहीं मिली है तो उसका कारण यही है कि अभी पर्याप्त अहिंसा की भावना उनमें नहीं आयी है। जितनी भी अहिंसा हमारे देश के लोगों में आयी है, उसी का यह प्रभाव है कि अंग्रेज यहाँ से हटने को तैयार हो गये हैं।

—::*::—

धरमपुर

[६ फरवरी]

महात्मा गांधी नोआखाली जिले की अपनी पैदल यात्रा के ३१वें गाँव धरमपुर में आज सवेरे पौने नौ बजे पहुँचे। धरमपुर श्रीनगर के लगभग तीन मील पश्चिम में है और इसमें अधिकांश अबादी मुसलमानों की है।

श्रीनगर से लेकर धरमपुर का मार्ग खूब सजाया गया था। जगह-जगह फाटक बनाये गये थे, जिन पर 'बापूजी स्वागतम्', 'वन्देमातरम्', 'जय हिंद', 'हिन्दू-मुस्लिम एक हों' इत्यादि वाक्य लिखे हुए थे। एक फाटक पर अंग्रेजी में 'स्वागत' लिखा था, जिसे गांधीजी ने नापसन्द किया।

रास्ते में महात्माजी केवल एक मकान पर ठहरे, जो एक मुस्लिम सज्जन असगर भूइया का था। यहाँ बड़े प्रेम से आपका स्वागत किया गया और सन्तरे आदि फल भेंट किये गये, जो तुरन्त ही बच्चों के हाथों में पहुँच गये। यहाँ पर सिकन्दर भूइया नामक एक मुसलमान ने गांधीजी से बड़ा मनोरञ्जक प्रश्न किया। उन्होंने एक पेड़ की एक डाली गांधीजी को दिखायी, जिसमें दो तरह की पत्तियाँ निकली थीं। उन्होंने पूछा—'बापूजी, यह कैसी बात है कि एक ही पेड़ में दो तरह की पत्तियाँ कैसे निकल आयीं?' गांधीजी ने तुरन्त उत्तर दिया—यह उसी तरह

है जैसे हिंदुस्तान में हिन्दू और मुसलमान हैं। यह उत्तर सुनकर सब लोग बड़े जोर से हँस पड़े।

धरमपुर की प्रार्थना-सभा में भी महात्माजी से कुछ प्रश्न पूछे गये। आज प्रश्न देश के लिये विधान निर्माण के सम्बंध में किये गये थे। सबसे पहिले नोआखाली में शरणार्थियों को फिर से बसाने और सहायता के काम में संलग्न कुमारी वीणादास एम० एल० ए० ने प्रश्न किया कि क्या दिमागी काम करने वालों और शारीरिक परिश्रम करने वालों में कोई अन्तर नहीं है? गान्धीजी ने उत्तर में कहा कि दिमागी काम भी बहुत महत्व रखता है और जीवन में उसका बहुत बड़ा उपयोग है, परन्तु इसके साथ ही शारीरिक परिश्रम भी सभी को करना चाहिये और कोई भी आदमी इस उत्तरदायित्व से मुक्त होने का दावा नहीं कर सकता।

भारत की स्वाधीनता के सम्बंध में किये गये प्रश्न का उत्तर देते हुए गान्धी ने कहा कि जब हिन्दुस्तान स्वाधीनता लेने के लिये तैयार हो जायगा, तो न तो अंग्रेज लोग, न राजा लोग और न अनेक शक्तियाँ मिलकर भी उसे स्वाधीनता लेने से रोक सकती हैं। यह पूछे जाने पर कि जो प्रान्त स्वतन्त्रता चाहें उनके लिये किस प्रकार के विधान की सलाह आप देते हैं, गान्धीजी ने कहा कि समस्त भारत के लिये स्वाधीनता समान रूप की होगी।

प्रश्न—अगर भारत के एक दूसरे से जुड़े हुए प्रांत स्वाधीनता की घोषणा नहीं करते और छितरे हुए अलग-अलग प्रान्त ही

स्वाधीनता घोषित करते हैं, तो क्या सङ्घ में सम्मिलित न होने वाले प्रान्त सामान्य हित के मामले में शेष प्रान्तों के लिये कठिनाई नहीं उपस्थित करेंगे ?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महात्मा गान्धी ने कहा कि इसमें तो मुझे कोई कठिनाई नहीं दिखायी देती यदि समाज का रूप अथवा आचरण वही हो जिसकी मैं कल्पना करता हूँ, अर्थात् वह अहिन्सा का अनुगामी हो। मान लीजिये कि विशाल आबादी वाला बङ्गाल अपने प्रतिभावान टैगोरों और सुहरावर्दियों को लेकर स्वाधीनता के आधार पर अपना विधान बनाता है और अफ़ीमची आसाम पीनक लेता है, उड़ीसा अपने कंकालों को लेकर उससे अलग रहना चाहता है तथा बिहार अपने कुटुम्बियों की हत्या में संलग्न रहता है, तो ये तीनों प्रान्त बङ्गाल से प्रभावित होंगे और उसके साथ आ जायँगे।

प्रश्न—मान लीजिये कि प्रान्तों का 'ए' समूह अपने लिये समान विधान बनाता है, तो क्या जो प्रान्त 'बी' और 'सी' दल के रहेंगे, वे भी 'ए' दल में सम्मिलित हो सकते हैं यदि वे चाहें ?

उत्तर—इसके तो कहने की आवश्यकता ही नहीं है कि यदि 'ए' समूह अच्छा विधान बनाता है, तो न केवल 'बी' और 'सी' समूहों को 'ए' में शामिल होने का अधिकार रहेगा बल्कि वे स्वतः उसकी ओर खिंच आएँगे।

—::※::—

प्रसादपुर

[७ फरवरी]

महात्मा गान्धी धरमपुर से आज प्रातःकाल ८ बजकर १० मिनट पर प्रसादपुर पहुँचे। आप यहाँ श्री उपेन्द्र मजूमदार के घर में ठहरे।

गान्धीजी ने प्रसादपुर की प्रार्थना-सभा में शरणार्थियों को फिर से बसाने और उन्हें जीविका-उपार्जन के प्रबन्ध के प्रश्न का एक बार फिर उल्लेख किया। आज की प्रार्थना में देश के अपने-अपने क्षेत्र में काम करनेवाले प्रधान कार्यकर्ता और गान्धीजी के प्रिय-पात्र मेजर जनरल शाहनवाज शामिल थे। सतीशचन्द्रदास गुप्त, कुमारचन्द्र जन आदि भी उपस्थित थे। श्रीमती बेला मित्र ने अपने मधुर कण्ठ से भजन गाया। गान्धीजी ने कहा कि एक व्यावहारिक आदर्शवादी की हैसियत से मैं यह नहीं चाहता कि शरणार्थियों की जीविका आदि की कोई व्यवस्था के बिना मैं उनसे अपने गाँवों में वापस आने के लिये जोर दूँ। उनके वापस आने के पहले यह प्रबन्ध होना चाहिये कि एक नहीं अनेक प्रकार के धन्धे उनके लिये रहें और वे जो धन्धा चाहें शुरू करें। और यदि कोई शरणार्थी शारीरिक रूप से काम करने के योग्य होते हुए भी काम करने से इन्कार करे, तो सरकार उससे कह सकती है कि एक महीने की नोटिस देने के बाद सहायता नहीं दी जायगी।

आपने कहा कि यदि प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह सुविधा हो कि वह अपने मन चाहे ढङ्ग से आराम के साथ जिस तरह से सुविधा हो रह सके तो यह संसार उस दशा में स्वर्ग ही हो जाय। परन्तु यह सम्भव नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने कुटुम्बियों की उदर-पूर्ति के उत्तरदायित्व को वहन करना ही होगा। जो लोग अपने इस उत्तरदायित्व का भी पालन नहीं करते, वे समाज के लिये, पृथ्वी के लिये भार हैं। यह ठीक है कि नोआखाली के शरणार्थी इस समय विपत्ति के मारे हैं, उनकी बुद्धि ठिकाने नहीं है और असहाय अवस्था में हैं। परन्तु जो दैवी विपत्ति उन पर आ गयी है, उसका तो अब साहस के साथ उन्हें सामना करना ही होगा।

शरणार्थियों के प्रश्न पर परामर्श करने के लिये आज गान्धीजी के पास नोआखाली के डिस्ट्रिक मैजिस्ट्रेट अतिरिक्त डिस्ट्रिक मैजिस्ट्रेट मि० जमन और अतिरिक्त सुपरिंनटेंडेंट पुलिस आये थे। गान्धीजी ने इन व्यक्तियों के आगमन और उनसे हुई वार्ता का जिक्र करते हुए कहा कि ये अफसर शरणार्थियों को सहायता देने के सम्बन्ध में मेरी राय जानने के लिये आये थे। इस सम्बन्ध में इन अधिकारियों ने यह निश्चय किया है कि शारीरिक श्रम करने वाले शरणार्थियों के लिये सड़कों की मरम्मत, ग्राम पुनर्निर्माण, अपने ही खेतों की मरम्मत आदि का काम दिया जाय। गान्धीजी ने कहा कि शरणार्थियों को इन कामों से लाभ उठाना चाहिये और सरकार के साथ सहयोग करना चाहिये। आपने कहा कि बिना शारीरिक परिश्रम

किये राशन की आशा करना किसी भी नागरिक के लिये अच्छा नहीं है।

शरणार्थियों के लिये जीविका के प्रश्न पर अपना विचार प्रकट करने के बाद महात्माजी ने आज फिर इस बात पर जोर दिया कि आप चाहते हैं कि जहाँ तक सम्भव हो सके आपको नोआखाली में काम करने के लिये अकेले छोड़ दिया जाय। आपने कहा कि लोग मेरी यात्रा में, मेरे टहलने जाने के समय, प्रायः सभी जगह अधिक संख्या में मुझे घेरे रहते हैं। खास कर संध्या समय अपने टहलने के समय मैं चाहता हूँ कि मेरे साथ कोई न रहे और यदि कोई रहे भी, तो मेरे साथ के थोड़े से लोग रहें।

बङ्गाल सरकार ने गान्धीजी के साथ तीन पुलिस मैनों को तैनात कर दिया है, जो बराबर आपके साथ रहते हैं। एक उच्च पुलिस अधिकारी को हिदायत है कि वे गान्धीजी की हिफाजत के लिये बराबर उनके साथ रहें और जहाँ भी वे जायँ, पुलिस वाले उनके साथ रहें।

नन्दीग्राम

[८ फरवरी]

गान्धीजी प्रसादपुर से आज सवेरे साढ़े सात बजे प्रस्थान कर और एक घण्टा २० मिनट में लगभग तीन मील का मार्ग तय कर नन्दीग्राम पहुँचे। आज की यात्रा में मेजर जनरल शाहनवाज, श्रीमती बेला मित्र और श्री हरीदास मित्र भी गान्धीजी के साथ थे। मेजर जनरल शाहनवाज दो दिन के लिये गान्धीजी के पास फिर आये थे।

प्रसादपुर से नन्दीग्राम तक रास्ते भर बराबर भजन गाया जाता रहा। भजन और गांधीजी का आगमन सुनकर मार्ग के गाँवों के निवासी-स्त्री-पुरुष और बच्चे अपने घरों से बाहर निकल आते थे। कितने ही स्थानों में बूढ़ी स्त्रियों ने गांधीजी को मालाएँ पहिनायीं और अपने को धन्य माना।

नन्दीग्राम में भी महात्माजी का यह आगमन द्वितीय बार हुआ है। नोआखाली की आरम्भिक यात्रा में भी आप एक बार यहाँ आ चुके हैं।

बङ्गाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मोहन कलकत्ते से आज गांधीजी से मिलने नन्दीग्राम आये और प्रायः दो घण्टे तक बातें कीं। वार्ता किस विषय पर हुई यह ज्ञात नहीं हो सका। उसी शाम को श्री घोष कलकत्ते वापस चले गये।

नंदीग्राम की प्रार्थना-सभा एक खुले मैदान में हुई। सभा में हिन्दू और मुसलमान दोनों सम्प्रदायों के लोग बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थे, जिनमें स्त्रियाँ भी काफी थीं। आज की सभा में भी गांधीजी से कुछ प्रश्न किये गये। पहला प्रश्न मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं के बायकाट के सम्बंध में था। गांधीजी ने कहा कि बायकाट की बात मैं पहले भी सुन चुका हूँ और इस सम्बंध में पहले की कुछ सभाओं में अपने विचार भी प्रकट कर चुका हूँ। मुझे आशा है और मैं जानता भी हूँ कि यह बायकाट समस्त नोआखाली जिले भर में नहीं है। मगर यह बायकाट चाहे थोड़ी ही जगहों में क्यों न हो, यह निश्चित है कि इससे न तो बायकाट करने वालों का कोई हित होगा और न उन्हीं लोगों का जिनका बायकाट किया जाता है।

दूसरा प्रश्न यह किया गया कि आपके पिछले तीन महीनों की कोशिशों से हिन्दुओं की मनोवृत्ति में कोई परिवर्तन हुआ है? गान्धीजी ने कहा कि इस प्रश्न का उत्तर तो हिन्दू लोग ही अच्छी तरह दे सकते हैं। परन्तु जहाँ तक मेरा सम्बंध है, मैं तो यह विश्वास कर अपने को खुश कर ही लेता हूँ कि हिन्दुओं ने कम-से-कम फिलहाल तो अपनी कुछ कायरता त्याग ही दी है।

तीसरा प्रश्न किया गया कि आपकी उपस्थिति से क्या शान्तिप्रिय मुसलमानों पर इतना प्रभाव पड़ा है कि वे अपने सम्प्रदाय के गुण्डे लोगों के उपद्रव करने पर उनके विरुद्ध खड़े हो सकते हैं और उनका विरोध कर सकते हैं? गान्धीजी ने इसके
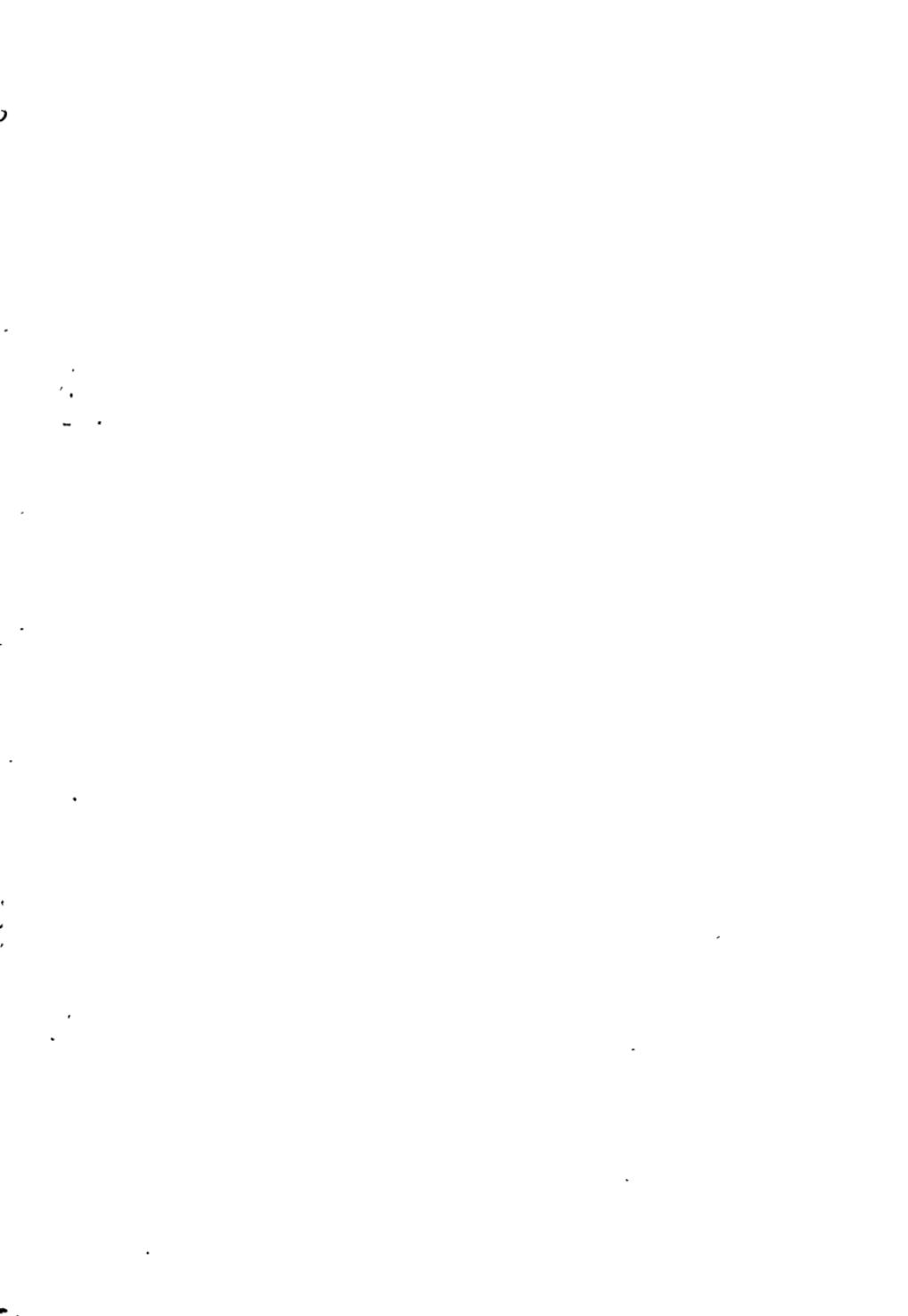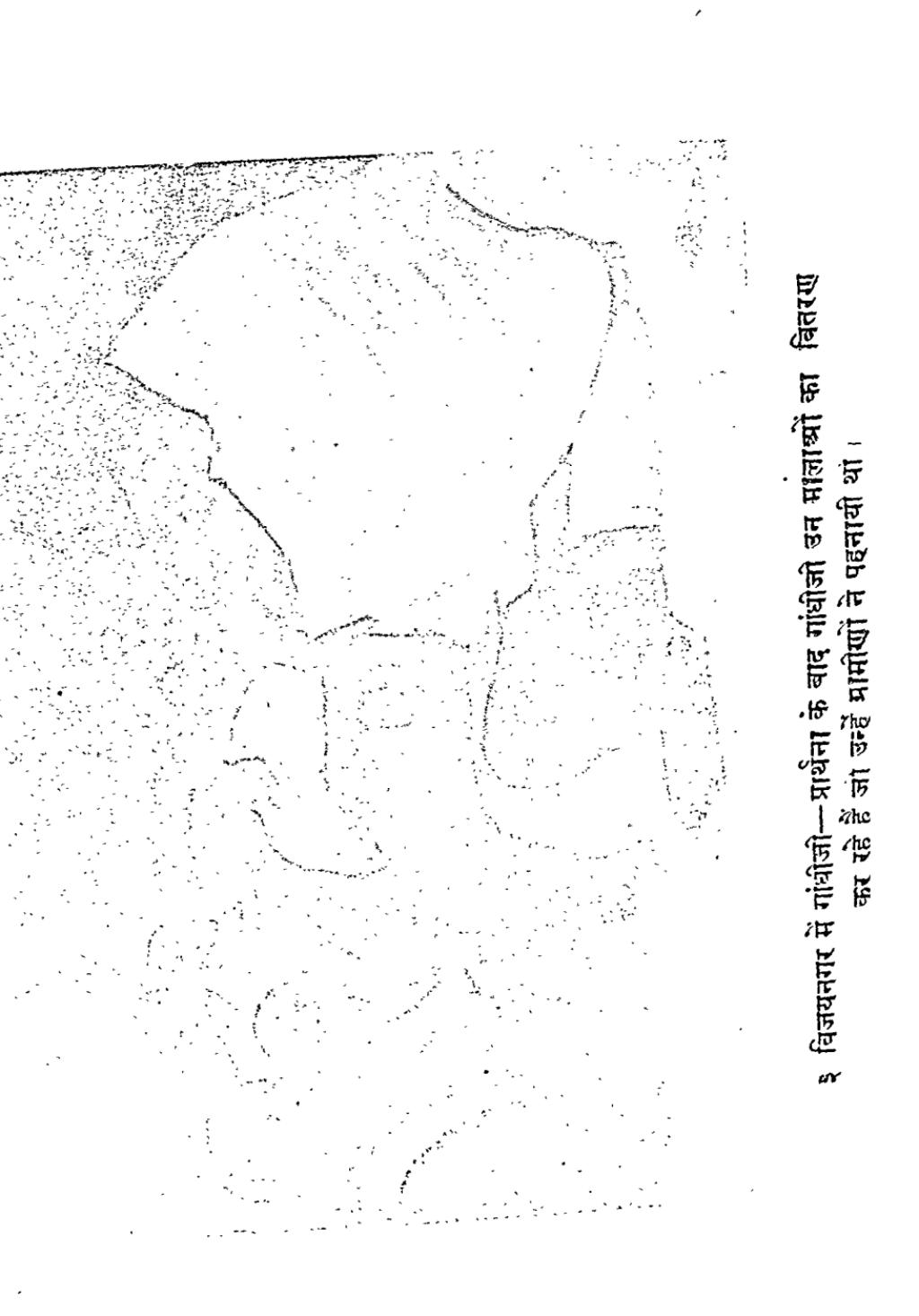
३ विजयनगर में गांधीजी—प्रार्थना के बाद गांधीजी उन मालाओं का वितरण कर रहे हैं जो उन्हें ग्रामीणों ने पहनायी थी।

उत्तर में कहा कि मुझे इस बात से प्रसन्नता हुई है कि प्रश्नकर्ता यह स्वीकार करते हैं कि नोआखाली के मुसलमानों में एक ऐसा दल है, जो शान्ति का प्रेमी है। अगर मुसलमानों में ऐसा कोई दल न हो, तो निस्सन्देह यह बड़े ही दुख की बात होती। गान्धीजी ने कहा कि इस प्रश्न का भी मेरा उत्तर वही होगा, जो अभी इससे पहले वाले प्रश्न का मैं दे चुका हूँ। अर्थात् यह कि इस प्रश्न का उत्तर अधिक निश्चयता से मुसलमान लोग ही दे सकते हैं, परन्तु मैं तो इतना विश्वास करता ही हूँ कि कितने ही मुस्लिम मित्रों पर यह प्रभाव पड़ा है। मसलन, भटियालपुर में ही कई मुसलमानों ने यह घोषित किया था कि वे नष्ट किये जाने वाले मन्दिरों की रक्षा करेंगे। इसके अतिरिक्त मुझे अपनी यात्रा में ऐसे कई दूसरे उदाहरण भी मिले हैं।

आज की प्रार्थना सभा में भी मेजर जनरल शाहनवाज थे। शाम को टहलने के समय गान्धीजी से एक मुसलमान ने अपने घर आने का आग्रह किया। समय न होते हुए भी गांधीजी ने उनके मकान पर कुछ देर रुके। मुस्लिम सज्जन ने गान्धीजी से कहा कि मैं आपकी क्या खातिर कर सकता हूँ। गान्धीजी ने कहा कि मैं तो और कुछ नहीं, केवल आपका हृदय चाहता हूँ। गान्धीजी के साथ टहलने में मेजर जनरल शाहनवाज भी थे और गान्धीजी उनसे बातें कर रहे थे।

—::※::—

विजयनगर

[९ फरवरी]

नन्दीग्राम से निर्धारित समय पर प्रस्थान कर महात्मा गान्धी ९ फरवरी को ९ वजे १० मिनट पैदल चलने के बाद विजयनगर पहुँचे। रास्ते में आप केवल श्री वसन्त कुमार मजूमदार के मकान पर थोड़ी देर रुके, जहाँ कि आप रशीदपुर गाँव में जाने पर ठहरे थे।

विजयनगर में गान्धीजी श्री जोगेश मजूमदार के यहाँ ठहरे और यहाँ दो दिन रहे।

विजयनगर की भी सभा में गान्धीजी से प्रश्न पूछे गये, जिनके उत्तर आपने दिये। अब इधर कुछ दिनों से प्रार्थना-सभाओं में यह क्रम-सा चल गया है कि लोग, हिन्दू और मुसलमान दोनों, गांधीजी से प्रश्न पूछा करते हैं और गांधीजी सबकी शङ्काओं का समाधान करते हैं। आज के प्रश्न गाँवों में सहायता-कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं के थे। ये लोग आज दिन में गान्धीजी से मिले थे और कुछ प्रश्न गाँवों के स्थानीय कार्य-कर्ताओं की दलबन्दी के सम्बन्ध में लिखित रूप में आपको दिये थे। गान्धीजी आज सोमवार का दिन होने के कारण मौन थे अतः आपने इन प्रश्नों के उत्तर भी लिखित रूप में दिये थे, जो प्रार्थना के बाद सभा में सुनाये गये।

गान्धीजी ने प्रश्नों के उत्तर के आरम्भ में इस बात पर क्षोभ प्रकट किया कि गाँवों में भी दलबन्दी का रोग फैल रहा है। आपने कहा कि यह बड़े ही अफसोस की बात है कि नगरों की भांति गाँवों में भी कार्य-कर्ताओं में पार्टीबन्दी दिखायी दे। यदि दलबन्दी हमारे गाँवों के अन्दर भी घुस गयी और कार्य-कर्ताओं में अपनी पदलोलुपता की भावना आ गयी, तो कार्यकर्ता गण गाँवों की सहायता करने की अपेक्षा उलटे उनकी प्रगति में बाधा पहुँचावेंगे।

प्रार्थना के बाद गान्धीजी संध्या समय टहलने गये। रात में आपने यहाँ आये हुए अ० भा० राजनीतिक कैदी रिहाई कमेटी के संयोजक श्री हरीदास मित्र से दो घंटे तक बातें कीं। श्री मित्र गांधीजी से मिलने के लिये आये थे। गान्धीजी से बातें करने के बाद श्री हरीदास मित्र ने अपना पूर्व निर्धारित प्रोग्राम मन्सूख कर दिया और किसी महत्वपूर्ण काम से यहाँ से दिल्ली चले गये।

ब्रिटिश मंत्रिदल की नीयत में विश्वास

विजयनगर में अपने निवास के दूसरे दिन की प्रार्थना सभा में गान्धीजी ने कुछ विशेष महत्व के प्रश्नों के उत्तर दिये। एक प्रश्न आप से यह किया गया कि क्या यह ठीक नहीं है कि ब्रिटिश मंत्रिदल की दोहरी चाल के कारण ही कांग्रेस और मुस्लिम लीग में और उसके फल-स्वरूप हिन्दू तथा मुसलमानों में वर्तमान झगड़े फैले हुए हैं?

गांधीजी ने इस प्रश्न के उत्तर में कहा कि मैं ब्रिटिश मंत्रिदल को दोहरी नीति पर चलने का दोषी नहीं ठहरा सकता। मंत्रिदल ने ईमानदारी के साथ समस्या का हल उपस्थित किया है, जिसे वह न्यायोचित समझता है। मंत्रिदल की घोषणा की खूबी यही है कि वह किसी दल को अपनी योजना स्वीकार करने के लिये बाध्य नहीं करता, पर यह जरूर है कि योजना को स्वीकार करने के बाद उसे कार्यान्वित करना लाजिमी है और एक बार उसे स्वीकार करने के बाद कोई दल उससे हट नहीं सकता।

इस तरह से पूर्व में आसाम और पश्चिम में बलूचिस्तान यदि प्रान्तों के समूह में सम्मिलित होना नहीं चाहते, तो मंत्रिदल की योजना के अनुसार उन्हें समूह में शामिल होने के लिये संसार की कोई ताकत मजबूर नहीं कर सकती। फिर यदि, गांधीजी ने कहा, यह मान भी लिया जाय कि मंत्रिदल एक जाल है, तो काँग्रेस या लीग उसमें क्यों फँसे ?

हेमचन्दी

[११ फरवरी]

विजयनगर के बाद गांधीजी ११ फरवरी को हेमचन्दी गये। हेमचन्दी विजयनगर से दो मील से कुछ दूर पर है, जिसका फासला गांधीजी ने ७० मिनट में तय किया और पौने नौ बजे वहाँ पहुँच गये।

विजयनगर से हेमचंदी जाते हुए गांधीजी के रास्ते में जो गाँव पड़े, उनमें ज्यादातर आबादी मुसलमानों की है। रास्ता कुछ जगह शरारती लोगों ने तोड़-फोड़ दिया था, मगर गांधीजी के चलने के पहले कुछ स्वयंसेवक हमेशा आगे से जाकर रास्ता देख लिया करते हैं और उन लोगों ने तोड़े हुए रास्ते को दुरुस्त कर दिया। रास्ते में गांधीजी केवल एक मकान पर ठहरे, जो श्री शशिभूषण साहा नामक एक सज्जन का था और पिछले उपद्रव में भस्म कर दिया गया था।

हेमचंदी में प्रार्थना-सभा गाँव के स्कूल के हाते में हुई। प्रार्थना के बाद गांधीजी ने इन दिनों के क्रम के अनुसार लोगों द्वारा किये गये प्रश्नों के उत्तर दिये। आपने अपने भाषण में हिन्दू-मुसलमानों के एकता के साथ रहने पर जोर दिया और कहा कि कॉंग्रेस तथा मुस्लिम लीग में समझौता होने का इन्तजार न करके गांवों में हिन्दुओं और मुसलमानों को भाई-भाई की

तरह प्रेम से रहना चाहिये। नोआखाली के लोगों को चाहिये कि वे ऐसी एकता दिखा दें कि सारे हिन्दुस्तान के लोग देखकर दङ्ग रह जायँ। ऐसी ही एकता यहाँ स्थापित करने के लिये मैं पूर्वी बङ्गाल में आया हूँ और अपनी विशुद्ध अहिंसा की यहाँ परीक्षा ले रहा हूँ। यदि मेरी अहिंसा विशुद्ध है, खरी है, तो उससे वह एकता अवश्य स्थापित होगी। यदि एकता नहीं होती, तो वह मेरी असफलता होगी उसमें अहिंसा का दोष नहीं होगा। परन्तु मैं उसका प्रयोग यहाँ अपनी शक्ति भर करूँगा और या तो नोआखाली में एकता स्थापित करूँगा अथवा यहीं प्राण दे दूँगा।

एक प्रश्न के उत्तर में गान्धीजी ने कहा कि अगर पाकिस्तान का अर्थ यह है कि मुस्लिम बहुमत प्रान्तों में स्वतन्त्रता केवल मुसलमानों के लिये है और इसी प्रकार हिंदू बहुमत प्रान्तों में वह सिर्फ हिंदुओं के लिये है, तो ऐसा पाकिस्तान कभी मंजूर नहीं किया जा सकता। खुशी की बात इतनी ही है कि किसी भी मुस्लिम नेता ने और निस्सन्देह कायदेआजम जिन्ना साहब ने भी पाकिस्तान का ऐसा अर्थ नहीं बताया है।

—::❀::—

काफिलाटाली

[१२ फरवरी]

जात-पाँत का मिटना अनिवार्य

हेमचन्दी में गान्धीजी ने रेडक्रास के सहायता केन्द्र का निरीक्षण करने के बाद काफिलाटाली नामक गाँव के लिये आज प्रस्थान किया और पौन घण्टे में डेढ़ मील का मार्ग तय कर सवा आठ बजे आप वहाँ पहुँचे। काफिलाटाली में एक कीर्तन मण्डला ने गान्धीजी का स्वागत किया। रास्ते में भी एक बङ्गाली मण्डली भजन गाते हुए गान्धीजी के साथ थी।

काफिलाटाली में गान्धीजी को एक मुस्लिम सज्जन ने अपने स्थान पर प्रार्थना-सभा करने के लिये निमंत्रित किया था। यह स्थान गाँव के मदरसा के सामने था। प्रार्थना-सभा में भाषण करते हुए गान्धीजी ने कहा मैं भारत की ऐसी स्वाधीनता चाहता हूँ, जिसमें न कोई करोड़पति हो और न कोई भिखारी रहे, कोई जात-पाँत न रहे, सभी लोग एक जाति के रूप में रहें और पूरी एकता के साथ रहें। सभी चीजें राष्ट्र की रहें और राष्ट्र सबके लिये रहे। इसी प्रकार की स्वाधीनता का स्वप्न मैं देखता हूँ और उसी की प्राप्ति में अपना जीवन अर्पित कर देने की कामना करता हूँ।

यह भाषण गान्धीजी ने परिगणित जातियों के मिले हुए

एक डेपुटेशन का उल्लेख करते हुए किया था। डेपुटेशन के लोगों ने गांधीजी से मिलकर यह चाहा था कि उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाय, जैसा सवर्ण हिंदुओं के साथ होता है। आपने कहा कि यदि हिंदू जाति जीवित रहना चाहती है, तो जात-पाँत का भेदभाव मिटा दिया जाय और सभी हिंदू केवल एक जाति के रूप रहें। हिंदू समाज को असंख्य जातियों और उप-जातियों के भेद ने विभाजित और जर्जरित बना रखा है। आपस के वैमनस्य और विघटन की सारी जड़ जात-पाँत है। इसी कारण मैंने अपने को किसी जाति का समझना छोड़ दिया है और अपने को भङ्गी कहता हूँ।

दूसरा प्रश्न गांधीजी के सामने यह रखा गया कि नोआखाली के हिंदुओं को फिर से आकर बसने के लिके यह आवश्यक है कि कुछ केन्द्र स्थानों में कारखाने खोले जायँ। इस प्रश्न के उत्तर में गांधीजी ने कहा कि मैं इस बात को बहुत ना पसंद करता हूँ कि हिंदू लोग अलग केन्द्रों में रहें और उनके लिये अलग कारखाने खोले जायँ। इसका अर्थ होगा समस्त देश में जहरीला पाकिस्तान स्थापित करना और झगड़े की जड़ खड़ी करना।

प्रार्थना के बाद गांधीजी से एक अमेरिकन कार्यकर्ता मि० विलियम योडर की अध्यक्षता में रेडक्रास वालों का दल मिला और यह बताया कि नोआखाली के विभिन्न केन्द्रों में वह क्या काम कर रहा है।

आसाम के मनीपुर वालों का भी एक डेपुटेशन गांधीजी

से मिला और यह शिकायत की कि आसाम एसेम्बली में उन लोगों के प्रतिनिधि अलग से भेजे जाने चाहिये, जो मनीपुर वालों के हितों की रक्षा करें क्योंकि उनकी अपनी अलग संस्कृति है, अलग धर्म है और अलग परम्परा है।

गांधीजी ने डेपुटेशन वालों से कहा कि ४५ साल पहिले जब मैं लन्दन में पढ़ता था, उस समय मैंने मनीपुर वालों की वीरता के बारे में बहुत कुछ जाना था। गांधीजी ने इन लोगों को भी जातपाँत का विचार त्यागने का उपदेश दिया और उनकी शिकायतों की ओर आसाम सरकार का ध्यान दिलाने को कहा।

पुरवाकेरोआ

[१३ फरवरी]

महात्मा गांधी नोआखाली जिले की गाँव-गाँव अपनी यात्रा के ३६वें गाँव पुरवाकेरोआ आज पहुँचे। यह गाँव काफिलाटाली से दो मील की दूरी पर है। ४५ मिनट में यह फासला तयकर गांधीजी ८ बजकर १० मिनट पर यहाँ आये। आप यहाँ श्री नकुल साहा के मकान पर ठहरे।

काफिलाटाली से पुरवाकेरोआ तक रास्ते में स्वयं-सेवक लोग राष्ट्रीय झण्डे लिये खड़े थे और मूक रूप से गांधीजी का स्वागत कर रहे थे। ये स्वयंसेवक गांधीजी के चलने के लिये बनाये गये पुलों और मार्ग की रक्षा के लिये तैनात किये गये थे, क्योंकि कुछ लोगों ने पिछले दिनों बनाये गये मार्ग को तोड़ा-फोड़ा था और पुलों को नष्ट किया था। कुछ पुलों की तो दो बार मरम्मत करनी पड़ी। ये शरारत वे लोग कर रहे हैं, जो गांधीजी की नोआखाली यात्रा के विरुद्ध हैं और चाहते हैं कि वे वहाँ से चले जायँ। परन्तु अहिंसा व्रती स्वयंसेवक लोग बड़े धैर्य के साथ बार-बार नष्ट किये जाने वाले रास्तों और पुलों को फिर दुरुस्त करते हैं और कष्ट सहते हुए उनकी हिफाजत करते हैं।

पुरवाकेरोआ बड़ा गाँव है और इसकी अधिकांश आबादी मुसलमानों की है।

जमीन पर किसानों का अधिकार

आज की प्रार्थना-सभा में गांधीजी ने किसानों के तेभागा आन्दोलन के सम्बंध में किये गये प्रश्न का उत्तर देते हुए एक बार फिर यह मत प्रकट किया कि जिस जमीन पर किसान खेती करते और रहते हैं, उस पर उन्हीं का अधिकार होना चाहिये और जमींदारों को चाहिये कि वे खेतों से होने वाली पैदावार में अपना हिस्सा घटाकर एक तिहाई कर दें, परन्तु जमींदार की जमीन जप्त नहीं की जानी चाहिये। आपने आन्दोलन को अहिंसात्मक ढङ्ग से चलाने पर जोर दिया। आपने कहा कि अहिंसा के आधार पर होने वाली शासन व्यवस्था में 'सकल भूमि गोपाल की' वाला सिद्धान्त माना जायगा। आपने कहा कि यदि तेभागा आन्दोलन हिंसात्मक ढङ्ग से चलाया गया, तो जमींदारों के विनाश के साथ-साथ किसानों की भी बरबादी होगी। गांधीजी ने किसानों के लिये सहयोग समितियों की बहुत आवश्यकता बतायी। परन्तु सहयोग समितियों का निर्माण भी आपने अहिंसात्मक आधार पर करने पर जोर दिया और कहा कि यदि हिंसात्मक आधार पर यह आन्दोलन चलाया गया, तो देश के लिये वह विनाशकारी होगा।

जमींदारों को भी सलाह देते हुए गांधीजी ने कहा कि उन्हें अपनी जमीन जप्त होने का खतरा उठाने की अपेक्षा पैदावार में अपना हिस्सा घटा देना चाहिये और किसानों के हित का ध्यान रखना चाहिये। इसी में जमींदारों, किसानों और देश का भी हित है।

आज की प्रार्थना सभा में भी बहुत थोड़े मुसलमान उपस्थित हुए थे, जिसका कारण यह है कि मुसलमानों में गान्धीजी के नोआखाली में रहने के विरुद्ध जोरों से प्रचार किया जा रहा है और मुसलमानों की सभाएँ की जा रही हैं। गांधीजी के मार्ग की सड़कें और पुल नष्ट करने की घटनायें भी अधिक होने की शिकायतें बढ़ती जा रही हैं। मुस्लिम जनता में गांधीजी के निवास के विरुद्ध फैलायी जाने वाली भावना के कारण इधर प्रार्थना सभाओं में मुसलमानों की संख्या घटती जा रही है। परन्तु मुसलमानों के बहुत कम संख्या में आने पर भी आज की सभा में दर्शकों की भारी भीड़ एकत्र हुई थी।

—::※::—

पश्चिमकेरोआ

[१४ फरवरी]

महात्मा गांधी १४ फरवरी को पुरवाकेरोआ से पश्चिम-केरोआ गाँव आये। दोनों गाँवों के बीच का लगभग दो मील का रास्ता आपने ४० मिनट में पूरा किया। यहाँ के रास्ते में भी वालंटियर लोग राष्ट्रीय झण्डे लिये तैनात थे और मार्ग की हिफाजत कर रहे थे।

पुरवाकेरोआ में गांधीजी कविराज विपिनविहारीदास के मकान पर ठहरे। केरोआ एक भारी गाँव है, जिसके पुरवा और पश्चिम दो हिस्से हैं और ये दोनों भी अलग-अलग दो गाँवों के रूप में हो गये हैं। यहाँ भी ज्यादा आवादी मुसलमानों की है।

पश्चिमकेरोआ की प्रार्थना-सभा में गांधीजी ने श्रोताओं के सामने मौलवी सुहरावर्दी द्वारा लिखित 'पैगम्बर के वचनों का संग्रह' में से दो वाक्य पढ़ सुनाये। इनमें से एक वाक्य में पैगम्बर ने यह कहा है कि सबसे अच्छा आदमी वह है, जो अच्छा काम करता है और सबसे खराब वह है, जो खराब काम करता है। गान्धीजी ने कहा कि ये वचन सभी लोगों के लिये हैं, केवल उन्हीं लोगों के लिये नहीं है, जो अपने को मुसलमान कहते हैं।

एक प्रश्न एक श्रोता ने छुआछूत के सम्बंध में किया। इसके उत्तर में गांधीजी ने कहा कि मैं तो हमेशा से और पूरे बल के साथ यह कहता आ रहा हूँ कि छुआछूत हिन्दू धर्म के लिये कलंक है और जब तक यह कायम रहती है, तब तक हिन्दुस्तान आजाद नहीं हो सकता।

रामपुरा

[१५ फरवरी]

गांधीजी आज रामपुरा आये। रामपुरा पश्चिम केरोआ से लगभग दो मील पर है, जिसका रास्ता ४० मिनट में तयकर आप प्रातःकाल ८ बजकर १० मिनट पर पहुँचे। रामपुरा में महात्माजी दो दिन रहे।

रामपुरा में भी अधिकांश आबादी मुसलमानों की है। यहाँ आप स्वर्गीय श्री हरेन्द्रदास के मकान पर ठहरे। हरेन बाबू के मकान पर पहुँचते ही स्वयंसेवकों ने आपका स्वागत किया। छोटी लड़कियों ने आपको मालाएँ पहिनायीं। गांधीजी के स्वागत में एक फाटक लगाया गया था, जिस पर राष्ट्रीय झण्डा लगाया गया था। परन्तु कुछ मुसलमानों के एतराज करने पर झण्डा झुका दिया गया था।

तीसरे पहर प्रार्थना-सभा हुई। सभा हरेन बाबू के हाते में हुई। सभा के बाहर कुछ मुसलमान खड़े थे और परचे बाँट रहे थे। परचों में मुसलमानों से कहा गया था कि वे गांधीजी की प्रार्थना सभाओं में न जाया करें।

गांधीजी ने प्रार्थना-सभा में दो प्रश्नों का उल्लेख किया। एक प्रश्न मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं के बायकाट के सम्बंध में था और दूसरा सहकारिता के आधार पर खेती के बारे में था।

हिन्दुओं के बायकाट के बारे में गांधीजी ने कहा कि मैंने ऐसे बायकाटों की बातें सुनी हैं, पर आशा यही करता हूँ कि बायकाट सामूहिक रूप से नहीं होता होगा।

गांधीजी ने कहा कि अभी तीन-चार दिन हुए एक मुसलमान यात्री गुजरात से मुझसे मिलने के लिये आया था। मगर यहाँ उस पर बहुत नाराजी जाहिर की गयी और मुझसे मिलने का साहस करने के लिये लानत-मलामत की गयी। पर यात्री भी अपने निश्चय पर दृढ़ रहा और सब कुछ सहकर भी वह मुझसे आकर मिला। एक दूसरा बेचारा मुसलमान आज मेरे पास आया था। उसे भी बड़ी धमकियाँ दी गयी और मेरे पास आने से रोका गया।

रामपुरा थाने में एक रपट लिखायी गयी कि गांधीजी से मिलने के लिये बङ्गाल के बाहर के एक मुसलमान पर रामपुरा के कुछ लोगों ने हमला किया, उसे मारा-पीटा और उसका माल-मता छीन लिया। रिपोर्ट में कहा गया है कि पहले उस आदमी से कहा गया कि गांधीजी से मिलने मत जाओ और अपने देश वापस चले जाओ। मगर उसने वापस जाने से इनकार किया, इस पर उसे मारा-पीटा गया और उसका सामान छीन लिया गया।

इन घटनाओं और बाँटे जाने वाले पर्चों का उल्लेख करते हुए गांधीजी ने कहा कि मैं अपने मुस्लिम दोस्तों और अन्य लोगों से भी कहना चाहता हूँ कि ऐसी बातों से डरें नहीं और अपने निश्चय से न विचलित हों। मैं तो यही समझता हूँ कि कुछ

थोड़े से लोग ही यह सब करते होंगे। पर अगर यह सब व्यापकरूप से होता हो, तो सरकार का कर्तव्य है कि ऐसी परिस्थिति में वह उचित कार्रवाई करे।

आपने कहा कि परचों दीवारों पर भी चिपकाये गये हैं, जो एक दल के नाम से प्रकाशित हुए हैं। आपने यह भी कहा कि अगर बदकिस्मती से इसमें सरकारी नीति कुछ काम करती होगी, तो उस अवस्था में मैं इस प्रश्न पर अहिंसात्मक ढङ्ग से विचार करूँगा।

इसके बाद गान्धीजी ने दूसरे प्रश्न, अर्थात् सहकारिता के आधार पर किसानों द्वारा खेती शुरू करने का जिक्र किया। आपने कहा कि सहकारिता के साथ खेती करना किसानों के लिये बहुत सुविधाजनक और लाभकारी होगा। मेरी दृष्टि में सहकारिता का सिद्धान्त यह है कि परस्पर सहयोग के साथ खेती की जाय और किसान लोग मिलकर खेत जोतें और बोएँ। इससे परिश्रम, खर्च और सामानों की बचत होगी, किसानों के पास अधिक से अधिक खेती के औजार हो जायँगे जिनसे पैदावार बढ़ाने में सहायता मिलेगी। तथा किसान अधिकाधिक समृद्धिशाली होंगे। इसके अतिरिक्त खेतों का रूप बदल जायगा, ऊसर जमीनें खेती के काम में अधिक मात्रा में काम में लायी जा सकेंगी और हिन्दुस्तान के किसानों की प्रसिद्ध गरीबी दूर हो जायगी। परन्तु यह तभी सम्भव है, जब किसान एकता और मित्रता की भावना से काम करें। इस तरह से किसानों की गरीबी दूर होने के साथ ही उनमें एकता बढ़ेगी, मुकदमे-

६—महियाजपुर में इद्रिस पण्डित के घरमें महात्मा जी   गांधीजी के आगमन से मुसलमान

बाजियाँ बन्द हो जायँगी और सबसे बढ़कर साम्प्रदायिक समस्या हल हो जायगी।

दूसरे दिन की सभा

रामपुरा के दूसरे दिन की प्रार्थना-सभा में गान्धीजी ने अपने नोआखाली के दौरे के सम्बन्ध में मि० फजलुलहक के विरोधी विचारों का उल्लेख किया। आपने कहा कि अखबारों में मि० फजलुलहक के जो भाषण छपे हैं, उन पर मुझे विश्वास नहीं होता और मैं नहीं समझता कि उन्होंने ऐसी बातें कही होंगी।

गांधीजी का आज मौन-दिवस था, अतः उनका लिखित भाषण सभा में पढ़ा गया था। गांधीजी ने अपने भाषण में कहा था कि मि० हक के जो भाषण अखबारों में छपे हैं, उनमें यह कहा गया है कि मुझे इस्लाम मजहब के बारे में कोई विचार प्रकट करने का अधिकार नहीं है और मेरे कथनों से दोनों सम्प्रदायों के बीच कटुता फैलती है। मगर मुझे विश्वास नहीं होता कि मि० फजलुलहक की स्थिति के व्यक्ति ने ऐसी बातें कही होंगी।

गांधीजी ने आगे कहा कि मैं अपने जीवन-भर विभिन्न सम्प्रदायों की एकता के लिये काम करता रहा हूँ। मैं अपने को जितना हिन्दू समझता हूँ, उतना ही मुसलमान भी समझता हूँ और इस्लाम के सम्बंध में जो कुछ कहता हूँ, वह पैगम्बर मोहम्मद के कथनों के आधार पर ही कहता हूँ। फिर भी

मुस्लिम मित्रों को यह अधिकार है कि जो कुछ मैं कहता हूँ, उसे माने या न माने।

गांधीजी ने अखबारों में प्रकाशित मि० फजलुलहक के एक अन्य भाषण का उल्लेख किया, जिसमें यह कहा गया है कि मि० हक ने कहा कि जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से लौटकर आये थे, तो मैंने उनसे कहा था कि आप मुसलमान हो जायँ, तो गांधीजी ने यह जवाब दिया था कि मैं मुसलमान ही तो हूँ। मगर मुझे गांधीजी के इस कथन से सन्तोष नहीं हुआ और मैंने कहा था कि इस बात की घोषणा आप सार्वजनिक रूप से कर दें, मगर गांधीजी ने ऐसा करने से इनकार कर दिया।

गांधीजी ने मि० हक के इस कथन के सम्बंध में कहा कि मुझे तो याद नहीं आता कि मि० हक की मेरी ऐसी कोई बात-चीत हुई थी। इसी तरह की और भी बातें मि० हक द्वारा कही गयीं छपी हैं, जिनके लिये मुझे विश्वास नहीं होता कि उन्होंने ऐसी बातें कही होंगी। मैं यह भी नहीं समझता कि मि० हक ने अखबारों में प्रकाशित अपने इन व्याख्यानों को देखा भी होगा। मैं तो तब तक इन व्याख्यानों पर विश्वास नहीं कर सकता, जब तक कि मि० फजलुलहक स्वयं यह स्वीकार न कर लें कि उन्होंने ऐसी बातें कही हैं। मुझे आशा है कि वे एक वक्तव्य प्रकाशित कर या तो इन कथनों का खण्डन करेंगे या उनकी तसदीक करेंगे।

—::०::—

देवीपुर

[१७ फरवरी]

१७ फरवरी को देवीपुर गाँव पहुँचकर गान्धीजी ने नोआखाली जिले का अपना दौरा समाप्त किया। देवीपुर गान्धीजी की गाँव-गाँव पैदल यात्रा का ४०वाँ गाँव था। रामपुर से देवीपुर का फासला तीन मील से कुछ अधिक था, जिसे ८५ मिनट में तय कर आप ९ बजे यहाँ पहुँचे। देवीपुर में आप श्री राजकुमार सील के मकान पर ठहरे।

रामपुरा से लेकर देवीपुर तक वालंटियर लोग राष्ट्रीय झण्डे लिये खड़े थे और अपने निकट पहुँचने पर गान्धीजी का अभिवादन करते थे। साथ में कीर्तन करनेवालों का दल भी था। रास्ते में स्थान-स्थान पर खड़े हुए पुरुषों और स्त्रियों के दल ने गान्धीजी का स्वागत किया। श्री निवारणदास नामक एक सज्जन ने अपने मकान के सामने गान्धीजी के स्वागत के लिये एक फाटक बनाया था। यहाँ पहुँचने पर गान्धीजी का बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया गया। श्रीमती चारुशीलादेवी ने एक भारी तिरङ्गा झण्डा हाथ में लिये हुए गान्धीजी का अभिवादन किया और मालायें पहनायीं।

यहाँ गांधीजी एक मन्दिर में ले जाये गये जहाँ उत्सव हो रहा था और लगभग २,००० गरीबों को भोजन कराने का

प्रबन्ध किया गया था। गांधीजी वहाँ भोजन का प्रबन्ध देखकर बहुत प्रसन्न हुए। आपने भोजन का प्रबन्ध करनेवालों से पूछा कि क्या आप लोग मुसलमानों और ईसाइयों को भी भोज में सम्मिलित होने देंगे। प्रबन्धकों ने कहा कि भोज में बड़ी खुशी के साथ मुसलमानों और ईसाइयों का स्वागत किया जायगा। इसे सुनकर गांधीजी बड़े प्रसन्न हुए।

यह मन्दिर मदनजी महाराज का है, जिसकी मूर्तियाँ हटा दी गयी थीं और सामान पिछले उपद्रव में लूट लिया गया था। गांधीजी से प्रार्थना की गयी कि मन्दिर में मूर्तियाँ आप स्थापित करें। गांधीजी ने यह अनुरोध स्वीकार किया और मूर्तियाँ स्थापित कीं।

इसके बाद गांधीजी गाँव के बाहर एक पुरानी मस्जिद देखने के लिये गये, जिसे मौलवी बद्रुद्दीन अहमद ने गांधीजी को दिखाया।

देवीपुर की प्रार्थना-सभा में गांधीजी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये काम करने वाले एक जिम्मेदार सज्जन की आयी हुई चिट्ठी का जिक्र किया, जिसमें यह लिखा था कि कुछ मुसलमानों ने एक हिन्दू लड़के के साथ दुर्व्यवहार किया है और यह धमकी दी है कि गांधीजी के नोआखाली से चले जाने के बाद हिन्दुओं के साथ पिछले अक्टूबर से भी ज्यादा कड़ाई की जायगी। गांधीजी ने कहा कि मैं तो यही समझना चाहता था कि यह बात गलत होती, पर अगर ऐसा है नहीं और यह घटना सही है। परन्तु मैं अब भी यही आशा करता हूँ कि